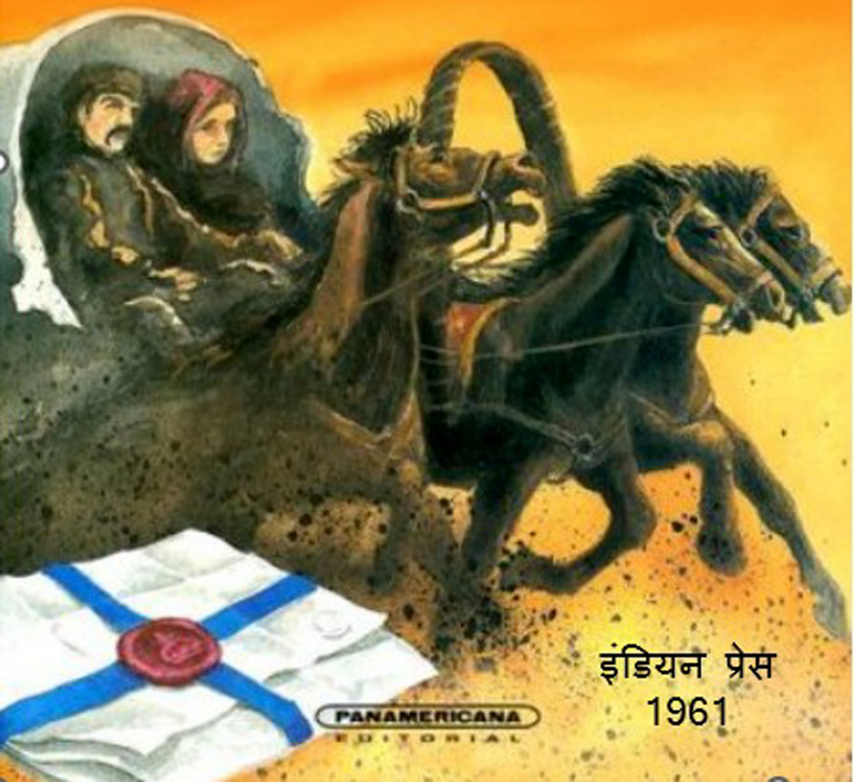
दृढ़ प्रतिज्ञा

जूल्स वर्न

JULES VERNE'S

MICHAEL STROGOFF IN HINDI



इंडियन प्रेस
1961

इंडियन प्रेस, किशोर सीरीज

दृढ़-प्रतिज्ञ

जूले वर्न के उपन्यास माइकेल स्ट्रॅगॉफ़ का
अनुवाद

अनुवादक
श्री राम अवधेश त्रिपाठी 'साहित्यरत्न'

सम्पादक
डा० नवलबिहारी मिश्र, बी० एस्-सी०, एम० बी० बी० एस०

प्रकाशक
इंडियन प्रेस (पब्लिकेशंस) प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

पर रंग-बिरंगे काँच जड़े गये थे। नीचे के भाग में भरी बन्दूक लिये चौकीदार पहरा दे रहे थे।

अनेक स्त्री-पुरुष खिड़कियों से यह उत्सव देख रहे थे। थोड़ी दूरी पर बहनेवाली नदी की धारा भी संगीत-माधुरी छलका रही थी। उसमें छोटी-बड़ी नौकाएँ जल-विहार कर रही थीं। चारों ओर फैले हुए घोर अन्धकार में नौका पर जगमगाती हुई दीपमालाएँ अत्यन्त सुन्दर लगती थीं।

नये राजमहल में आज अपूर्व उत्सव था। उसमें विश्व के बड़े बड़े पुरुष एकत्रित हुए थे। उनके मूल्यवान् और शाही परिधान उत्सव की शोभा में चार चाँद लगा रहे थे। फिर भी उसके अन्दर एक सादे कपड़े पहने हुए व्यक्ति भी था। उसका भव्य चेहरा किसी अनुपम आभा से सुशोभित हो रहा था। उसके आसपास अनेक जार्जियन, कज़ाक और काकेशियन अंगरक्षक थे।

नृत्य और संगीत का उत्सव चल रहा था। दर्शक तल्लीन हो रहे थे, किन्तु उस व्यक्ति का ध्यान उत्सव की ओर न था। उच्च कोटि के राजपुरुष बीच बीच में गंभीर विषयों की चर्चा भी कर लिया करते थे, किन्तु वह व्यक्ति इन सब बातों से अलिप्त दिखायी दे रहा था अथवा गंभीर रहना उसका स्वभाव ही था। ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता था कि उसके मन में संगीतोत्सव के स्थान पर किसी दूसरी वस्तु का विचार चल रहा है।

उस व्यक्ति ने गंभीरता से तार पढ़ना शुरू किया और धीरे-धीरे उसके मुख-मण्डल पर क्षोभ का भाव झलकने लगा।

उसका बायाँ हाथ अपनी कमर पर लटकती हुई तलवार पर जा पड़ा किन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपना हाथ खींच लिया और हृदय के भाव को चेहरे पर व्यक्त होने से रोकने का प्रयत्न किया। इसके बाद वह खिड़की की ओर कुछ आगे बढ़ा।

"तो क्या ? ग्राण्ड ड्यूक की कोई खबर नहीं मिली ?"

"नहीं सरकार। और चिन्ता की बात तो यह है कि साइबेरिया की ओर कोई सन्देश या सूचना भेजी नहीं जा सकती !"

"उफ् ! क्या आमूर और इर्कट्स्क प्रदेश की सेनाओं को प्रस्थान करने का आदेश दिया गया है ?"

"हाँ सरकार, पहले ही तार में आदेश किया गया है। आशा है, वह तार अब तक पहुँच रहा होगा।"

"परन्तु धोखेबाज आइवन ओगारेफ इस समय कहाँ है ? उसका क्या समाचार है ?"

"उसका कोई पता नहीं है। उसके सीमा पार करने के बारे में भी कोई खबर नहीं मिली।"

"अच्छा, तो एक काम करो। जिन-जिन स्थानों पर तार सम्बन्ध चालू है उन सभी स्थानों पर उस दगाबाज की हुलिया तार से भेज दो। यह बात खूब गुप्त रहनी चाहिए और किसी भी तरह प्रकट न होनी चाहिए।"

यह सुन प्रणाम करके जनरल किशफ ने वहाँ से प्रस्थान किया।

उस भद्र पुरुष ने अपनी मानसिक दुःशंकाओं को छिपा

लिया और आये हुए मेहमानों के साथ टहलने लगा। उसके मुख-मण्डल पर प्रशान्त तेज प्रसरित हो गया।

आगन्तुक मेहमानों में अन्य दो व्यक्ति भी कुछ भिन्न प्रकार के दीख रहे थे। उनका परिधान राजाओं-सा न होकर साधारण था। वे धीरे-धीरे कुछ बातचीत कर रहे थे। उसमें एक अंग्रेज और दूसरा फ्रांसीसी था।

दोनों दुहरे बदन के थे। फ्रांसीसी युवक कुछ अधिक श्वेत था और अंग्रेज कुछ अधिक लाल था।

ये दोनों संवाददाता थे। अंग्रेज युवक 'डेली टेलीग्राम' का संवाददाता था और फ्रांसीसी युवक किसी के सामने अपने को समाचार पत्र का संवाददाता नहीं कहता था। केवल इतना ही कहता था कि मैं अपनी बहन मोडलिन के लिए समाचार एकत्र कर रहा हूँ। दोनों में संवाददाताओं के गुण, उत्साह, साहस और निर्भयता आदि पर्याप्त विकसित थे।

समाचार प्राप्त करने में वे दोनों चतुर थे। इस काम में उन्हें अपनी जान जोखिम में डालने में भी कोई हिचकिचाहट न थी और किसी प्रकार का भय भी उन्हें विचलित न कर सकता था। उन्होंने अपना जीवन ही समाचार प्राप्त करने के लिए कष्ट सहन करने की अद्भुत शक्ति की शिक्षा ली थी। उनकी साहसप्रियता की सब कोई प्रशंसा करता था। फ्रांसीसी युवकों का नाम आलसाइड जोलिवेट था। अंग्रेज का नाम हेरी ब्लाउएट। दोनों व्यक्ति एक साथ यहाँ समाचार प्राप्त करने आये थे। उस दिन दोनों [illegible] ही खूब सावधान

थे। उन्होंने नये राजमहल में प्रवेश करते ही यह अनुभव कर लिया था कि परिस्थिति गंभीर है।

जनरल किशफ के चले जाने के बाद जोलिवेट ने कहा—"आज का उत्सव कितना शानदार है!"

हेरी ने धीर-गंभीर भाव से उत्तर दिया—"हाँ, सचमुच खेल सुन्दर है!" "चाहे कुछ भी हो!" मैं अपनी बहन को समाचार दिये बिना न रहूँगा।" हेरी चकित हो गया। उसने बात आधी काटते हुए कहा—"तेरी बहन!!"

"हाँ, मेरी बहन! मेरी बहन मोडलिन! वह नित्य प्रति ताजे समाचार जानने को उत्सुक रहती है। इस उत्सव के समय अवश्य किसी महान् दुर्घटना का समाचार आया हुआ प्रतीत होता है तभी तो जार का मुँह गंभीर दिखायी देता है!"

वास्तविकता से परिचित होते हुए भी हेरी ने पूछा—"तुमको जार के मुँह पर गंभीरता कब दिखायी दी? मुझे तो कुछ भी नहीं दिखायी देता!"

हेरी इस प्रकार की बातों से जोलिवेट को सत्य से दूर रखना चाहता था। जोलिवेट को तुरन्त इस बात का ध्यान आया। उसने हँसकर कहा—"ठीक है, मुझे इस बात में शंका नहीं है कि आप इस बात को 'डेली टेलीग्राम' के पृष्ठों पर भड़कदार भाषा में छपा सकेंगे।"

हेरी खिसिया गया और समझ गया कि यहाँ हमारी चालाकी काम नहीं कर सकेगी। तब भी इस विषय पर पर्दा

डाल्ते हुए बोला—"हाँ-हाँ, इसमें [illegible] क्या है ?"

जोलिवेट ने देखा कि इस तरह काम न चलेगा। [illegible] बाजी बदली और बोला—"अच्छा, मि० हेरी [illegible]! सन् १८१२ में जाकेट शहर में क्या घटना घटी थी [illegible] जानते हो ?"

अंग्रेज ने जवाब दिया—"याद क्यों न हो! मुझे [illegible] अक्षर याद है।" जोलिवेट बोला—तब तो मुझे [illegible] कि वहाँ भी एक ऐसा ही उत्सव हो रहा था। उत्सव [illegible] वाले स्वयं सम्राट् एलेक्जेण्डर थे। उस समय समाचार [illegible] कि दिग्विजयी नेपोलियन ने अपनी प्रचण्ड फ्रांसीसी सेना [illegible] नीमेन नदी पार कर ली है। यह सुनकर भी सम्राट् [illegible] और निर्विकार रहे। राजधानी के महान् संकट में पड़ने का समाचार सुनकर भी सम्राट् के मुँह पर लेश मात्र खिन्नता का भाव इसलिए न आया कि आनन्दोत्सव में रंच मात्र भी क्षति न आने पावे।

हेरी अपने को न सँभाल सका। वह बोल उठा—"लेकिन आज के उत्सव के नायक जार तो सम्राट् एलेक्जेंडर से भी महान् हैं। क्या तुम्हें कदाचित् ऐसा अनुभव हो रहा है कि मैं इस से अनजान हूँ ? जिस समय जनरल किशफ ने जार के हाथ में तार दिया, उस समय जार ने जान लिया कि शत्रुओं की सेना ने सीमा पर और आर्कट्स्क प्रदेश में तार की लाइनें काट

डाली हैं। इतना होने पर भी वह कितने धैर्यवान् दिखायी देते थे!"

जोलिवेट खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला—"तो इसका अर्थ यह है कि तू भी वस्तुस्थिति को समझ गया है!"

हेरीवान अपने मनोभावों को छिपा न सका। वह बोला—"अवश्य!"

फ्रांसीसी युवक का उद्देश्य सफल हुआ। उसके मुँह पर सन्तोष का भाव दौड़ गया।

उसने कहा—"कदाचित् तुम्हें इस बात की खबर न होगी कि मेरा अन्तिम तार ओडिन्स्क स्टेशन पर पहुँच रहा होगा।"

"और मेरा तार भी क्रोस्नयेयार्स्क स्टेशन पर पहुँच गया होगा!" अंग्रेज ने कहा।

"तुम्हें किस प्रकार विश्वास है कि निकलेवस्क की सेना को तैयार रहने का आदेश दे दिया गया है?"

"हाँ, उधर टोल्स्क राज्य की सेना को भी आदेश दिया गया है!"

"सच है हेरी! मुझे भी इस बात की खबर लगी है। कल सबेरे ही मेरी बहिन मेडलिन को भी यह समाचार मिल जायगा।"

"तेरी बहन को समाचार मिलेगा तो क्या मेरे 'डेली टेलीग्राम' के पाठक इस समाचार से वंचित रहेंगे?"

"हाँ हाँ। तेरे अख़बार के पाठक भी यह समाचार पढ़ेंगे।"

"हेरी! सचमुच, हम लोगों का व्यवसाय सुन्दर और मनोरंजक है।"

"मैं भी ऐसा ही मानता हूँ जोलिवेट! लेकिन अब अधिक समय तक इस स्थान पर रहना हमारे लिए आपत्तिजनक है। चलो, यहाँ से चले चलें।"

दोनों नये राजमहल के उत्सव से उठकर चले गये।

कुछ समय पश्चात् किशफ भयभीत हो उठा। वह वापस आया और उस भद्र पुरुष को सम्बोधित करते हुए बोला—"टोम्स्क की लाइन भी कट गयी है।"

भद्र पुरुष ने उत्तर दिया—"मेरे पास अभी एक दृढ़ और चालाक संदेशवाहक भेजो।" इतना कहकर वे उत्सव से उठकर राजमहल के एक छोटे से कमरे में चले गये। यह सुनसान कमरा राजमहल के एक कोने में था। इसमें कोई खास सजावट न थी। एक साधारण मेज, दो चार कुर्सियाँ और एक लकड़ी का तख्त पड़ा था। दीवारों पर सुप्रसिद्ध कलाकारों की तसवीर लटक रही थीं।

उसने कमरे की एक खिड़की खोली और गंभीर मुख से बाहर की ओर देखने लगा।

निर्मल रात्रि। सुशोभित धवल चन्द्रमा। अनुपम सुन्दरता। चांदनी द्वारा सुशोभित समस्त प्रकृति। नीचे सुदृढ़ दुर्ग।

कुछ ही दूर पर स्थित शस्त्रागार। नगर के ऊँचे-ऊँचे महलों की गगनचुम्बी मीनारें। चाँदनी में श्वेत जलराशि प्रवाहित करती हुई सरिता का अनुपम सुमधुर कलरव! यह सब दिखायी दे रहा था।

नदी का नाम मोस्कोया और नगर का नाम मास्को था। उस नदी के एक तट पर स्थित इस राजमहल का नाम था क्रेमलिन-प्रासाद। और वे भद्र पुरुष स्वयं रूस के ज़ार थे।

वे खिड़की के निकट खड़े थे। उनके मुख पर गांभीर्य और चिन्ता थी। इस समय उत्सव के स्थान से सुनायी देने वाले संगीत का सरस स्वर उनके लिए निरर्थक था।

(२)

विद्रोह का केन्द्र-स्थल साइबेरिया था। साइबेरिया खूब बड़ा राज्य था। उसका आरंभ यूरोप और एशिया की सीमा पर स्थित यूराल पहाड़ से होता है। इस राज्य के बीचोबीच 'एनीसेई' नदी बहती है। वह इस देश को पूर्व और पश्चिम दो भागों में बाँट देती है। ये दोनों विभाग रूसी साम्राज्य के अन्तर्गत थे। राज्य का उत्तरदायित्व दो राज्य-प्रतिनिधियों पर था। पूर्व साइबेरिया की राजधानी इर्कुट्स्क नगर था।

इस कथा के समय साइबेरिया में रेलवे-लाइन न थी; तो भी पूर्वी सीमा तक तार-लाइन बनी हुई थी। इस प्रकार साइबेरिया शासन-कार्य के लिए रूस से जुड़ा हुआ था।

१४ वीं जुलाई को राजप्रासाद में आयोजित उत्सव के

अवसर पर आनेवाले तार से प्रतीत हुआ था कि यूराल के समीपस्थ प्रदेश में तातार लोगों ने विद्रोह किया है। विद्रोहियों ने तार के खंभे उखाड़ डाले हैं। इससे रूस और साइबेरिया का तार-संबंध छिन्न-भिन्न हो गया है। इसी कारण रूस के जार उत्सव छोड़कर, एक कमरे में आकर चिन्तित भाव से खड़े थे।

इतने में एक उच्च पुलिस-अफसर वहाँ आ पहुँचा। जार ने उसका सम्मान करते हुए कहा—"आओ जनरल! मुझे तुमसे आइवन ओगारेफ की बात जाननी है। उसकी क्या जानकारी तुम्हारे पास है?"

"वह एक भयंकर व्यक्ति है।"

"किसी समय वह रूसी सेना में कर्नल था न?"

"हाँ, सरकार!"

"क्या वह सचमुच चालाक है?"

"खतरनाक चालाक! कुटिल बुद्धिमान् है महाराज! उस पर विजय पाना कोई साधारण बात नहीं है। उसके समान कोई साहसी नहीं है। उसके मन में राज्य-सत्ता प्राप्त करने की हवा लगी है। उसने राज्य-सत्ता को उलटने का एक षडयंत्र भी किया था, किन्तु वह षडयंत्र पकड़ा गया। माननीय ग्राण्ड ड्यूक ने उसको अधिकारच्युत करके साइबेरिया भेज दिया।"

"यह कितने दिनों की बात है?"

"दो वर्ष पहले की बात है, किन्तु आपकी कृपा से उसे छः महीने बाद छोड़ दिया गया।"

"इसके बाद वह साइबेरिया में नहीं गया ?"

"गया था, किन्तु जाने में उसका स्वार्थ था सरकार !"

वह ऐसा समय था जब कोई भी आदमी साइबेरिया में रहने के बाद वापस नहीं आ सकता था। "क्या अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए साइबेरिया जाने के बाद वह रूस में वापस नहीं आया था ?"

"वापस आया था, महाराज !"

"तो क्या पुलिस ने उसकी गतिविधि पर कुछ ध्यान न दिया था ?" ज़ार ने कहा।

"पूरा पूरा ध्यान दिया था। सच्ची बात तो यह है कि भयंकर अपराधी को एक बार क्षमा मिल जाने पर वह दिन प्रतिदिन अधिक खतरनाक बनता जाता है।"

"उसके सम्बन्ध में अन्तिम समाचार कहाँ से मिला था ?"

"पार्म प्रदेश से।"

"कब ?"

"पिछले मार्च महीने में !"

"पुलिस को इसके सिवाय कोई अन्य जानकारी नहीं है ?"

"नहीं, सरकार !"

"बहुत ठीक। तो अब उसके विषय में दूसरा समाचार

सुनो। मैंने एक ऐसा समाचार पाया है, जिसका पता पुलिस को भी नहीं है। सीमा पर जो हलचल मची है उसके कारण का पता मुझे लगा है।"

"तो क्या आप ऐसा मानते हैं कि तातारी लोगों के विद्रोह में आइबन ओगारेफ का हाथ है?"

"अवश्य! अभी सुनो। तुमको अभी इस सम्बन्ध में समाचार नहीं मिला है। आइवेन ओगारेफ यूराल पर्वत पार-कर पार्म प्रदेश में साइबेरिया गया। वहाँ उसने खिरगीज प्रदेश की जनता को उकसाया। उसके बाद स्वतंत्र तुर्किस्तान में जाकर उसने बुखारा, खूखंड और कुँड आदि प्रदेशों के शासनकर्ताओं को अपने पक्ष में लिया। इस प्रकार उसने गुप्त रीति से साइबेरिया में विद्रोह की स्थिति उत्पन्न की। आज उस विद्रोह ने गंभीर रूप धारण कर लिया है। तार की लाइनों को नष्ट करने के बाद आइवेन ओगारेफ ने आक्रमण की तैयारी की है। उसकी रक्त-पिपासु दृष्टि ग्राण्ड ड्यूक पर पड़ी है।"

यह सुनकर पुलिस अधिकारी अवाक् रह गया। उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। वह अपने मन ही मन केवल यह बड़बड़ाता रहा—"यदि ज़ार ने आइवेन ओगारेफ को निर्वासित न किया होता तो विद्रोह का दावानल साइबेरिया में न जला होता!"

ज़ार ने जरा सा अपनी दाहिनी ओर देखा। यह देखकर

पुलिस अधिकारी ने कहा—"विद्रोह को तत्काल दबा देने के लिए आपने आवश्यक आदेश तो दे ही दिया होगा ?"

"आदेश की व्यवस्था हो गयी है। इस सम्बन्ध का तार निजनी ओडिन्स्क भेज दिया गया है। उसमें येनीसेई, इर्कुट्स्क, याकुट्स्क की सरकारी सेनाओं को एकत्रित होने की सूचना दी गई है। साथ ही आमूर की सरकार को भी इसी मतलब का तार भेजा गया है। निजनी ग्राड की सेनाओं को भी सीमा की ओर कूच करने का हुक्म भेजा गया है। फिर भी चिन्ता की बात यह है कि अब भी तातारियों की विद्रोही सेना पर आक्रमण करने में एकाध सप्ताह लग जायेगा।"

"यद्यपि इर्कुट्स्क नगर का सम्बन्ध मास्को से टूट गया है, किन्तु हमारे आखिरी तार से ड्यूक को यह जरूर खबर मिलेगी कि उसे आसपास के किन-किन प्रदेशों से मदद मिल सकती है।"

जार ने कहा—"हाँ, मैंने ड्यूक को यह समाचार दिया है; किन्तु उसे इस बात का पता नहीं है कि विद्रोह का सूत्रधार आइवेन-ओगारेफ उसके (ड्यूक के) खून का प्यासा है। इसलिए सर्वप्रथम ड्यूक को इस बात की जानकारी देने की आवश्यकता है।"

"इसके लिए तो कोई चालाक सन्देश-वाहक!..."

"हाँ-हाँ, मैं इस समय ऐसे ही व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"वह सन्देश-वाहक व्यक्ति सुयोग्य हो तो और भी अच्छा है।"

"परन्तु सरकार, कदाचित् आपको पता नहीं होगा कि साइबेरिया एक ऐसा देश है, जहाँ सभी को विद्रोह के कारण की जानकारी है।"

"यानी आपका मतलब यह है कि निर्वासित राजकैदी भी विद्रोह में साथ देंगे ?" जार ने कुछ गर्म होते हुए कहा।

पुलिस अधिकारी ने सन्देह-मिश्रित स्वर में कहा—'हाँ, सरकार !"

"परन्तु मुझे तो उनके देश-प्रेम में विश्वास है।" ज़ार ने कहा।

"राजकैदियों के साथ वहाँ दूसरे कैदी भी तो बड़ी संख्या में हैं।"

"अरे जनरल ! मैं उन सबका बोझ आपके सिर पर डालकर चिन्ता-मुक्त होना चाहता हूँ। वे लोग समाज-विरोधी हैं किन्तु यह विद्रोह नहीं है, बल्कि देश-विद्रोह है। रूस तो उन लोगों की जन्मभूमि है और राजकैदी तो रूस वापस आने का अवसर देख रहे होंगे। यह विद्रोह रूस-विरोधी है। ऐसा कोई भी स्वदेश-प्रेमी नहीं होगा जो तातारियों की सहायता करके रूस की भूमि को गुलामी के पंजे में फँसावे।"

ज़ार का यह अनुमान निरर्थक न था। भले ही ज़ार की शासन-नीति से विरोध होने के कारण उन लोगों को रूस छोड़-

कर साइबेरिया में बसना पड़ा था किन्तु इससे तो उनकी रूस के प्रति भक्ति ही परिलक्षित होती थी।

पुलिस अधिकारी ने वहाँ से प्रस्थान किया। जार ने फिर खिड़की से बाहर देखना आरंभ किया। उसके मन में यह डर था कि यदि यह शक्ति खिरगीज सेना और तातारी सेना से मिल जायगी तो विद्रोहियों की शक्ति और प्रभाव अनेक गुना बढ़ जायगा। फिर तो उन्हें पराजित करना असंभव बन जायगा। खिरगीजों के छोटी-छोटी टुकड़ियों में बँट जाने पर भी एक-एक टुकड़ी की संख्या लाख तक पहुँचती थी। वे लोग लड़ने में कुशल न होने पर भी लूटमार करने में बेजोड़ थे। वे अँधेरे का लाभ उठाकर व्यापारियों के काफिलों पर पत्थर फेंकते थे और उनका माल लूट लेते थे। हाँ, वे तोप की मार के सामने टिक नहीं सकते थे। तो भी हजारों की संख्या के सामने एक दो तोपची क्या कर सकते थे? इसीलिए पैदल सेना के साथ मास्को से बड़ी-बड़ी तोपें तथा ढेर के ढेर गोले-बारूद भेजने की आवश्यकता थी। रूस से साइबेरिया अधिक दूर होने के कारण इन वस्तुओं का भेजना कठिन हो रहा था।

यदि थोड़ी देर के लिए यह भी मान लिया जाय कि मार्ग में कोई कठिनाई न होगी तो भी विद्रोहियों के प्रदेश में उस सेना के पहुँचने के समय तक तो विद्रोही अपने दल और बल में ऐसी विराट् शक्ति प्राप्त कर लेंगे कि उनको कोई भी पराजित न कर सकेगा।

विद्रोही लोग तुर्किस्तान के निवासी थे। वे काकेशियन

जाति के थे। बुखारा, खोकंद, कुंडुज आदि का उसमें समावेश होता है। इन प्रदेशों के राजा भिन्न-भिन्न थे। प्राकृतिक दृष्टि से देखने पर बुखारा प्रदेश सुरक्षित था। उसके चारों ओर पर्वत थे। उचित युद्ध-योजना बनाये बिना उस प्रदेश पर आक्रमण करना सरल न था।

आइवेन ओगारेफ के समझाने से बुखारा का अमीर फ्यूफर खान ६० हजार पैदल और ३० हजार अश्वारोहियों के साथ युद्ध के मैदान में उतर आया था।

इस समय ग्राण्ड ड्यूक साइबेरिया की राजधानी इर्कुट्स्क में थे। उन्हें विद्रोही आइवेन ओगारेफ और फ्यूफर खाँ के संबंध में अनेक समाचार मिल चुके थे।

ड्यूक को जार अधिक सजग करना चाहता था, किन्तु यह काम बहुत कठिन था। इर्कुट्स्क मास्को से हजारों मील दूर है। मार्ग में विद्रोहियों के थाने स्थापित हो चुकने के कारण एक चतुर सन्देशवाहक की खास जरूरत थी। वह व्यक्ति कद्दावर, निर्भय और दक्ष होना चाहिए। तभी यह काम पूरा हो सकता था। इसमें किसी सामान्य आदमी की हिम्मत काम नहीं दे सकती थी।

उसने एक अर्थहीन दृष्टि से तारा-जटित आकाश की ओर देखना शुरू कया।

(३)

जनरल किशफ अन्दर आया।

जार ने उत्सुकता से पूछा कि दूत कहाँ है ?

"सरकार, बाहर खड़ा है।"

"वह किस तरह का आदमी है?"

"सरदी-गरमी, भूख-प्यास, श्रम-परिश्रम, कोई भी उसे विचलित नहीं कर सकते।"

"नाम?"

"माइकेल स्ट्रगोफ"

"वह इसी समय प्रस्थान कर सकेगा?"

"हाँ, केवल आदेश की ही देर है।"

"उसे अन्दर बुलाओ।"

माइकेल अन्दर आया। उसे देखकर जार अवाक् रह गया।

माइकेल एक स्वस्थ समुज्ज्वल मूर्ति सरीखा था। ऊँचा कद, विशाल छाती, परिपुष्ट देह, माथे पर घुँघराले बाल, काली मनोहर आँखें, निर्मल स्थिर दृष्टि और धनुषाकार भौंहों को देखते ही जार को इस व्यक्ति की योग्यता का सम्पूर्ण अनुमान हो गया। उसे प्रतीत हुआ कि यह मनुष्य अद्‌भुत है। आकर उसने ज़ार का अभिवादन किया।

माइकेल का जन्म वन के वातावरण में हुआ था। उसके पिता साइबेरिया के प्रसिद्ध शिकारी थे। उसकी माता का नाम माइका स्ट्रगोफ था। उसका घर साइबेरिया के ओम्स्क नगर में था और वहीं उसकी माता रहती थी।

माइकेल भी अपने पिता की तरह सुदृढ़ और सुडौल था। वह आठ वर्ष की उम्र से ही पिता के साथ वन में घूमने लगा

था। बरछी और बन्दूक अपने कंधों पर रखकर पिता के पीछे-पीछे वन में घूमने और शिकार करने में उसे बेहद मजा मिलता था।

कुछ दिनों पश्चात् उसने बचपन पूरा करके युवावस्था में प्रवेश किया। इस उम्र में उसे कलेजा थरथरा देने वाली ठंढ, जलाने वाली बरसती लू, भूख की ज्वाला, अमानुषी परिश्रम आदि का अनुभव हुआ। वह अन्न बिना कई दिनों तक भूखे पेट रह सकता था। दस दिन तक लगातार जागरण करते रहना उसके लिए खेल था। जाड़े की कड़कड़ाती रात में हिमाच्छादित रास्तों पर चलना उसे कठिन न मालूम होता था। कभी-कभी वह रात को रास्ता भूल जाता तो भी उसे इस बात का कुछ दुख न होता। ये गुण उसे परम्परा में अपने पिता से मिले थे। साथ ही उसकी अनुभवशक्ति की भी उसे विशेष भेंट के रूप में मिली थी। उसे प्रकृति के अंग-प्रत्यंग में कुछ गुप्त माहात्म्य दिखाई देता था और मन में प्रकृति की पुस्तक पढ़ने की जिज्ञासा थी।

एक ओर उसका ऐसा विचित्र स्वभाव था और दूसरी ओर उसका शारीरिक बल भी वैसा ही आश्चर्यजनक था। उसका लौह शरीर सभी के आकर्षण का विषय था। फिर भी इस वज्र-देह के अन्दर निवास करने वाला उसका हृदय फूल के समान कोमल था।

संसार में उसे एक ही बन्धन था—उसकी मा। वह अपनी माता को खूब चाहता था और सच्चे अन्तःकरण से उसकी भक्ति करता था। उसके जीवन में माता ही सर्वस्व

थी। जब वह बीस वर्ष का हुआ तो अपना भाग्य आजमाने के लिए साइबेरिया छोड़कर रूस आया। उसने प्रण किया कि अवसर मिलते ही अपनी माता के पास लौट आयेगा। अब भी अपने मन से उसने इस प्रण को एक क्षण के लिए भी भुलाया न था।

कहाँ मास्को और कहाँ ओम्स्क ? प्रति वर्ष उसे जाड़े में छुट्टी मिलती, वह अपनी माता से मिलने को दौड़ पड़ता। मार्ग में पहाड़ आते, प्रचण्ड बर्फीली आँधी बहती। मेंड़, रास्ते, पगडंडी, मैदान और वृक्षों पर बरफ का ढेर जम जाता। फिर भी ये वस्तुएँ उसे बाधा नहीं पहुँचा सकती थीं। वह ऐसे समय भी अपनी माता के पास पहुँचता और वहाँ से वापस आता। आज से कुछ दिन पूर्व दक्षिण-प्रदेश में जाकर एक महत्त्वपूर्ण कार्य करने का उत्तरदायित्व माथे पर आ जाने के कारण वह पिछले तीन वर्ष से अपनी माता से मिलने न जा सका था। इतने दिन बाद उसे थोड़े दिन की छुट्टी मिली थी और वह जाने की तैयारी ही कर रहा था कि इसी बीच उसे एक सरकारी आदेश के अनुसार इस समय राजमहल में आना पड़ा था।

जार ने माइकेल को सिर से पैर तक देखा। वह मुँह से एक शब्द भी न बोल सका। सामने माइकेल पाषाण-मूर्ति की भाँति खड़ा था। सम्राट् खूब प्रसन्न हुआ।

उसने माइकेल की आँखों को देखकर कहा—“तेरा नाम ?”

विनीत भाव से माइकेल ने उत्तर दिया—“माइकेल स्ट्रगोफ।”

"व्यवसाय ?"

"मैं एक समाचार एकत्र करनेवाले दल का अधिकारी हूँ।"

"तू साइबेरिया के रास्तों से परिचित है ?"

"सरकार, मैं साइबेरिया का ही निवासी हूँ।"

"तेरा घर कहाँ है ?"

"ओम्स्क नगर में।"

"वहाँ तेरा कौन रहता है ?"

"मेरी माता।"

जार कुछ देर के लिए विचारमग्न हो उठा। फिर उसने एक बन्द लिफाफा माइकेल के हाथों में रखते हुए कहा—"माइकेल ! तुझे यह पत्र ग्राण्ड ड्यूक के हाथ में देना है। यह लिफाफा उसे छोड़ किसी दूसरे के हाथ में न जाना चाहिए।"

"सरकार, आपके आदेश का पूरा पूरा पालन होगा।"

"ड्यूक इर्कुट्स्क में हैं।"

"तो मैं इर्कुट्स्क जाऊँगा।"

"मार्ग में विद्रोहियों की चौकियाँ हैं। वे तुझे पकड़ने का प्रयत्न करेंगे।"

"मैं उनसे अवश्य बच जाऊँगा।"

"किन्तु खूब चौकन्ने रहना। धोखेबाज आइवेन ओगारेफ विद्रोहियों का नेता बन गया है। तुझे उसका भी सामना करना पड़े तो कोई डर तो नहीं ?'

"मैं सबसे निपट लूंगा।"

"क्या तू ओमस्क होते हुए जायगा ?"

"हाँ सरकार, वही रास्ता है।"

"किन्तु एक बात याद रख। तू अपनी माता के पास न जा सकेगा। ऐसा करने से भेद खुल जायेगा।"

माइकेल कुछ मानसिक उलझन में पड़ा—किन्तु केवल एक क्षण के लिए। दूसरे ही क्षण बोला—"सरकार, आपके आदेश के अनुसार ही होगा। मैं अपनी माँ के पास नहीं जाऊँगा।"

"प्रतिज्ञा कर, कि तू किसी भी तरह दूसरे के सामने भेद नहीं खोलेगा।"

"मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि...।"

जार ने एक बार फिर माइकेल की ओर देखा और गंभीर स्वर से बोला—"माइकेल स्ट्रगोफ! याद रख, इस पत्र पर साइबेरिया का भविष्य अवलंबित है और विशेषतः ड्यूक का जीवन।"

"महाराज, मैं यह पत्र ड्यूक के ही हाथों में दूँगा।"

"रास्ते में कितनी ही आपत्तियाँ आवें, किन्तु तुझे पत्र ड्यूक को ही देना है।"

"मैं अपने शरीर में प्राण रहने तक आपके आदेश का उल्लंघन नहीं करूँगा।"

"तेरी विजय हो।"

"विजय प्राप्त करके मैं आपके आदेश का पालन करूँगा।"

अब जार निश्चिन्त हुए। माइकेल के धैर्य भरे उत्तर मे जार के मन ने खूब राहत पायी।

उसने फिर माइकेल से कहा—"तू ईश्वर का नाम लेकर यहाँ से शीघ्र प्रस्थान कर; और एक बात याद रख कि रूस का भविष्य, सम्राट् की भलाई और ड्यूक का जीवन ये सब तेरी मुट्ठी में हैं।"

माइकेल ने जार का अभिवादन किया और वहाँ से रवाना हो गया। उसके चलने की गति से दृढ़ता और निर्भयता टपक रही थी।

जार ने मन ही मन कहा—"अद्भुत!"

जनरल किशफ ने नम्रता से कहा—"सचमुच माइकेल विचित्र मनुष्य है।"

जार ने कहा—"मनुष्य नहीं, अपितु मनुष्यरूपी देवता है!"

(४)

उस समय गर्मी की ऋतु थी। बरफ पिघल रही थी। रास्ते साफ हो रहे थे। जाड़े में साइबेरिया के मार्गों पर चलना कठिन हो जाता है। प्राकृतिक अवरोधों का कोई अन्त नहीं होता। गड्ढे, सरोवर, नदी, तालाब सबके सब हिमाच्छादित होने से समतल दिखाई देते हैं और रास्ते का कोई चिह्न नहीं दिखाई देता। जोर से ओस बरसने के कारण छोटे-छोटे

पौधे ढँक जाते हैं और क्षुधा-पीड़ित वन्य जीव शिकार की खोज में इधर-उधर घूमने लगते हैं।

ऐसा दृश्य भी माइकेल के लिए आपत्तिजनक नहीं था। वह किसी विचित्र मिट्टी का बना हुआ था। इस समय यदि जाड़े की ऋतु होती तो उसे आपत्तियों से भी अधिक अनुकूल सिद्ध होती, क्योंकि ठंढक के भय से उससे शत्रुओं के मिलने की संभावना न रहती और वह निर्विघ्न होकर अपने लक्ष्य स्थान पर पहुँच सकता।

उसे भला प्रतिकूलता और अनुकूलता के बीच पसन्द करने का अधिकार ही कहाँ था? सिर पर कर्तव्य का बोझ था, जिसका उसे ठीक-ठीक पालन करना था। इसलिए चाहे कितनी ही कठिनाइयाँ आकर खड़ी हों तो भी उसे अपने कर्तव्य से डिगाने का साहस नहीं कर सकती थीं।

उसने कमर कस ली।

इतनी लम्बी यात्रा के लिए धन की आवश्यकता थी, किन्तु उतना धन तो उसे मिल गया था। उस धन की रक्षा के लिए उसे कोई सरकारी प्रमाण-पत्र नहीं दिया गया था, बल्कि एक सामान्य यात्री का परवाना (परिचय-पत्र) दिया गया था। वही छोटा-सा पासपोर्ट उसके पास था। उसमें लिखा था—"नाम—निकोलस कोपनिफ, व्यवसाय खुदरे माल का व्यापार, गाँव—इर्कुट्स्क।" इस पासपोर्ट पर दो आदमी प्रवास कर सकते थे।

उस समय सरकारी डाक-व्यवस्था घोड़ों पर की जाती थी। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर डाकघर बने थे। भाड़ा देकर एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन पर जाकर घोड़ा बदल दिया जाता था और आगे की यात्रा की जाती थी। यदि माइकेल चाहता तो अपना पासपोर्ट दिखाकर ऐसी यात्रा कर सकता था; परन्तु उसने ऐसा करना ठीक न समझा। उसने सोचा कि ऐसा करने से संकट बढ़ जायगा तथा वह किसी आकस्मिक झंझट में फँस जायगा। उसे अपना मूल नाम छिपाने की जरूरत थी। लोगों का उसे निकोलस के ही नाम से पहचाना जाना ही निरापद था। यदि वह जार का सन्देश-वाहक समझा गया तो उसका सारा काम मिट्टी में मिल जायगा।

१६ वीं जुलाई को मास्को स्टेशन पर माइकेल एक साधारण यात्री की पोशाक में दिखाई दे रहा था। उसने कुर्ता और पाजामा पहन रखा था। पास में एक रिवाल्वर भी छिपा रखा था। भालू का शिकार करने के लिए वह बरछी लेना भी न भूला था।

उसका विचार मास्को स्टेशन से दस घण्टे की दूरी पर स्थित निजनी नोवोगोरोड स्टेशन पर पहुँचने और वहाँ उतरकर शत्रुओं के शिविरों का पता लगाने का था। यह पता लगाकर वह किसी अनुकूल गाड़ी या स्लेज से आगे बढ़ना चाहता था।

माइकेल एक डिब्बे के अन्दर चुपचाप कोने में बैठ गया।

उसे देखकर किसी को भी साधारण यात्री होने का अनुमान हो सकता था। उसने डिब्बे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। अनेक प्रकार के यात्री बैठे थे और भिन्न-भिन्न तरह की चर्चाओं में व्यस्त थे। उनके बीच उसे शान्ति से सोने की संभावना नहीं दिखाई दे रही थी इसलिए उसने उन लोगों की बात सुनने के लिए अपने कान सजग किये।

वे लोग खिरगीज और तातारियों के विषय में बातचीत कर रहे थे। उनके समाचार सर्वांशतः सत्य नहीं कहे जा सकते थे। कितने ही यात्री बहुत धीरे-धीरे बात कर रहे थे। इस प्रकार धीरे-धीरे बात करना रूसी लोगों का मूल स्वभाव है। उन लोगों की मान्यता है कि दीवाल के भी कान होते हैं। इसलिए धीरे-धीरे बात करने में ही कुशल है।

यात्रियों में भी भिन्न-भिन्न देश के व्यापारीवर्ग के व्यक्ति दिखाई दे रहे थे। यहूदी, तुर्की, कजाक, रूसी, जार्जियन आदि अनेक जाति के यात्री थे। सारा डिब्बा भिन्न-भिन्न प्रकार की बोलियों की गुंजार से मुखरित हो रहा था। ये लोग निजनी नोवोगोरोड के मेले में जा रहे थे।

एक ऊँची टोपीवाले व्यक्ति ने कहा—"सुना है कि इस बार चाय का मूल्य खूब बढ़ गया है।"

पास में बैठे हुए एक यात्री ने गंभीर भाव से कहा—"आप इस सम्बन्ध में चिन्ता मत कीजिये। इस बार चाय की कीमत नहीं घटेगी। पश्चिम के लोग खूब चाय खरीदेंगे। वे निजनी नोवोगोरोड के मेले से खूब चाय ले जायेंगे।

किन्तु मेरा खयाल है कि इस बार बुखारा की चटाइयों की माँग अधिक नहीं होगी।"

"तो क्या इस बार बुखारा का माल नहीं मिलेगा ?"

"नहीं। हाँ, वह समरकन्द से मिल सकेगा। यहाँ तो खीबा से लेकर चीन की सीमा तक विद्रोह फैला हुआ है।"

डिब्बे के दूसरी ओर कुछ और बात चल रही थी। उसमें व्यापार की बातों के स्थान पर तातारी लोगों के विद्रोह की आलोचना हो रही थी।

एक व्यक्ति ने कहा—"तातारियों के साथ खिरगीज भी मिल गये हैं।"

"हाँ, ऐसा सुना जाता है।" दूसरे व्यक्ति ने कहा "लेकिन यह बात कितनी सच और कितनी झूठ है, इसे कौन कह सकता है ?"

तीसरे की आवाज आई—"मुझे तो भय है कि यह विद्रोह नवग्रेड के मेले की रौनक छिन्न-भिन्न कर डालेगा।"

इस समय एक व्यक्ति आँखें फाड़कर इन लोगों की बातें ध्यान से सुन रहा था। वह व्यक्ति कोई अन्य नहीं, बल्कि संवाददाता आलसाईट जोलिवेट था। वह सभी यात्रियों की ओर ध्यान से देख रहा था। उसने मूक श्रोता रहना छोड़कर यात्रियों से अनेक प्रश्न करने आरंभ किये। उसका अनुमान था कि ऐसा करने से किसी रहस्य भरी बात का पता लग सकेगा; किन्तु परिणाम उल्टा आया।

लोगों ने समझा कि यह कोई सरकारी गुप्तचर है, इसीलिए बीच-बीच में प्रश्न करता जा रहा है। फलतः उसे तातारी विद्रोह के बारे में कोई खास बात नहीं मिली। निराश होकर जोलिवेट ने अपनी डायरी में लिखा—"यात्री खूब सजग हैं। वे युद्ध की आलोचना करने में खूब सावधान हैं।"

उसी समय अंग्रेज संवाददाता हेरी दूसरे डिब्बे में बैठा था और अपना काम कर रहा था। वह प्रकृति से ही कम बोलनेवाला था, लेकिन उसके कान खूब चौकन्ने थे। वह एक साधारण यात्री की भाँति चुपचाप अपने स्थान पर बैठकर यात्रियों की बातचीत सुन रहा था। उस पर यात्रियों को कुछ भी शंका नहीं हुई। व्यापारियों से उसे तातारी विद्रोह के बारे में ताजी खबर मिली, इसलिए वह अधिक गंभीर होकर बैठा। एक अच्छा अवसर देखकर उसने अपनी डायरी में लिखा—"मेरे साथ यात्रा करने वाले खूब घबराये से प्रतीत होते हैं। विद्रोह छोड़कर उनकी जीभ पर और कोई बात ही नहीं है। वे स्पष्ट रूप से युद्ध की चर्चा करते हैं।"

रूस के सभी स्थानों पर गुप्तचर फैले हुए थे। अभी तक पुलिस को विद्रोही आइवेन ओगारेफ का पता नहीं मिला था। निजनी नोवोगोराड के मेले में भिन्न-भिन्न प्रदेशों से यात्री विविध प्रकार की इच्छायें लिये हुए आ रहे थे। इस बार भी यात्री कम न थे। इन सब में कौन गुप्तचर है, यह

जानना सरल काम न था। कौन कह सकता है कि स्वयं आइवेन ओगारेफ भी गुप्त वेश में यहाँ नहीं होगा ! इसलिए सरकार खूब सावधानी रख रही थी। सरकार की ओर से प्रत्येक यात्री की तलाशी ली जाती थी।

रूस की पुरानी राजधानी व्लाडिमिर इतिहासप्रसिद्ध नगर है। वहाँ गाड़ी थोड़ी देर के लिए रुकी। गाड़ी रुकते ही एक सोलह-सत्रह वर्ष की लड़की गाड़ी में सवार हुई। जहाँ माइकेल बैठा था उसके सामने के स्थान पर उस लड़की ने आसन जमाया। उसके पास एक लाल चमड़े का बेग छोड़कर अन्य कोई खास वस्तु न थी। वह बेग अपने बगल में रखकर चुपचाप अपनी जगह पर व्यवस्थित हो गई। गाड़ी के दूसरे यात्रियों की ओर देखने की उसे तनिक भी चिन्ता न थी। इससे ज्ञात होता था कि वह किसी समीप के स्थान पर जा रही है।

माइकेल का ध्यान उस लड़की की ओर गया। सुन्दर रूप होने पर भी मुख पर एक प्रकार की गंभीरता का साम्राज्य था। उसके मुख की भाव-रेखाओं से प्रकट हो रहा था कि उसने सुख-दुःख के अनेक थपेड़े सहे हैं। जिस उम्र में कोई लड़की मुक्त मन से अल्हड़ बनकर घूमती है उस उम्र में इस लड़की ने कोई महान् उत्तरदायित्व धारण किया था। वह शान्त और सौम्य दिखाई दे रही थी।

माइकेल का कुतूहल बढ़ने लगा, किन्तु निरुद्देश बातचीत

में उतरना उसके स्वभाव के विरुद्ध था। इसलिए वह मूक भाव से उस युवती की ओर देखता रहा।

गाड़ी चलने लगी। एक वृद्ध यात्री ऊँघ रहा था। ऊँघ में ही उसका माथा लड़की की ओर आया। माइकेल ने तुरन्त उसका माथा पकड़ लिया। वृद्ध यात्री बड़े खराब स्वभाव का था। वह माइकेल से झगड़ पड़ा; लेकिन माइकेल ने अपनी डरावनी आँखों से देखकर तुरन्त उसका बोलना बन्द कर दिया। वह वृद्ध विनम्र बनकर थोड़ी दूर जा बैठा।

उस युवती ने माइकेल की ओर देखा। युवती की दृष्टि में माइकेल के प्रति श्रद्धा भरी कृतज्ञता लक्षित हो रही थी।

लगभग एक घंटा बीत गया। अब निजनी नोवोगोरोड बहुत दूर न था। उस समय एक दुर्घटना हुई। गाड़ी थोड़ी मुड़ी और एक ऊँची जगह पर आकर जबर्दस्त धक्का खाकर खड़ी हो गई। उस समय गाड़ी के यात्रियों ने भी एक जोर के धक्के का अनुभव किया। वे चौंक पड़े। कोई गुप्त भय उनके मुख पर छा गया। कितने तो डरकर चिल्ला पड़े। जोर का कोलाहल मच गया। गाड़ी के दरवाजे और खिड़कियों पर भीड़ इकट्ठी हो गई। सब बाहर जाने को उत्सुक थे।

उस समय माइकेल की दृष्टि उस युवती पर पड़ी। युवती अपने स्थान पर स्वस्थ और निश्चिन्त बैठी थी। उसके मुख पर इस आकस्मिक घटना का थोड़ा भी भय परिलक्षित न होता था।

माइकेल मन ही मन बड़बड़ाया—"कैसी विचित्र लड़की !"

गाड़ी का एक डिब्बा थोड़ा टकरा जाने से यह घटना घटी थी। यदि ऐंजिन को कुछ अधिक जोर का धक्का लगा होता तो सारी ट्रेन नीचे लुढ़क गई होती और एक गंभीर दुर्घटना हो गई होती, किंतु भाग्य से ऐसी घटना न घटी। एक घण्टे बाद गाड़ी फिर चली।

वहाँ से चलकर रात को आठ बजे गाड़ी निजनी नोवोगोरोड स्टेशन पर पहुँची। लोगों के उतरने के पहले ही पुलिस गाड़ी के डिब्बों में घुस आई और एक-एक यात्री की तलाशी लेने लगी।

माइकेल ने पुलिस को अपना सामान दिखा दिया। पुलिस ने एक-एक वस्तु खूब सावधानी से जाँची और माइकेल को छोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने युवती की ओर देखा। उसके पास विशेष सामान न था। रूस के अन्दर के भाग में यात्रा करनेवालों के पास कोई अधिक सामान नहीं होता।

युवती ने पुलिस-इन्स्पेक्टर को एक कागज दिया। उस कागज में सरकारी मुहर लगी थी।

पुलिस इन्स्पेक्टर ने पूछा—"क्या तू रीगा से आती है?"

"जी हाँ।"

"इर्कुट्स्क जाना चाहती है?"

"जी हाँ।"

"किस रास्ते होकर वहाँ जाना चाहती है?"

"पार्मा के रास्ते होकर।"

"बहुत अच्छा ! निजनी नोवोगोरोड के पुलिस स्टेशन पर इस परवाने (आदेश-पत्र) को प्रमाणित करा लेना, भूलना मत।"

युवती ने सम्मतिसूचक माथा हिलाया। उसके मुख से इर्कुट्स्क जाने की बात सुनकर माइकेल का कुतूहल बहुत बढ़ गया।

एक अनजानी लड़की को अकेले इर्कुट्स्क जाने की बात सुनकर उसे विस्मय हुआ क्योंकि उसे इस बात का पता था कि वहाँ पहुँचने का रास्ता कितना दुर्गम था। उसी रास्ते पर विद्रोही तातारी स्थान-स्थान पर अड्डा जमाकर बैठे थे, इसका उसे ध्यान हो आया। उसके मन ने प्रश्न किया कि ऐसे संकट में इस युवती पर क्या बीतेगी ? पुलिस इन्स्पेक्टर ने अपना काम पूरा किया और नीचे उतरा। इसके बाद सारे डिब्बों के दरवाजे खोले गये। लोग उतरने लगे।

माइकेल भी युवती के पीछे-पीछे नीचे उतरा। लेकिन इतनी ही देर में युवती लोगों की भीड़ में कहीं अदृश्य हो गई।

(५)

'निजनी नोवोगोरोड' वोल्गा और ओका नदी के संगम पर बसा हुआ एक बड़ा नगर है। यहाँ की आबादी लगभग पैंतीस हजार है; किन्तु यहाँ जो प्रतिवर्ष मेला लगता था

उसमें इसकी संख्या अपनी आबादी से दस गुना बढ़ जाती थी। लोग इस नगर में लगभग तीन सप्ताह तक रहते थे।

यह नगर वोल्गा नदी के दोनों तटों पर स्थित था। वोल्गा के एक पुल से नगर के दोनों भाग जुड़े थे। इस ओर पहाड़ी किला था और उस ओर नगर बसा हुआ था। इसके हर एक रास्ते पर मानव-समुद्र छलकता रहता था। माइकेल भी भीड़ वाले रास्ते पर आकर खड़ा हो गया।

निजनी नोवोगोरोड से पार्मा नगर काफी दूर होने के कारण माइकेल अविलम्ब जहाज की खोज करना चाहता था। उसे पता लगा कि कोकेसस नाम का जहाज दूसरे दिन बारह बजे खुलनेवाला है। एक दिन रुकने की बात से कुछ दुःख हुआ, किन्तु इसके सिवाय कोई रास्ता न था। पार्मा जाने के लिए जहाज ही ठीक था। घोड़े पर जाने से पहुँचने की कोई संभावना न थी।

विवश होकर उसे उस दिन वहीं ठहरना पड़ा।

माइकेल एक होटल में गया। वहाँ कुछ खा-पीकर रास्ते पर आ गया। इस समय रात आरंभ हो चुकी थी। लोगों का आवागमन घट चला था।

लगभग एक घण्टा घूमने के बाद वह एक बड़े मकान के पास जा पहुँचा। वहाँ लकड़ी का एक तख्त पड़ा था। थकावट मिटाने के विचार से माइकेल उस पर बैठा। मकान के सामने मैदान था। पवन मन्द-मन्द चल रहा था।

माइकेल को गाड़ी की उस युवती की याद आई। कैसे आश्चर्य की बात है—कहाँ साइबेरिया और कहाँ इर्कुट्स्क ? वह युवती अकेली घर से निकल पड़ी थी और भयंकर रास्तों पर घूम रही थी। ऐसी कोमलांगी क्यों इस विपद्-सागर में पड़ रही होगी ? मेरे लिए तो सरकारी कर्तव्य लादा गया है, जिससे मैं इस खतरे में विचर रहा हूँ; किन्तु वह युवती किसलिए खतरा मोल लेती होगी ?

एक, दो, पाँच मिनट गुजरे। उसको ऐसा अनुभव हुआ मानो किसी का मजबूत हाथ उसके कन्धों पर आ पड़ा हो। एक अनजान व्यक्ति ने माइकेल से पूछा—"तू कौन है ? यहाँ क्या कर रहा है ?"

माइकेल ने उस व्यक्ति की ओर देखकर उत्तर दिया—"मैं यहाँ थोड़ा आराम कर रहा हूँ।"

"क्या सारी रात तेरा विचार इस तख्त पर ही पड़े रहने का है ?" उस व्यक्ति ने पूछा।

"और मैं कर ही क्या सकता हूँ ?" माइकेल ने खिन्न स्वर में कहा।

"नहीं। वहाँ नहीं···तू यहाँ आ।" उस व्यक्ति ने कहा।

माइकेल परिस्थिति समझ गया था, परख गया था। उसने विचार किया कि सावधानी से काम लेना चाहिए। बुद्धि सजग रखे बिना कोई काम पूरा न होगा। बातचीत में भी पूरी सावधानी की जरूरत है।

इसलिए वह विनम्र स्वर में बोला—"नहीं, वहाँ आने की आवश्यकता नहीं है।" इतना कहकर वह कुछ पीछे हटा।

जब माइकेल ने उस व्यक्ति का चेहरा ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि यह चेहरा बोहेमियन लोगों से मिलता-जुलता है। उसने यह भी सोचा कि इन लोगों का संग अच्छा नहीं होता। उसने अनुमान किया कि यह मकान कोई धर्म-शाला है। माइकेल को इस बात की खबर थी कि रूस में बहुत से जिप्सी ऐसी धर्मशालाओं में अपना अड्डा जमाते हैं।

उस बोहेमियन व्यक्ति ने माइकेल के पीछे-पीछे जाना आरंभ किया और बातचीत करने का विचार किया। ठीक उसी समय मकान का एक दरवाजा खुला। एक स्त्री ने उसमें से अपना सिर बाहर निकाला और बोली—"तुम्हें क्या हो गया है? एक अनजान आदमी से क्या बातचीत कर रहे हो? वह किसी गुप्तचर जैसा प्रतीत होता है। जल्दी अन्दर आओ। भोजन तैयार हो गया है।"

स्त्री की बात सुनकर बोहेमियन कुछ सोच में पड़ गया और बोला—"ऐसी बात है! खैर, तो मैं इसे जाने देता हूँ। हाँ, सुन तो, यदि भगवान् की इच्छा होगी तो कल हम लोग यह स्थान छोड़कर कहीं दूसरे स्थान पर चले चलेंगे।"

उस स्त्री का नाम सांगरे था। उसने कहा—"क्या? क्या कल ही प्रस्थान करना होगा?"

"हाँ हाँ, कल ही !"

'अच्छा ... किन्तु तुम अन्दर आओ।"

बोहेमियन अन्दर गया और दरवाजा बन्द हो गया।

माइकेल मन ही मन बड़बड़ाने लगा—"कैसी विचित्र बात है ? ये दोनों ऐसा मानते हैं कि मैं उनकी भाषा समझ नहीं रहा हूँ, किन्तु ऐसा सोचना भी अच्छा ही है। इन लोगों को यह पता नहीं लगना चाहिए कि मैं साइबेरियन हूँ और साइबेरिया के सभी छोटे-बड़े प्रदेशों की भाषायें साधारणतः बोल-समझ सकता हूँ।"

रात बढ़ने लगी। माइकेल होटल की ओर लौटा। रास्ता वोल्गा के किनारे से होकर जा रहा था। नदी के विशाल जल-प्रवाह पर अनेक नावें खड़ी थीं। उसने होटल में आकर रात गुजारी।

१७ वीं जुलाई को अभी जहाज खुलने में पाँच घण्टे की देर थी। इतना अधिक समय किस तरह काटा जाय, यह एक प्रश्न था। एक-एक घंटा एक-एक युग के समान प्रतीत हो रहा था। माइकेल ने भोजन करने के बाद अपना बिस्तर लपेट लिया। अच्छी तरह पोशाक पहनकर मुहर-वाली चिट्ठी कोट के अन्दर की थैली में रखी। होटल का बिल चुका दिया और कन्धे पर बेग रखकर बन्दरगाह की ओर चल पड़ा।

अश्वारोही कजाक सेना के पहरेदार वोल्गा नदी के पुल के दोनों ओर पहरा दे रहे थे। पुल के उस पार एक

खुला मैदान था। उसी मैदान में नोवोगोरोड का मेला होता था। उसमें एक ओर गवर्नर-जनरल का तम्बू पड़ा था। वहाँ से शान्ति और व्यवस्था-सम्बन्धी सूचना दी जाती थी।

मेले में अनेक राज्यों के लोग आये थे। रूसी, साइबेरियन, जर्मन, कजाक, तुर्क, पर्शियन, यूनानी, हिन्दुस्तानी, चीनी—एशिया और यूरोप की कोई जाति बाकी न बची थी। भिन्न-भिन्न मुखाकृतियाँ, रंग-ढंग, भाषायें और बोलियाँ भी मानो मेले का एक अंग बन गई थीं। चारों ओर व्यापारियों की दूकानें दिखाई दे रही थीं। विविध देशों की विशिष्ट वस्तुओं का प्रदर्शन रखा गया था।

माइकेल मेले के विविध तमाशों को देखता-देखता अपने रास्ते पर आगे बढ़ रहा था। उसने अपना एक हाथ कोट की जेब में डाला, मुंह में पाइप था और बायें कन्धे पर बेग था। उसके मुख पर एक उदासीनता का भाव लक्षित हो रहा था।

इतने में ही उसने दो व्यक्तियों को बातचीत करते सुना कि गवर्नर-जनरल के तम्बू में पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी को बुलाया गया है। मास्को से एक तार आया है।

उन दो व्यक्तियों में से एक ने कहा—"इस समय मेला बन्द करने का हुक्म हुआ है।"

दूसरा बोला—"स्थान-स्थान पर पुलिस का पहरा लगा दिया गया है।"

इतने में एक तीसरा व्यक्ति बोल उठा—"अवश्य ही तातारियों ने टोम्स्क पर आक्रमण कर दिया है।"

उसी समय दूसरी ओर एक तीव्र कोलाहल सुनाई दिया—"देखो, तुम उधर देखो। पुलिस का साहब! पुलिस का साहब!"

जोर से तालियों की गड़गड़ाहट हुई, किन्तु थोड़ी देर बाद गड़गड़ाहट बन्द हो गई और वातावरण में शान्ति छा गई।

पुलिस के अधिकारी महोदय मैदान के मध्य में बने हुए एक ऊंचे मंच पर आकर खड़े हो गये। उन्होंने लोगों की ओर एक दृष्टि फेरी। उनके हाथ में एक तार था। उसने अपना बायाँ हाथ कुछ ऊँचा करके लोगों से कहना आरंभ किया—

"निजनी नोवोगोरोड के गवर्नर का आदेश है कि कोई भी रूसी नागरिक किसी भी कारण से रूस के बाहर नहीं जा सकेगा। विदेशियों को आदेश दिया जाता है कि वे चौबीस घण्टे में यह देश छोड़कर चले जायें।"

(६)

इस घोषणा से लोगों के माथे पर मानो वज्रपात हो गया। सारा शहर घोषणा सुनते ही चकित हो गया।

सबसे प्रथम चारों ओर घोषणा का विरोध करने के लिए लोगों की आवाज उठी। इसके बाद भयंकर निराशा का

चीत्कार सुनाई दिया; किन्तु पुलिस और कजाक सेना के आ जाने से सब मामला ठंढा हो गया। मेले के रंग में भंग पड़ गया। कोलाहल शान्त हो गया। कुछ ही घण्टों बाद इतना बड़ा मैदान एक मरुभूमि की तरह सुनसान बन गया—एकदम नीरव और निर्जन!

माइकेल थोड़ी देर वहाँ खड़ा रहा। फिर वह बन्दरगाह की ओर आगे बढ़ा। उसके मन में उस युवती की याद ताजी हो आई। वह विचारने लगा कि कितने दुर्भाग्य की बात है कि अब वह युवती आगे नहीं जा सकेगी। क्योंकि वह रूसी महिला है और सरकार की नई घोषणा के अनुसार उसका रूस छोड़ना एक अपराध है। उसके लिए आगे बढ़ने का रास्ता बन्द है। यद्यपि उसे पहले से ही सीमा पार करने का परमिट मिला है, किन्तु वह अब नये आदेश से रद्द गिनी जायगी। ओह! बेचारी असहाय है! क्या मैं उसकी किसी तरह मदद कर सकता हूँ? हाँ, मैं उसकी सहायता एक रूप से कर सकता हूँ। उससे मेरे कर्तव्य को किसी तरह की आँच नहीं लगेगी और उसके लिए…।

सहसा उसके मन में एक बात आई। उसने विचार किया कि मुझे भी उस युवती की बहुत आवश्यकता रहेगी। मैं अकेला हूँ। एक व्यक्ति को नितांत दुर्गम पन्थ पर सतत अकेले चलते देखकर सबके मन में प्रश्न उठेगा कि यह व्यक्ति अकेले कहाँ जाता होगा, किन्तु यदि वह युवती मेरे साथ हो तो किसी के मन में अचानक ऐसा सन्देह न होगा।

साथ ही मेरे परिचय-पत्र में जो कुछ लिखा है उसमें कोई गड़बड़ी नहीं होगी। मैं सचमुच निकोलस कोपनिफ हूँ— साधारण व्यापारी हूँ। मेरा घर इर्कुट्स्क में है। मैं अपने घर जा रहा हूँ। इस प्रकार मैं उस युवती को साथ ले जा सकूँगा—किन्तु वह युवती है कहाँ ?

उस समय नगर में नौ का घंटा बजा। जहाज बारह बजे खुलनेवाला था। अभी तीन घण्टे का समय था। वह फिर पुल पार करके युवती की खोज में निकल पड़ा। जिन रास्तों पर लोगों का आवागमन कम था उन रास्तों द्वारा उसने सारा नगर छान डाला—धर्मशाला में, होटल, सार्वजनिक स्थान, अनाथाश्रम। कहीं भी उस युवती का पता न लगा।

इससे माइकेल मन में कुछ दुखी हुआ। फिर वह बन्दरगाह की ओर लौट पड़ा। उस समय ग्यारह बज रहा था। वह सर्वप्रथम अपने परवाने (परमिट) पर हस्ताक्षर कराने के लिए पुलिस अधिकारी के आफिस में गया। यद्यपि उसको परवाना दिखाने की कोई आवश्यकता न थी तब भी वह ऐसा आदमी न था कि लापरवाही करे। उसने यहीं परवाने को प्रमाणित कराना आवश्यक समझा, जिससे रास्ते में दिक्कत न खड़ी हो।

पुलिस अधिकारी के आफिस में खूब भीड़ थी। उस भीड़ का यह कारण था कि विदेशियों को अनुमति-पत्र दिया जा रहा था और इसका मुख्य उद्देश्य यह था कि विदेशियों

के साथ छिपकर कोई रूसी बाहर न चला जाय। केवल विदेशी ही जा सकता था। माइकेल किसी-न-किसी प्रकार लोगों की भीड़ में होता हुआ आगे पहुँच गया। उसने वहाँ पहुँचकर विचार किया कि आफिस में क्लर्क के छोटे कमरे के पास जाकर खड़ा रहना सरल काम नहीं है। वहाँ उसने बड़ी चतुराई से काम लिया। उसके पास एक पुलिस का सिपाही खड़ा था। उसने धीरे से उसके हाथ में दो रूबल थमा दिये। पुलिस वाले ने उसे तुरन्त वेटिंग रूम में बैठा दिया और स्वयं आफिस में चला गया।

माइकेल वेटिंग रूम में जाते ही चकित हो उठा। अन्दर एक बेंच पर गाड़ी पर यात्रा करनेवाली वही युवती बैठी थी। वह चित्र की भाँति नीरव और निस्पन्द थी। मुख पर विषाद की छाया फैल रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह किसी गहरी निराशा में डूब रही हो।

वह युवती अपना पासपोर्ट दिखाने के लिए पुलिस चौकी पर आई थी; किन्तु पुलिस अफसर ने नई घोषणा के कारण पासपोर्ट को प्रमाणित करने से इनकार कर दिया। इस प्रकार उसके इर्कुट्स्क जाने की योजना में एक बड़ा विघ्न खड़ा हो गया। इसीलिए वह हताश होकर बैठी थी।

माइकेल उस युवती के पास जा पहुँचा। युवती ने भी माइकेल की ओर अर्थ भरी दृष्टि से देखा। माइकेल के देखने से उसके हृदय में कुछ आशा का संचार हुआ। वह

अपने स्थान से उठी, किन्तु अपनी स्थिति का वर्णन करने में हीनता का अनुभव होने से कुछ बोली नहीं।

इतने में वह पुलिसवाला आया और माइकेल की ओर देखकर बोला—"आपको साहब बुलाते हैं।"

"अच्छा, चलो।" कहकर माइकेल लोगों की भीड़ चीरता हुआ अन्दर गया।

युवती ने माइकेल से सहायता की अपेक्षा की थी, किन्तु माइकेल के मुँह से आश्वासन का एक शब्द भी न निकलता देखकर वह निराश हो उठी। मानो उसके शरीर से सारी चेतना नष्ट हो गई। वह अपनी जगह पर धब से बैठ गई।

लगभग तीन मिनट बाद माइकेल वापस आया। वह निस्संकोच भाव से युवती का हाथ पकड़कर बोला—"मेरी बहन!"

यह सुनकर युवती की निराशा तिरोहित हो उठी। उसमें एक नया उत्साह तरंगित हो उठा।

माइकेल बोला—"इर्कुट्स्क जाने की स्वीकृति मिल गई है। तू भी मेरे साथ चल सकेगी।" युवती ने आनंदित होकर माइकेल के दोनों हाथों को अपने हाथ में दबा लिया।

वह खूब प्रसन्नता से बोली—"चलो भाई, मैं तुम्हारे साथ आने को तैयार हूँ। इसके बाद विशेष बातचीत न हुई। दोनों पुलिस स्टेशन से निकलकर रास्ते पर चलने लगे।

(७)

टन···टन घंटी बजी और जहाज खुला। यात्री अपने-अपने स्थान पर सँभलकर बैठ गये। माइकेल ने पहले से ही दो केबिन रिजर्व करा लिये थे। एक अपने लिए और दूसरा उस युवती के लिए।

लगभग दो घण्टे बाद युवती ने वार्तालाप आरंभ किया—"भाई, क्या आप भी इर्कुट्स्क जा रहे हैं?"

"हाँ बहन! हम दोनों एक ही रास्ते से चलेंगे।"

युवती कुछ कहते-कहते रुक गई, किन्तु माइकेल से यह बात छिपी नहीं। उसने माइकेल को सोया समझकर कुछ उच्च स्वर में मन ही मन कहा—"आज नहीं तो कल सारी बातें बता दूंगी कि मैं क्यों बाल्टिक सागर का तट छोड़कर यूराल पर्वत के उस पार जा रही हूँ। आज तो···।"

माइकेल तो जाग ही रहा था। वह बोला—"मुझे उन बातों को जानने की कोई विशेष उत्सुकता नहीं है।"

हँसकर युवती बोली—"किन्तु मैं उन बातों को आपसे कहने के लिए विवश हो गई हूँ। कोई भी बहन अपने भाई से कोई बात छिपा नहीं सकती। फिर भी आज मैं इतनी थक गई हूँ कि कुछ भी कहने का साहस मेरे अन्दर शेष नहीं बचा है।" सचमुच दुःख और विषाद के कारण उस युवती में चेतना विलुप्त-सी हो चली थी।

माइकेल बोला—"बहन ! तू इस समय आराम कर। चल, तुझे तेरे केबिन में पहुँचा दूँ।"

युवती ने कहा—"चलिए। मैं आपसे सब कहूँगी, किन्तु आज नहीं···।" "वे बातें फिर होंगी। पहले तू अपने केबिन में चल।" माइकेल ने कहा।

युवती को उसके केबिन में पहुँचाकर माइकेल अपने केबिन में लौटा। वह आराम नहीं कर सका। उसके मन में विचार उठा कि किसी भी व्यक्ति को मुझ पर सन्देह नहीं होना चाहिए कि मैं सरकारी सन्देश-वाहक हूँ और इर्कुट्स्क जा रहा हूँ। इसलिए प्रवासियों से एकदम दूर न रहना चाहिए। सबके साथ हिल-मिलकर जाना चाहिए। यदि कोई पूछे तो अपना नाम निकोलस कोपनिफ बताना चाहिए। और साइबेरिया जाने की बात कहनी चाहिए। किसी के मन में थोड़ा भी सन्देह नहीं पैदा होने देना चाहिए।

दिन की गर्मी के बाद रात हुई। स्निग्ध मधुर पवन के स्पर्श से सबके मन प्रफुल्लित हो रहे थे। सब यात्री सोने की तैयारी में लगे। धीरे-धीरे चारों ओर शान्ति व्याप्त होने लगी। जहाज की गति में भी संतुलन दिखाई दे रहा था।

इस समय माइकेल डेक पर इधर-उधर टहल रहा था। कुछ देर बाद वह दूसरी और तीसरी श्रेणी के बीच स्थित एक खाली स्थान पर जा पहुँचा।

सारे यात्री गंभीर निद्रा में निमग्न थे। ऊपर आकाश में

तार टिमटिमा रहे थे। माइकेल धीरे-धीरे अपने केबिन की ओर बढ़ा और जैसे ही सीढ़ी पर एक कदम रखा कि तुरन्त उसे किसी की भुनभुनाहट सुनाई दी। यह भुनभुनाहट इन सोये हुए यात्रियों में से आ रही थी। अनेकानेक यात्री शरीर पर चादर ओढ़कर सोये थे। इसलिए बातचीत करने-वाले का पता लगाना कठिन था। हाँ, इतना अवश्य था कि वह आवाज परिचित थी और कभी पहले भी सुनी प्रतीत होती थी।

वह सीढ़ी पर खड़ा हो गया। पहले तो कुछ समझ में नहीं आया। फिर ऐसा प्रतीत हुआ कि बोलनेवालों में एक पुरुष और दूसरी स्त्री है। उसने अनुमान लगाया कि ये दोनों कदाचित् धर्मशालावाले जिप्सी पुरुष-स्त्री होंगे, जो सरकारी घोषणा के अनुसार अन्य विदेशियों की भाँति निजनी नोवोगोरोड का मेला छोड़कर जा रहे होंगे।

उसका कुतूहल दूना बढ़ गया। अब उसे उन दोनों की बातचीत स्पष्ट सुनाई देने लगी।

स्त्री बोली—"मैंने कहा था न कि मास्को से कोई गुप्त-चर छिपा हुआ संदेश लेकर इर्कुट्स्क जा रहा है!"

पुरुष ने उत्तर दिया—"हाँ सांगरे! मैंने भी ऐसा सुना है। किन्तु क्या वह व्यक्ति ठीक समय पर पहुँच सकेगा? मुझे तो ऐसा लगता है कि वह कदाचित् बीच में ही अटक जायगा।"

माइकेल वहाँ एक क्षण भी खड़ा न रह सका। जहाज

के पिछले भाग में एक लकड़ी के तख्ते पर जाकर बैठा। उसे यह बात समझ में न आई कि इन लोगों ने इस बात का पता कैसे लगाया। और ये लोग कौन होंगे ?

(८)

१८ जुलाई को जहाज ने ज्यों ही कासार स्टेशन पर लंगर डाला त्योंही सशस्त्र पुलिस अधिकारी और कजाक सेना के अनेक सिपाही वहाँ उपस्थित हुए। वे लोग जहाज पर चढ़ने-उतरनेवाले यात्रियों पर ध्यान रखने लगे।

माइकेल ने उतरने की तैयारी करनेवाले लोगों में एक जिप्सी लोगों का वह दल भी देखा, जिसे उसने नोवोगोरोड के मेले में देखा था। एक ओर एक वृद्ध बोहेमियन पुरुष था और दूसरी ओर एक स्त्री बैठी थी। कदाचित् उसके आदेश से ही पन्द्रह-बीस युवा नर्तकियाँ जहाज से उतर रही थीं। वे नर्तकियाँ सचमुच सुन्दर और आकर्षक थीं।

माइकेल समझ गया कि इसी दल की एक स्त्री सांगरे थी और वह बूढ़ा बोहेमियन था। उसने अनुमान कर लिया कि ये ही दोनों पिछली रात को मेरे विषय में बातचीत करते रहे होंगे।

माइकेल को इन जिप्सियों का हावभाव और बर्ताव शंकाशील जान पड़ा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ये लोग सामान्य व्यक्तियों की आँख में धूल डालकर चल रहे हैं और अपने को छिपाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

उस बोहेमियन के माथे पर हैट थी। वह काफी पुरानी थी। उसका रंग उतर गया था। उसकी पोशाक में स्थान-स्थान पर पैबंद लगे थे जिससे मूल रूप का पता लगाना कठिन था। इस विचित्र वेश-भूषा से उसके शरीर का सच्चा पता लगाना संभव न था और चेहरे का परिचय पाना भी कठिन था। उसके पास ही वह जिप्सी स्त्री खड़ी थी। स्त्री की उम्र तीस वर्ष के आसपास प्रतीत होती थी। उसका शरीर लम्बा और बलवान् था। आँखें चमकदार थीं और माथे पर सुनहले बाल थे। चेहरा सौन्दर्य से पूर्ण विकसित हो रहा था। धीरे-धीरे वे दोनों नीचे उतरे। माइकेल उनकी ओर आश्चर्य से देखता रहा।

लगभग एक घण्टे बाद जहाज की घंटी बजी और जहाज बंदरगाह से रवाना हुआ। उसने देखा कि ठीक इसी समय एक व्यक्ति हाँफता हुआ जहाज की ओर दौड़ा आ रहा था। यद्यपि ऊपर चढ़ने की सीढ़ी उठा ली गई थी, किन्तु उस व्यक्ति ने सरकस के खिलाड़ी की भाँति ऐसी विचित्र छलाँग मारी कि अन्दर बैठे एक दूसरे यात्री की गर्दन पर कूद पड़ा। अन्दर बैठा हुआ वह यात्री कोई भद्र पुरुष प्रतीत हो रहा था। उसने उस व्यक्ति से पूछा "तू कौन है?" और उस व्यक्ति को ध्यान से देखकर बोला—"वाह! आप यहाँ भी आ पहुँचे?"

"वाह रे वाह! आप! बहुत अच्छा! बहुत अच्छा!" उस व्यक्ति ने साश्चर्य कहा।

"मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि आप इस प्रकार पिछड़ जायेंगे। मैं आपसे आगे अवश्य चला जाता, किन्तु मेरी यह इच्छा कदापि नहीं थी कि आप पीछे रह जायें।"

उस व्यक्ति ने कुछ गंभीर होकर कहा—"आप मुझस आगे-आगे आ रहे थे। ऐसा नहीं होना चाहिए—कदापि न होना चाहिए। हमें युद्ध के सैनिकों की भाँति एक साथ कदम उठाना चाहिए।"

"वाह रे वाह! इसका तो यह अर्थ हुआ कि हमें किसी भी अवसर पर एक दूसरे को असफल बनाने का प्रयास न करना चाहिए।

"हाँ, मुझे यह बात स्वीकार है।"

ऐसा कहकर फ्रेंच संवाददाता जोलिवेट ने हाथ आगे बढ़ाया। सामने से अंग्रेज संवाददाता हेरी ने भी हाथ बढ़ाया।

हेरी ने कहा—यदि आपने थोड़ी भी देरी की होती तो जहाज न मिला होता।

जोलिवेट ने उत्तर दिया—"रहने भी दीजिए। जहाज खुलने पर भी आप मुझसे आगे न जा सकते। मैं ऐसा आदमी नहीं, जो वापस लौटता। आपसे भी यह बात छिपी नहीं है। यदि ऐसा होता तो मैं किसी नये जहाज का प्रबन्ध कर लेता और वहाँ आपसे पहले पहुँच जाता। मुझे पैसे की कोई चिन्ता नहीं है। मेरी बहन दरियादिल है और पैसा तो पानी की तरह बहाती है। आप ही बताइये कि

ऐसा किये बिना कैसे काम चलता ? आपको पता नहीं कि यहाँ से तार-आफिस कितना दूर था ?"

हेरी ने कुछ होंठ को दबाते हुए कहा—"क्या आप तार-आफिस गये थे ?" जोलिवेट ने सन्तोष की एक साँस लेकर कहा—"हाँ। इसीलिए तो देर हुई।"

"इसका अर्थ यह है कि यहाँ से किलवन शहर तक तार जा सकता है ?"

"यह तो मुझे खबर नहीं, किन्तु इतना जानता हूँ कि कासार से पेरिस तक की लाइन बिलकुल सुरक्षित है।"

"तब तो आपने अपनी बहन को अवश्य ही समाचार भेजा होगा ?"

"अरे, बहन को मैंने समाचार खूब सुन्दर भाषा में भेजा है। अद्‌भुत वर्णन किया है।" जोलिवेट ने कहा।

"तो आप कोई नवीन समाचार जानते हैं ?"

"सुनिये, मैं अभी आपको सुनाये देता हूँ। मुझे वह समाचार आपको सुनाये बिना रहा ही नहीं जायगा। ताजा समाचार है कि विद्रोही तातारियों ने सेमिपोलेटिन्स्क तक आक्रमण किया है। सेना का नायक स्वयं फ्यूफर खान है। इस समय उसने अपना शिविर इर्तुस नदी के तट पर डाल रखा है। सुन लिया न! अब आप निश्चिन्त होकर यह समाचार अपने समाचार-पत्र के लिए भेज सकते हैं। इसमें कोई आपत्ति नहीं है।"

हेरी अचंभे में पड़कर विचारने लगा—"आश्चर्य है कि मैं ऐसा कोई समाचार न प्राप्त कर सका! अवश्य ही इस फ्रेंच संवाददाता ने यह समाचार कासार के किसी व्यक्ति द्वारा जाना होगा। केवल इतना ही नहीं, यह समाचार पेरिस तक पहुँच गया होगा। मेरा पत्र 'डेली टेलीग्राम' इस समाचार से वंचित रहेगा।"

दिन के लगभग दस बजे युवती अपना बिछौना छोड़ डेक पर आकर खड़ी हुई। इतने में सवेरे का भोजन करने की घण्टी बजी। माइकेल उस युवती को अपने साथ लेकर भोजनालय में गया। युवती ने कुछ थोड़ा-सा खाया। मानो वह बेकार अनाथ को थोड़ा भोजन करना ही उचित मानती हो।

युवती के भोजन का खर्च माइकेल ने दिया। इससे वह प्रसन्न हुई। दोनों ने पन्द्रह-बीस मिनट में भोजन कर लिया और जहाज के डेक पर जा बैठे। किसी प्रकार की प्रस्तावना के बिना ही युवती ने अपनी रामकहानी आरंभ की—"भाई! मेरा नाम नादिया फेडर है। मैं एक निर्वासित व्यक्ति की पुत्री हूँ। आज से एक महीने पहले मेरी माता की मृत्यु रीगा नगर में हुई। इसलिए मैं अपने निर्वासित पिता का आश्रय लेने इर्कुट्स्क जा रही हूँ।"

माइकेल बोला—"मैं भी इर्कुट्स्क जा रहा हूँ। भगवान् करे कि नादिया फेडर को कुशलतापूर्वक उसके पिता के पास पहुँचा सकूँ।"

कृतज्ञता के भाव से नादिया बोली—"ईश्वर आपको सदा सुखी रखे।"

इसके पश्चात् माइकेल ने बताया कि मेरे पास जो पासपोर्ट है उसके आधार पर मैं साइबेरिया के सभी स्थानों में जा सकता हूँ और कोई सरकारी व्यक्ति मुझे रोक नहीं सकता।

नादिया ने माइकेल के मुख की ओर देखा। वह इस बात का कोई उत्तर न दे सकी और मन ही मन बड़बड़ाई—"अरे! इस मनुष्य का जिस समय प्रथम दर्शन हुआ उस समय सचमुच कैसा मंगल मुहूर्त था?"

उसने माइकेल से कहा—"मुझे इर्कुट्स्क जाने का आदेश मिल गया था, किन्तु सरकार की नई घोषणा के अनुसार वह पासपोर्ट रद्द हो गया। यदि आपने मुझपर कृपा न की होती तो मुझे नोवोगोरोड में उलझ जाना पड़ा होता। यदि ऐसा हुआ होता तो मेरी कठिनाइयों की कोई सीमा न होती!"

माइकेल बोला—साइबेरिया के रास्ते बहुत कठिन और भयंकर हैं। वे साधारण मनुष्य के लिए तो अधिक कठिन हैं। उन रास्तों पर तातारियों ने विद्रोह का जाल फैलाया है। ऐसी दशा में तुमने घर से बाहर पैर रखने का साहस किस प्रकार किया?

नादिया ने उत्तर दिया—"मैं जिस समय रीगा से रवाना

हुई उस समय मुझे विद्रोह का कोई समाचार न मिला था। यह समाचार तो मुझे रास्ते में मिला।"

"यह समाचार सुनकर भी तू इतनी दूर क्यों आई?"

"मुझे जाना ही चाहिए—यह मेरा कर्तव्य है।"

युवती की ऐसी अपूर्व दृढ़ता देखकर माइकेल चकित हो उठा।

इसके बाद वह अपने पिता की बात कहने लगी—"मेरे पिता का नाम वासिली फेडर है। वे रीगा नगर में एक प्रतिष्ठित डाक्टर थे। सरकार को ऐसा सन्देह हुआ कि वे राजनीतिक क्रान्तिकारियों से सम्बन्ध रखते हैं। इसी लिए उन्हें सीमा के पार भेज दिया गया। मुझे याद है कि उन्होंने मुझसे और मेरी माता से अन्तिम विदा लेते समय मुझे प्यार से चूम लिया था और उनकी आँखें छलछला आई थीं।

युवती ने कुछ समय चुप रहकर फिर कहना शुरू किया—"सीमा पार करने के डेढ़ वर्ष बाद मेरी मा ने जीवन की अन्तिम साँस ले ली। अब मुझे अपने दुर्भाग्य का पता लगा कि मेरा संसार में कोई नहीं है। मेरे पास सम्पत्ति के नाम पर कानी कौड़ी भी न थी। मैं कर क्या सकती थी? अन्त में परीशान होकर सरकार से प्रार्थना की कि मुझे अपने पिता के पास आश्रय लेने का आदेश दिया जाय। सरकार ने मेरी प्रार्थना स्वीकार की और मैंने अपने पिता को सब कुछ लिख भेजा। वे अवश्य ही मेरे आने का रास्ता देख रहे होंगे।

किसी तरह इधर-उधर से मैंने थोड़ा पैसा एकत्र किया और घर छोड़कर बाहर निकल पड़ी। रास्ते के कठिन होने की तो मैं कल्पना भी न कर सकती थी। मैंने ईश्वर पर भरोसा करके प्रस्थान किया था। किसी भी कठिनाई का सामना करने को तैयार हूँ।"

युवती की बात सुनकर माइकेल अवाक् हो गया। उस समय जहाज नदी के मध्य भाग में बड़ी तेजी से आगे बढ़ रहा था।

(६)

१९वीं जुलाई को जहाज ने पार्म बन्दर पर लंगर डाला। साइबेरिया के विशाल प्रदेश से अनेक लोग यहाँ आकर जहाज पर बैठते थे। जो लोग जमीन के रास्ते सवारियों पर बैठकर यहाँ आते वे अत्यन्त लम्बी यात्रा के कारण थककर लथपथ हो जाते थे। उनकी सवारियाँ भी जर्जर हो जाती थीं। यहाँ से साइबेरिया की ओर जानेवाले लोग ये सवारियाँ खरीद लेते और उनकी आवश्यक मरम्मत कराके उपयोग में लाते थे।

माइकेल ने पहले ही से सोच रखा था कि पार्म से आगे का प्रवास किस तरह करेंगे। एक गाड़ी खरीदकर और स्वयं उसका गाड़ीवान बनकर यात्रा करने की इच्छा थी, किन्तु उसकी यह इच्छा फलीभूत न हुई। सरकार के नये आदेश के अनुसार विदेशी लोग पहले ही से पार्म छोड़कर चले गये थे, इसलिए उसे वहाँ कोई टूटी हुई गाड़ी न दिखाई दी।

अब क्या किया जाय ? यह समस्या खड़ी हो गई ।

उस समय साइबेरिया में दो तरह की गाड़ियाँ चलती थीं । एक तरह की गाड़ी का नाम टेल्गा और दूसरी तरह की गाड़ी का नाम टेरेएटस था । टेल्गा गाड़ी के पहिये लकड़ी के पुराने ढंग के बने होते थे । वह अच्छी तरह खुली हुई और चौड़ी होती थी, किन्तु अधिक आराम की न थी । हाँ, उसकी बनावट सादी होती थी । इसलिए रास्ते में कहीं बिगड़ जाने पर मरम्मत कराने में कोई कठिनाई नहीं होती थी । टेरेएटस गाड़ी भी इसी तरह की थी । उसमें बैठने की खूब सुविधा थी । उसपर चमड़े की छाजन होने से बरसात में खूब राहत देने वाली होती थी, किन्तु यदि वह कहीं रास्ते में बिगड़ जाय तो मरम्मत करने में बड़ी कठिनाई होती थी । फिर भी रचना मजबूत होने के कारण यात्रियों को अधिक पसन्द पड़ती थी ।

अथक परिश्रम करके माइकेल ने एक टेरेएटस गाड़ी खोज निकाली । भाव करने में उसे काफी बकझक करनी पड़ी । अन्त में उसने उचित दाम देकर वह गाड़ी खरीद ली । इसके बाद पोस्टिंग-स्टेशन पर अपना परिचय-पत्र दिखाकर उसने तीन घोड़ों का भी प्रबन्ध कर लिया ।

रास्ते में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर दूसरे दो पोस्टिंग-स्टेशन भी थे । इन सब स्थानों पर उसने घोड़े और गाड़ीवान बदल दिये । माइकेल को जो गाड़ीवान मिले वे साइबेरिया के

निवासी थे। एक गाड़ीवान माइकेल और युवती की ओर जरा शंका भरी दृष्टि से देखने लगा। उन दोनों के पास कोई अधिक सामान न था। लम्बी अधिक यात्रा के कारण उनके शरीर थके हुए थे। पोशाक भी काफी फटी हालत में थी। गाड़ीवान ने यह माना कि ये लोग पैसे वाले ही होंगे। इसलिए वह अपना मुंह बिचकाकर मन में बड़-बड़ाने लगा।

उसने अपने घोड़े से कहा—'अरे! यह तो 'क्रो' है! 'क्रो' से पैसे की आशा कहाँ? छि…छिः…तुझे बहुत मार मारूँ तो भी इनसे छह कोपेक से अधिक पैसा मिलने की आशा नहीं है।'

उसे इस बात की चिन्ता न थी कि गाड़ी में बैठे हुए यात्री उसकी बात सुनते हैं या नहीं।

माइकेल उसकी बात सुनकर हँस पड़ा। वह बोला—"अरे नवाब के बेटे! 'क्रो' क्यों कहते हो? 'ईगल' कहो। हम 'ईगल' हैं और प्रतिमील का भाड़ा नव कोपेक देंगे। इसके बाद तुझे इनाम भी देंगे।

गाड़ीवान का हर्ष अपनी सीमा पार कर गया। उसने चाबुक को हवा में ऊँचा करके कहना आरंभ किया—"वाह! वाह! तब तो बहुत अच्छा। मेरे कहने का कोई खराब भावार्थ मत लेना।"

'क्रो' और 'ईगल' शब्द रूसी गाड़ीवानों के खास शब्द होते हैं। साधारण स्थिति के यात्रियों को वे 'क्रो' कहते

हैं और पैसेवालों के लिए 'ईंगल' शब्द का व्यवहार करते हैं।

माइकेल बोला—'नादिया ! विलम्ब मत कर ! जल्दी गाड़ी पर सवार हो जाना चाहिए।'

गाड़ीवान ने घोड़ों को खूब जोर से दौड़ाना शुरू किया। रास्ता ऊँचा-नीचा और अनजान था। घोड़े खूब तेजी से रास्ता काट रहे थे।

दिन सुहावना था और आकाश भी निर्मल था। कहीं भी बादल न दिखाई देता था, किन्तु वायु कुछ जोर से चल रही थी। क्षितिज पर बीच-बीच में बिजली की तेज चमक दिखाई देती थी। इस रास्ते पर कोई खास कठिनाई की संभावना नहीं थी, किन्तु माइकेल के जीवन में ऐसी यात्राएँ सामान्य बन चुकी थीं। इसीलिए उसने अनुमान किया कि इस समय स्वच्छ दिखाई देनेवाला आकाश थोड़ी देर में घनाच्छादित हो जायगा। और बरसात होने लगेगी।

गाड़ी पूरे वेग से दौड़ रही थी।

(१०)

२७वीं जुलाई को प्रातः का समय। पूर्व दिशा में यूराल पर्वत दिखाई दे रहा था। बर्फ के कारण पर्वत की चोटियाँ सुशोभित देख पड़ती थीं। यह पर्वत-माला यूरोप और एशिया की सीमा पर स्थित है। यद्यपि वह काफी दूर थी, किन्तु नजदीक दिखाई दे रही थी। माइकेल को ध्यान आया कि वहाँ सन्ध्या के पहले नहीं पहुँचा जा सकेगा।

काफी सबेरे से ही आकाश में बादल घिरने लगे थे। यही दशा सारे दिन रही। सन्ध्या होते ही बूंदा बांदी होने लगी। हवा का जोर परम प्रचण्ड था। ऐसे समय यात्री को पहाड़ के ऊपर नहीं जाना चाहिए, किन्तु माइकेल भला कहाँ माननेवाला था ? वह अकारण विलम्ब को पसन्द न करता था। अन्त में जब गाड़ी स्टेशन पर आई तो उस समय आकाश में जोर से गड़गड़ाहट होने लगी। गाड़ीवान सारी स्थिति समझ गया। माइकेल ने एक बार फिर आकाश की ओर देखा और फिर रास्ते की ओर देखकर बोला—"बहुत आगे एक गाड़ी दिखाई देती-सी प्रतीत होती है।"

गाड़ीवान ने कहा—"हाँ, टेल्गा गाड़ी मालूम होती है।"

"कितनी दूर है ?"

"लगभग एक घण्टे के रास्ते पर !"

"अच्छा, तो विलम्ब मत कर। जोर से गाड़ी चला। तुझे तीन गुना इनाम मिलेगा। समझा ! यदि तू कल सबेरे तक हमें एकाटेरेन स्टेशन तक पहुँचा देगा तो तुझे तीन गुना इनाम मिलेगा। तीन गुना···चलाओ गाड़ी·········चलाओ···।

रास्ता पहाड़ी था। सन्ध्या होने के पहले ही अन्धकार का साम्राज्य छा गया था। क्षितिज पर बादल अधिक दिखाई देने लगे थे। माइकेल इस बात को समझता था कि ऐसी ऋतु में आगे बढ़ना खतरे से खाली नहीं है, किन्तु विवश होकर जाना पड़ रहा था। उसके आगे एक गाड़ी जा रही

थी। वह भी किसी महत्त्वपूर्ण काम से जा रही होगी। इसी कारण वह गाड़ी बरसात और आँधी-तूफान की चिन्ता छोड़कर तेजी से पहाड़ की ओर जानी चाहिए।

रात के बारह बजे जोर से बिजली चमकने लगी। मानो किसी महान् ज्वाला से आकाश का विशाल वक्षस्थल प्रज्वलित हो रहा हो। बिजली की चमक में दिखाई देनेवाली पहाड़ की विकराल घाटियाँ किसी हिंसक पशु की भाँति अपना विशाल जबड़ा फाड़कर खड़ी-सी प्रतीत होती थीं। पुल पार करते समय गाड़ी ढाल पर न चढ़ सकी। आँधी, बरसात और पहाड़ी रास्ते के कारण घोड़े थककर लथपथ हो गये।

माइकेल इस विलम्ब को सहन न कर सका। उसने कुछ गर्म होकर गाड़ीवान से पूछा—"हमको पहाड़ पर पहुँचने में कितनी देर लगेगी?"

गाड़ीवान ने कहा—"रात को अन्तिम प्रहर के पहले नहीं।"

इसी समय कड़कड़ की आवाज सुनाई दी। घोड़े भय से आगे बढ़ने का साहस नहीं कर रहे थे। उनमें गाड़ी को खींचने की शक्ति शेष न थी। गाड़ीवान ने घोड़ों को चलाने के लिए चाबुक मारा, किन्तु वे छलाँग मारकर दूसरी ओर जा खड़े हुए। गाड़ीवान बुरी तरह नीचे जा गिरा, माइकेल तुरन्त गाड़ी से नीचे उतर पड़ा। गाड़ीवान को खास चोट नहीं लगी थी।

आँधी धीरे-धीरे बढ़ रही थी। जोर की आवाज के साथ वृक्ष की डालियाँ जमीन पर गिरने लगीं। पहाड़ की घाटियों के शिखर से पत्थर लुढ़कने लगे। प्रकृति का ताण्डव-नृत्य हो रहा था।

माइकेल ने फिर गर्म होकर कहा—"यहाँ खड़े रहने से काम नहीं चलेगा।"

गाड़ीवान भय से हतबुद्धि बन गया था। वह धीमी आवाज से बोला—"किसी भी स्थान पर खड़ा होना संभव न था इसलिए यहाँ खड़ा हुआ हूँ। यदि पवन का प्रचण्ड झोंका हमें पहाड़ से नीचे लुढ़का देगा तो फिर हम इस आँधी का अनुभव नहीं कर सकेंगे।"

माइकेल गरज उठा—"कायर कहीं का! चल! घोड़े को जल्दी गाड़ी से जोड़। मैं सब सँभाल लूँगा!"

इतने में पवन का एक प्रचण्ड झोंका आया। दोनों ने उस झोंके से बचने के लिए अपने-अपने माथे न झुकाये होते तो झोंका उन्हें दूर तक घसीट ले गया होता। वे लोग घोड़े की लगाम हाथ में पकड़े रहकर भी उन्हें काबू में न रख सके। घोड़े आगे बढ़ने के बदले धीरे-धीरे पीछे हट रहे थे। पीछे की ओर एक बड़ा गड्ढा था। वे यदि थोड़ी देर इसी प्रकार पीछे खिसके होते तो अवश्य गड्ढे में लुढ़क पड़े होते। सौभाग्य से गाड़ी एक पाइन के पेड़ से टकराई और वहीं रुक गई। इस प्रकार माइकेल वगैरह एक महान् आपत्ति से बच गये।

माइकेल बोला—"नादिया ! घबड़ाने की आवश्यकता नहीं है। हिम्मत कर ! डरने की बात छोड़ दे।"

"मैं कभी डरने वाली नहीं हूँ।" नादिया ने हिम्मत से उत्तर दिया।

उसकी आवाज में भय की थोड़ी मात्रा भी दिखाई न देती थी। फिर भी आपत्ति ने इतने से ही अपना काम समाप्त न किया। रात्रि का अंधकार अधिकाधिक गाढ़ा बन रहा था। उसने बिजली के प्रकाश में देखा कि पहाड़ का एक शृंग टूटकर उसकी ओर लुढ़का आ रहा है। थोड़ी ही देर में वह माइकेल के निकट होकर फिर जोर से नीचे की खाईं की ओर सरकने लगा।"

यह देखकर नादिया बोल उठी—"भैया ! भैया !"

माइकेल ने कहा—"नादिया ! डरो मत। भगवान् ने मुझे बचा लिया।"

"आपको चोट तो नहीं लगी ?"

"नहीं। भगवान् हमारी मदद करता है।"

नादिया कुछ बोली नहीं। वह मन में बड़बड़ाने लगी—"हाँ, भगवान् मेरी मदद करता है। उसके बिना भला इस व्यक्ति से भेंट कैसे हो सकती थी।"

माइकेल और गाड़ीवान खूब कठिनाई से घोड़ों को ढकेल कर एक पथरीले रास्ते पर ले आये। वह रास्ता उत्तर दिशा की ओर जा रहा था। उस पर एक बड़े पहाड़ का बरफ का शृंग आड़ा पड़ा था।

पर्वत के शिखर पर स्थित देवदार के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष वन की प्रचण्ड आँधी से इधर-उधर हिल रहे थे। उसकी आवाज इन लोगों को स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

ये लोग जिस रास्ते पर थे वहाँ एक गुफा थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यहाँ कोई व्यक्ति खनिज पदार्थों की खोज में आया होगा और अपने रहने के लिए यह गुफा बनाई होगी। माइकेल ने नादिया को गुफा में आराम लेने के लिए कहा।

उस समय उन्हें एक दूसरा अद्‌भुत दृश्य दिखाई दिया। अचानक आकाश प्रकाशित हो उठा। मानो एकाएक बादलों का आवरण हट गया हो। धीरे-धीरे सूर्य का दर्शन होने लगा। उसी समय कान के परदे को फाड़नेवाली एक वज्र-ध्वनि भी सुनाई दी। मानो गन्धक के प्रचण्ड धुएँ से पवन जम गया हो। देवदारु के ऊपर के भाग में एकाएक आग-सी प्रज्वलित हो उठी।

वज्रपात की गंभीर आवाज पहाड़ के अन्य शिखरों से टकराकर कुछ समय में विलीन हो गई। माइकेल अर्थ-भरी दृष्टि से आग देखता रहा। इतने में नादिया ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसने चंचल स्वर में कहा—"अरे सुनो! सुनो! कोई व्यक्ति विपत्ति में फँसा हुआ प्रतीत होता है और ऐसा ज्ञात होता है कि वह सहायता के लिए चिल्ला रहा है।"

(११)

माइकेल ध्यान से सुनने लगा। गाड़ीवान ने भी ध्यान से सुना और थोड़ी देर बाद बोला—"वृथा आशा! इस समय हम लोग किसी पर उपकार करने की स्थिति में नहीं हैं।"

माइकेल ने कहा—"क्यों? यदि हम लोग किसी ऐसी विपत्ति में आ गये होते तो वे क्या हमको बचाने नहीं आते?"

"ओह! घोड़े इतना थक गये हैं कि एक कदम आगे नहीं चलेंगे।" गाड़ीवान बोला।

माइकेल ने कहा—"घोड़ों की कोई जरूरत नहीं है। मैं वहाँ पैदल पहुँच जाऊँगा।"

"मैं भी आपके साथ आऊँगी।" नादिया बोली।

"नहीं, तुझे मेरे साथ आने की आवश्यकता नहीं है। तू यहीं रह। गाड़ीवान भी तेरे साथ रहेगा।"

"अच्छा भैया! मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगी।"

"किन्तु एक बात का ध्यान रखना। तू यहाँ से कहीं इधर उधर मत जाना।"

"आप इस विषय में चिन्ता मत करें। मैं आपकी प्रतीक्षा करती हुई यहीं पड़ी रहूँगी।"

माइकेल ने वहाँ से प्रस्थान किया। उसके चले जाने पर गाड़ीवान ने नादिया की ओर देखकर कहा—"तेरा भाई यह दुस्साहस कर रहा है।"

नादिया ने शान्त स्वर से उत्तर दिया—"नहीं। वे दुस्साहस नहीं करते हैं।"

माइकेल ने विचार किया—"जो लोग आगे आगे टेलगा-गाड़ी में जा रहे थे वे ही किसी संकट में फँसे होंगे!"

वह कुछ आगे बढ़ा ही था कि किसी के वार्तालाप की आहट कान में पड़ी।

एक व्यक्ति बोला—"गाड़ीवान कितना मूर्ख है? इन लोगों की बुद्धि ही कितनी होती है?"

दूसरे व्यक्ति ने कहा—"अगले स्टेशन पर पहुँचने में देर होगी! तब भी देखना। वहाँ पहुँचने पर तेरी मूर्खता की कैसी सजा की जाती है। चाबुक से तेरी चमड़ी उधेड़ दी जायगी।"

पहले व्यक्ति ने फिर कहा—"मानो नवाब का नाती हो। तुझे कुछ सुनाई नहीं देता। क्या तेरे मन में घमंड हो गया है?"

माइकेल वास्तविक स्थिति समझ गया। वे लोग अन्धकार में उसे गाड़ीवान समझ रहे थे।

फिर वह व्यक्ति बोला—"इस देश की गाड़ी का मानो यह दस्तूर बन गया है!"

दूसरा बोला—"यदि टेलगा गाड़ी होती तो… !"

"और गाड़ीवान भी कैसा खराब…वह घोड़े को हाँकते ही जाता है। उसे पीछे की ओर देखने—समझने की चिन्ता

ही नहीं है और एक बार मुड़कर पीछे देखने की परवाह भी नहीं करता।"

इतने में एक बार बिजली चमकी। माइकेल ने देखा कि यहाँ से लगभग पन्द्रह-बीस फुट की दूरी पर दो व्यक्ति गाड़ी के पहिये के नीचे सटकर बैठे हैं और बरसात में भीग रहे हैं। गाड़ी के दोनों पहिये कीचड़ में फँस गये थे।

माइकेल ने उन दोनों को पहचान लिया। वे दोनों संवाददाता थे। उसने उन्हें जहाज पर यात्रा करते हुए था देखा।

माइकेल को देखते ही फ्रेंच संवाददाता आनन्द से उछल पड़ा। वह बोला—"नमस्ते! नमस्ते! आप यहाँ कहाँ? आइये! आइये! आपको मैं अपने मित्र हेरी का परिचय कराऊँ।"

हेरी ने सिर झुका कर नमस्कार किया और कहा—ओह!' आपही' मिस्टर...।

माइकेल बोला—"मेरा नाम निकोलस कार्पानिफ है। क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप यहाँ बैठ-बैठे किस पर गुस्सा निकाल रहे थे?"

"क्या कहें? निकोलस!" जोलिवट ने कहना आरंभ किया:—"आप ही बताइये कि यहाँ के गाड़ीवान कितने हरामखोर हैं। हम लोग गाड़ी के पिछले भाग में बैठे रह गये। उसके आगे का भाग अलग हो गया।। घोड़ा, गाड़ीवान

और आगे का भाग चले गये और हम लोग यहाँ पिछले भाग में पड़े रह गये। अरे, उस गाड़ीवान ने मुड़कर देखने का कष्ट भी न उठाया। यह तो एंजिन चले जाने और डिब्बे पड़े रहने जैसी बात हुई। कहिये, इस पर हम गाड़ीवान पर नाराज न हों तो किस पर हों?"

"यह गाड़ीवान का मजाक है! साफ मजाक है!" हेरी ने कहा।

"साफ-साफ मजाक है मित्रवर! इससे गाड़ीवान सच-मुच मूर्ख जैसा प्रतीत होता है।"

कुछ देर बाद माइकेल बोला—"इस प्रकार बैठे रहने से क्या लाभ? चलिये, वहाँ मेरी गाड़ी खड़ी है। वर्षा के कुछ शान्त पड़ते ही हम एक घोड़ा आपको दे देंगे।"

"वाह! आपका प्रस्ताव बड़ा सुन्दर है। इसके बदले आपको धन्यवाद देना उचित है।" जोलिवेट बोला।

माइकेल ने कहा—"हमारी टेरेन्ट्स गाड़ी में जगह नहीं है। मेरे साथ मेरी बहन भी है। यदि वह मेरे साथ न होती तो मैं आपको अवश्य अपनी गाड़ी में बैठा लेता।"

हेरी ने कहा—"हमें आपका प्रस्ताव स्वीकार है। लेकिन, देखिए, हमारा गाड़ीवान कितना विचित्र मनुष्य है!"

माइकेल ने कहा—"अब उसे कोसने से क्या लाभ है? जो लोग इस रास्ते पर टेल्गा गाड़ी में यात्रा करते हैं उनकी यही दशा होती है।"

"लेकिन वह उल्लू का बच्चा वापस क्यों नहीं आया ? उस बदतमीज को खबर नहीं होगी कि हम लोग यहाँ पीछे छूट गये हैं।"

"नहीं, उसे खबर नहीं होगी।" माइकेल ने कहा।

"आप यह क्या कह रहे हैं ? गाड़ी का पिछला भाग अलग पड़ जाय और यह बात उसके ध्यान में भी न हो ?"

माइकेल ने हँसकर उत्तर दिया—"हाँ-हाँ, सचमुच उसे इस बात की खबर नहीं होगी। वह बेचारा सीधा सादा आदमी होगा। अवश्य ही उसे खबर नहीं होगी कि गाड़ी का पिछला भाग इस प्रकार अलग हो गया है।"

जोलिवेट कुछ खीझकर बोला—"मित्रवर, यह गजब की बात कही जायगी। यह सब कैसा तमाशा है ? मैं कैसा व्यग्र हो रहा हूँ।"

माइकेल ने फिर हँसकर उत्तर दिया—"खैर, छोड़िये। जो होना था वह हो गया। चलिये, अब मेरे साथ चलिये। मेरी गाड़ी वहाँ खड़ी है।"

दोनों संवाददाता माइकेल के साथ चल पड़े।

जोलिवेट ने फिर अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा—"मित्र कोर्पानिफ ! सचमुच आपने हमें एक महान् संकट से बचा लिया।"

माइकेल ने उत्तर दिया—"ऐसे समय मनुष्य को जो कुछ करना चाहिए वही मैंने किया है। उससे अधिक मैंने

कुछ नहीं किया है। यात्री यदि यात्री के लिए इतना न करे तो यात्रा त्रासदायक बन जाय।"

ये लोग अपने से कुछ पूछ न सके, इस आशय से माइ-केल ने कहा—"आप कहाँ जाते हैं? मैं तो ओम्स्क नगर जा रहा हूँ।"

जोलिवेट बोला—"हम लोग ऐसे स्थान पर जा रहे हैं जहाँ सदा आपत्तियों की वर्षा होती है, जहाँ पर ताजे समाचारों का अकाल नहीं होता।"

माइकेल जरा विचार में पड़ा। फिर उसने कहा—"तब तो आप ओम्स्क नगर को ही जाते प्रतीत होते हैं।"

जोलिवेट ने उत्तर दिया—"अभी से इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता। इतना होने पर भी हम लोग ईशिम तक तो निस्सन्देह चलने वाले हैं। इसके बाद जैसी परिस्थिति हो।"

वे अन्धकार में तेजी से आगे बढ़ रहे थे। इस प्रकार वे थोड़ी ही दूर गये होंगे कि इतने में उन्हें पिस्तौल की एक आवाज सुनाई दी। साथ ही उन्हें एक जंगली पशु की भी आवाज सुनाई दी।

"उफ्!" माइकेल चिढ़ उठा और बोला—"नादिया, नादिया!"

उसने अपनी बरछी हाथ में ली और उस गुफा की ओर

दौड़ पड़ा जहाँ वह नादिया को आराम लेने के लिए छोड़ आया था।

जले हुए पाइन के वन से धुयें के बादल ऊँचे चढ़ रहे थे। सचमुच वह स्थान भयंकर दिखाई दे रहा था।

माइकेल ने अन्धकार में दृष्टि गड़ाई—एक जंगली पशु उसकी ओर आ रहा था। वह भीषणकाय प्राणी था। माइकेल ने अनुमान किया कि वह कदाचित् आँधी और तूफान से बचने के लिए अपनी गुफा में आश्रय लेने आ रहा होगा।

उसी गुफा के अन्दर नादिया आराम कर रही थी। माइकेल को इसका पता न था कि यह गुफा उस वन्य जीव का निवास था।

उस पशु को देखकर घोड़े भी चौंक उठते थे। उसमें से दो घोड़े तो लगाम तोड़कर भाग गये। बेचारा गाड़ीवान पहले तो पाषाण-मूर्त्ति की भाँति चुपचाप खड़ा रहा, किन्तु जब उसे दो घोड़ों के भागने की खबर पड़ी तो तुरन्त ही नादिया को छोड़कर अपने घोड़े के पीछे दौड़ा।

नादिया सर्वथा असहाय बन गई थी। उसके सामने हिंसक पशु विशाल जबड़ा फाड़कर खड़ा था। इस स्थिति में भी नादिया ने धैर्य हाथ से न जाने दिया था। इसीलिए वह पशु गाड़ी के साथ खड़े हुए घोड़े की तरफ जाकर खड़ा हो गया।

नादिया तुरन्त तेजी से गुफा के बाहर निकली। वह गाड़ी

के पास आकर खड़ी रही। उसने एक क्षण का विलम्ब किये बिना ही माइकेल की पिस्तौल जंगली जानवर पर छोड़ी। निशाना ठीक सध गया।

चोट लगते ही पशु ने सिर घुमाया। उसके सामने नादिया खड़ी थी। नादिया को देखते ही वह भयंकर रूप से गुर्रा उठा। वह सरक कर गाड़ी के दूसरे सिरे पर छिप गई। पशु भी अपना पंजा ऊपर उठाकर उधर झपटा। नादिया ने तत्काल गोली दाग दी।

ठीक उसी समय माइकेल भी पशु के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने एक ही क्षण में अपनी बरछी की चोट से पशु की छाती छेद डाली। पशु जोर से गुर्राया और दूसरे ही क्षण धरती पर गिरकर मर गया।

माइकेल ने चिन्तायुक्त स्वर से नादिया से कहा—"बहन! तुझे चोट लगी है?"

नादिया ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया—'नहीं।"

इतने ही में दोनों संवाददाता वहाँ आ पहुँचे। वे माइकेल का अद्‌भुत साहस देखकर दंग रह गये।

जोलिवेट बोला—"वाह रे वाह! एक साधारण व्यापारी का यह साहस! यह वीरता! गजब की हिम्मत! एक क्षण में इसने कितनी वीरता से उस हिंसक प्राणी को मार डाला! आश्चर्य!"

हेरी तो माइकेल को सिर से पैर तक देखने लगा।

इसके बाद उसने दो कदम आगे बढ़कर नादिया को नमस्कार किया। नादिया ने भी प्रति नमस्कार किया।

जोलिवेट ने माइकेल की ओर देखकर कहा—"जैसा भाई वैसी बहन ! यदि मैं हिंसक जीव होता तो उस प्राणी की तरह यहाँ आने का संकट मोल न लेता। यहाँ जान बूझकर मरने के लिए कौन आता ?"

इतने ही में वह गाड़ीवान अपने भागे हुए दोनों घोड़े पकड़ कर वापस आया और मरे हुए पशु को देखकर चकित हो उठा। इसके बाद उसने वहाँ आये हुए व्यक्तियों पर दृष्टि डाली और अपने काम में लग गया।

माइकेल ने गाड़ीवान से कहा—"हमें इन लोगों की गाड़ी खींच लाने को भी एक घोड़ा देना है।"

गाड़ीवान गंभीर स्वर में बोला—"बहुत अच्छा ! किन्तु गाड़ियाँ दो हैं। इसका विचार करना पड़ेगा।"

जोलिवेट गाड़ीवान के कहने का मतलब समझकर बोला—

"तुझे इसकी चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। दूना भाड़ा मिलेगा।"

गाड़ीवान का हृदय आनन्द से भर गया। खूब प्रसन्न हो कर वह अपने घोड़े को चाबुक मारने लगा और बोला—"अरे मेरे पक्षिराज ! तुम्हारा जोड़ा सारे संसार में नहीं मिलेगा।"

इस समय रात बीतने पर थी। पर्वत के शिखर पर भोर

का मंद प्रकाश दिखाई दे रहा था। अन्धकार का बल कम हो रहा था।

वे उस टूटी हुई टेल्गा गाड़ी के पास आये। उन्होंने देखा कि गाड़ी के दोनों पहिये जमीन में धँस गये थे। गाड़ी-वान ने परिश्रम करके उन्हें बाहर निकाला और उसके साथ घोड़ा जोड़ दिया। छः घण्टे बाद वे एकातरेन्वर्ग स्टेशन पर पहुँच गये। रास्ते में कोई उल्लेखनीय घटना नहीं हुई।

उन्होंने एकातरेन्वर्ग पहुँचकर देखा कि एक व्यक्ति बड़ी अधीरता से उनका रास्ता देख रहा था। यह वही गाड़ीवान था, जिसने दोनों संवाददाताओं को आधे रास्ते पर छोड़ दिया था। उसके मन में इस बात का न तो सहज दुःख था, न ग्लानि या संकोच था। उसके लिए यह बात जरा भी अस्वाभाविक न थी। वह उल्टे हँसते-हँसते उन महानु-भावों के पास आया और बोला—"क्यों महानुभाव! कैसे हो?"

यह देखकर हेरी तो उबल पड़ा। यदि गाड़ीवान पीछे न हटा होता तो उसके मुँह पर एक तमाचा जरूर जड़ दिये होता।

जोलिवेट खिलखिला कर हँस पड़ा। उसने ऐसा मुक्त हास्य जीवन में कदाचित् पहली ही बार हँसा होगा। वह बोला—"अच्छा, अच्छा! इस आदमी का इसमें कोई दोष नहीं है। हमीं लोगों का दोष है कि इसके पीछे नहीं आये। यह तो बेचारा बिल्कुल निर्दोष है।"

उसने अपनी पाकिट से भाड़े का पैसा निकाला और गाड़ीवान के हाथ पर रखते हुए बोला—"लो प्रिय बन्धु ! अपनी की गई सेवा का बदला लो ! मैं जो कुछ दे रहा हूँ वह तुम्हारी मेहनत के लिए पर्याप्त है। इससे अधिक यदि तुझे न मिल सके तो इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है।"

जोलिवेट का यह व्यवहार देखकर हेरी मन में और जल भुन गया। वह कठोर शब्दों में जोलिवेट को फटकारते हुए बोला कि ऐसे गाड़ीवान पर तो मुकदमा चलाना चाहिए।

जोलिवेट ने कहा—'मुकदमा ! और ऐसी स्थिति में ! मित्रवर्य, यह बिल्कुल असंभव है। आप उसपर मुकदमा चलायेंगे तो और भी अनेक झंझट खड़े होंगे। हमारे पास इतना समय ही कहाँ है ? क्या आपको उस धाय का किस्सा नहीं मालूम ?'

"नहीं।"

"तो सुनिये। मुकदमा इस प्रकार का था कि उसने एक बच्चे को बारह महीने तक दूध पिलाया और उसे बड़ा किया, किन्तु इसके बदले उसे कुछ पैसा नहीं मिला।"

"फिर क्या हुआ ??"

"किन्तु अन्त में उसे इसकी कीमत मिली। मुकदमे में उसकी जीत हुई, किन्तु किस समय ?"

"हाँ-हाँ बताओ, किस समय ?"

"जिस समय अदालत ने अपना फैसला सुनाया उस

समय बारह महीने का वह बालक रूस का एक कर्नल अथवा एक बड़ा सेनापति बन चुका था।"

यह सुनकर हेरी हँसी न रोक सका।

जोलिवेट ने अपनी पाकेट से एक डायरी निकाली और उसमें लिखा—"टेल्गा—रूस की गाड़ी है। जब वह चलती है तब उसके चार पहिये होते हैं, किन्तु जब वह अपने अन्तिम पड़ाव पर पहुँचती है तब उसके दो ही पहिये होते हैं।"

इतना लिखकर उसने डायरी पाकिट में डाल ली और बोला—"टेल्गा गाड़ी की परिभाषा फ्रांस की भाषा में और ही रंग लायेगी।"

सबके सब हँस पड़े।

(१२)

एकातरेन्वर्ग नगर में जोलिवेट और हेरी ने अपनी सवारी बदल दी। इस बार उन्होंने टेरेन्ट्स गाड़ी ली। अर्द्ध चन्द्राकार गाड़ी के दोनों पहिये, जो वे इस नगर तक ले आये थे, उससे बदल लिये। ऐसा करने से उन्हें मन में कोई दुःख नहीं हुआ। माइकेल की गाड़ी इतनी लम्बी और कुढंगी यात्रा करने पर भी अच्छी हालत में थी। घोड़े थक गये थे इसलिए उन्हें बदल लिया। उसका विचार अपनी यात्रा जल्दी पूरी करने का था। इसलिए वह योग्य प्रबन्ध करने में थोड़ा भी विलम्ब नहीं करता था।

दोपहर का समय था। धूप खूब तेज थी। दोनों गाड़ियों

ने एक साथ नगर से प्रस्थान किया। दोनों गाड़ियाँ पूरे वेग से विशाल मार्ग पर दौड़ रही थीं। आकाश में केवल इधर-उधर मेघ खण्ड दिखाई देने से धूप की तीव्रता कुछ कम प्रतीत होती थी।

२३वीं जुलाई को दोनों गाड़ियाँ समान वेग से दौड़ रही थीं। ईशिम नगर अब कोई बहुत दूर न था। उस समय माइकेल ने देखा कि उसके आगे आगे काफी दूरी पर एक गाड़ी जा रही है। उसे प्रतीत हुआ कि वह टेल्गा या टेरेन्ट्स गाड़ी नहीं है। वह साधारण पोस्ट बर्लिन गाड़ी प्रतीत हुई। उसकी गति बहुत तीव्र न थी। माइकेल को इस बात का ध्यान आया कि अब घोड़े खूब थक गये हैं। वे केवल चाबुक की मार से ही रास्ता काट रहे हैं। इसलिए वह चिन्ता में पड़ गया। उसने विचार किया कि यदि हमारे पास अच्छे घोड़े होते तो हम अवश्य ही उस गाड़ी से पहले अगले स्टेशन पर पहुँच सकते। उसने यह बात गाड़ीवान को बताई।

इनाम पाने की लालच से गाड़ीवान ने टेरेन्ट्स को अधिक जोर से चलाना आरंभ किया। थोड़ी ही देर में वे लोग उस गाड़ी के बिलकुल समीप पहुँच गये। इन लोगों की गाड़ी उस गाड़ी को पार करके ज्योंही आगे बढ़ी त्योंही उस गाड़ी का दरवाजा खुला, किन्तु माइकेल को उधर देखने का अवकाश न था।

ठीक इसी समय उसके कान पर एक गंभीर आदेश टकराया—"ठहरो! आगे मत जाओ!"

किन्तु माइकेल ने इस आदेश की परवाह न की। उसने गाड़ीवान को गाड़ी अधिक तेजी से चलाने की आज्ञा दी। र्बालिन गाड़ी पीछे रह गई।

अब उन दोनों गाड़ियों के बीच दौड़ने की स्पर्धा लग गई। माइकेल और दोनों संवाददाताओं की गाड़ियाँ आगे जाती देखकर मानो उस र्बालिन गाड़ी के घोड़ों में बहादुरी का संचार हो उठा, नवीन शक्ति आ गई। तीनों गाड़ियाँ धूल उड़ाने लगीं। बीच-बीच में गाड़ीवानों द्वारा घोड़ों को फटकारने की बातें सुनाई पड़ती रहीं। र्बालिन गाड़ी फिर भी उन लोगों की गाड़ी की बराबरी न कर सकी।

रात को आठ बजे दोनों टेरेन्ट्स गाड़ियाँ ईशिम स्टेशन पर पहुँच आईं। वहाँ उन्हें समाचार मिला कि विद्रोह प्रचण्ड हो उठा है। विद्रोही अब बहुत दूर नहीं हैं। इसीलिए पहले से ही सरकारी दफ्तर टोबोल्स्क नगर में ले जाया गया है। स्टेशन पर कोई सरकारी दल न था।

माइकेल ने घोड़ा बदलने का प्रयत्न किया। उस समय र्बालिन गाड़ी बहुत पीछे छूट गई थी। उस स्टेशन पर केवल तीन ही घोड़े दिखाई दे रहे थे। स्टेशन के कर्मचारियों ने तुरन्त उन घोड़ों को दिखा दिया।

जोलिवेट और हेरी ने पहले से ही इस नगर में रहने का विचार कर लिया था। इसलिए उन्हें घोड़े की आवश्यकता न थी। उन्होंने अपनी गाड़ी को एक ओर खड़ा करने का प्रबन्ध किया। दस मिनट में सब ठीक हो गया।

माइकेल ने संवाददाताओं की ओर देखकर कहा—"हम लोग अब आपसे विदा लेते हैं।"

जोलिवेट बोला—"क्या कहा? क्या एक घण्टे भी आराम न करेंगे?"

"नहीं। हमारी इच्छा आराम करने की नहीं है। वह गाड़ी जब तक चलती चलती यहाँ पहुँचे तब तक हमें यहाँ से प्रस्थान करना है।" माइकेल बोला।

"वे लोग यहाँ आवें और उन्हें घोड़ा न मिले तो वे आपसे लड़ेंगे, इसी डर से क्या जल्दी प्रस्थान करना चाहते हैं?"

"नहीं, ऐसा नहीं है। मुझे ऐसा व्यर्थ झगड़ा पसन्द नहीं।"

जोलिवेट बोला—"अच्छा। आपने हम लोगों के लिए जो कष्ट उठाया है उसके लिए हम आपको लाख-लाख धन्यवाद देते हैं।"

अब तक चुपचाप बैठा हुआ हेरी भी बोल उठा—"कदाचित् हम लोग फिर ओम्स्क नगर में मिलें!"

माइकेल ने कहा—"संभव है।"

"मेरी इच्छा है कि आपकी यात्रा निर्विघ्न पूरी हो। हाँ, एक दूसरी बात भी याद हो आई—भगवान् न करे, आपकी गाड़ी हमारी दो गाड़ियों की दशा प्राप्त करे।"

इतना कहकर जोलिवेट ने माइकेल के साथ हाथ मिलाया। हेरी भी कुछ आगे बढ़ा। उसी समय पीछे की ओर से गाड़ी

की खड़खड़ाहट सुनाई दी। उसने मुँह घुमाकर पीछे देखा कि एक व्यक्ति खूब जोर से दरवाजा खोल कर नीचे उतर आया।

उस व्यक्ति की उम्र लगभग चालीस वर्ष थी। शरीर सुगठित और सुडौल था। कन्धे मजबूत और विशाल थे। माथे पर धुँघराले बाल थे। चेहरे पर दाढ़ी के लम्बे बाल फैले थे। उसने सामान्य सैनिक की पोशाक पहन रक्खी थी। उसकी कमर पर एक तलवार लटक रही थी और हाथ में एक लंबा हंटर था।

वह आदेश देने की रीति से बोला—"दगाबाज!"

घोड़े का मालिक बोला—"आपकी गाड़ी में काम आने लायक घोड़ा इस समय नहीं है।"

"यह मैं कुछ नहीं जानता। मुझे तो इसी समय घोड़ा चाहिए।"

"यह संभव नहीं है।"

"अभी मैंने टेरेन्ट्स गाड़ी में जुते हुए जो दो घोड़े देखे वे कहाँ हैं?"

पोस्ट मास्टर माइकेल की ओर देखकर बोला—"इन भद्र पुरुष ने पहले से ही वे घोड़े ले लिये हैं।"

उस व्यक्ति ने कठोर स्वर में कहा—"उन घोड़ों को ले आओ।"

घोड़े का मालिक इसका कुछ जवाब न दे सका। माइ-केल आगे आकर बोला—"ये घोड़े मुझे दिये जा चुके हैं।"

"इससे क्या हो गया ? घोड़े की मुझे भी आवश्यकता है।"

इसके बाद वह व्यक्ति घोड़े के मालिक की ओर देखकर कहने लगा—"देखो ! वे ही घोड़े जोतने हैं। मैं एक क्षण का विलम्ब सहने को तैयार नहीं हूँ।"

यह सुनते ही माइकेल क्रोध से लाल हो उठा, किन्तु बड़े प्रयत्न से उसने अपने क्रोध पर संयम किया। उसने कहा—"मैं भी एक क्षण का विलम्ब सहन करने को तैयार नहीं हूँ।"

इस समय नादिया एक ओर शान्त चित्त खड़ी थी और इन बातों को सुन-सुनकर मन में व्यग्र हो रही थी। वह इस दुःखजनक घटना के जल्द समाप्त होने की कामना कर रही थी।

"देर क्यों हो रही है ?" इतना कहकर उस व्यक्ति ने घोड़े वाले को सम्बोधन किया—"मुँह फाड़कर क्या देख रहे हो ? मेरी गाड़ी में अभी घोड़ा जोड़ो। देर करोगे तो उसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। मेरी बात सुनो !"

यह व्यक्ति किसी राजा-महाराजा की तरह सत्तापूर्ण स्वर में बात कर रहा था। इसके एक-एक वाक्य में आदेश का अवश्य पालन करने का अर्थ निहित था।

घोड़े वाला दुबिधा में पड़ गया। किसका कहना माने ? विवश होकर उसने माइकेल की ओर देखा। उसके मन में

यह था कि यह व्यक्ति ही उन्हें मुँह तोड़ उत्तर दे सकता है।

माइकेल कुछ देर चुप रहा। वह सरकारी परिचय-पत्र दिखाकर घोड़ा ले सकता था, किन्तु वह अपना असल नाम छिपाने के कारण ऐसा साहस न कर सका। उसने सोचा... घोड़ा न मिले तो न सही, विलम्ब हो जाय तो चिन्ता नहीं, किन्तु जो काम लेकर निकल पड़ा हूँ उसमें किसी प्रकार क्षति न होनी चाहिए।

अब हेरी और जोलिवेट भी माइकेल की सहायता के लिए आ गये। उन्होंने देखा कि अपमानजनक व्यवहार करने पर भी माइकेल के मुख पर उस व्यक्ति के प्रति क्रोध नहीं दिखाई देता।

माइकेल ने एक गंभीर बुद्धिमान् वणिक् की तरह उस व्यक्ति को उत्तर दिया—"घोड़े तो मेरी गाड़ी में जुते हुए हैं। इसलिए उन पर मेरा अधिकार है।"

वह व्यक्ति माइकेल का उत्तर सहन न कर सका और तुरन्त आगे बढ़कर अपने भारी हाथ का पंजा माइकेल के कन्धे पर रखते हुए कठोर शब्दों में बोला—"तेरी ऐसी हिम्मत ! तू मुझे घोड़ा नहीं देना चाहता ?"

"हाँ, मैं घोड़ा नहीं देना चाहता।" माइकेल ने दृढ़ स्वर में कहा।

"अच्छी बात है। अब तुझे खबर पड़ेगी कि घोड़ा किस को मिलता है ? मैं तुझे इस प्रकार नहीं छोड़ने वाला हूँ।"

इतना कहकर उस व्यक्ति ने झट अपनी तलवार खींच ली। उसी समय नादिया आकर माइकेल के सामने खड़ी हो गई। हेरी और जोलिवेट भी आकर बीच में खड़े हो गये।

माइकेल ने उत्तर दिया—"मैं लड़ना नहीं चाहता।"

इससे वह व्यक्ति और क्रोधित हो उठा और बोला—"क्या तू नहीं लड़ेगा ?"

'ना' सुनकर वह व्यक्ति गरज उठा—"क्या तू नहीं लड़ेगा ?"

इतना कहकर बिना किसी के रोके ही उसने माइकेल को एक हंटर मार दिया।

इस अपमान से माइकेल का चेहरा लाल हो गया। उसकी एक एक रग क्रोध से फूल उठी। और उसके मन में आया कि इस अधम व्यक्ति को गर्दन दबाकर अभी मार डालूँ, फिर भी उसने किसी आंतर-शक्ति से क्रोध को दबा लिया। फिर उसने सोचा कि इसके साथ द्वन्द्व युद्ध करूँ ! किन्तु इससे मेरे कर्तव्य में बहुत बड़ी रुकावट पैदा होगी। इससे तो यह उत्तम है कि मैं दो-चार घण्टे बाद ही चला जाऊँ। इतने घोर अपमान का सहन करना भी बहुत कठिन काम था।

उस व्यक्ति ने पुनः अपनी पाशवी मनोवृत्ति को व्यक्त करने वाली वाणी में कहा—"भीरु ! नामर्द ! कायर !"

इतना सुनकर भी माइकेल स्थिर रहा और हँसा। उसने उस व्यक्ति के चेहरे पर अपनी निगाहें गड़ा दीं और अन्त में दृढ़ स्वर से बोला—"मैं लड़ना नहीं चाहता।"

"तो अब घोड़े मेरे हैं।" ऐसा कहकर वह व्यक्ति वहाँ से चल पड़ा। घोड़े वाला भी डरता डरता उसके पीछे गया।

हेरी और जोलिवेट विस्मित नेत्रों से माइकेल का मुँह देखने लगे। माइकेल एक तगड़ा जवान था। उसका शरीर कसा हुआ था और शारीरिक शक्ति अद्भुत थी। ऐसा होने पर भी इसने उस व्यक्ति से युद्ध क्यों नहीं किया? उस व्यक्ति ने इसके शरीर पर हंटर मारकर इसका अपमान किया तब भी इसने शान्त चित्त से यह अपमान क्यों सहन कर लिया! माइकेल के लिए यह उचित नहीं है! हेरी और जोलिवेट को अब वहाँ खड़ा रहना ठीक न जान पड़ा, इसलिए वे नमस्कार करके वहाँ से विदा हुए।

कुछ दूर जाने के बाद जोलिवेट बोला—हेरी! जो व्यक्ति पलक मारते ही एक जंगली हिंसक पशु की जान ले सकता है वह व्यक्ति इस प्रकार घोर अपमान कैसे सहन कर सकता है? यह बात मेरी समझ में नहीं आती। जो व्यक्ति एक बार पराक्रमी दिखाई दिया वह दूसरे ही क्षण इतना कायर कैसे हो जायगा? इस सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है?

"कुछ नहीं।" हेरी ने संक्षिप्त उत्तर दिया। इस प्रकार उसने इस बात को वहीं समाप्त कर दिया।

थोड़ी देर बाद वह बर्लिन गाड़ी स्टेशन से रवाना हो गई। माइकेल एक अर्थ-भरी दृष्टि से गाड़ी को देखता रहा। वह एक पत्थर की मूर्ति की भाँति दृढ़ और निश्चल था। वह अपनी दोनों बाहुओं को छाती पर मोड़े था। मुख पर निर्विकार भाव था। उसके मूल भाव को अपमान, लज्जा, ग्लानि आदि कोई भी वस्तु डिगा न सकी।

नादिया चुपचाप माइकेल के पास खड़ी थी। उसने मान लिया था कि माइकेल का इस प्रकार घोर अपमान सहन करना अकारण नहीं है। साधारणतः वह इसे कदापि सहन नहीं कर सकता।

एक दिन नादिया को हताश देखकर निजनी नोवोगोरोड की पुलिस चौकी पर जिस प्रकार माइकेल हिम्मत से आगे बढ़ा था और उसका हाथ पकड़कर सहारा दिया था, उसी तरह आज नादिया ने आगे बढ़कर माइकेल का हाथ अपने हाथ में लिया और अशान्त तथा निराश माइकेल को एक माता या बहन की तरह आश्वासन देने का प्रयास किया। माइकेल की आँखों से दो बूंद आँसू टपक पड़े। नादिया ने स्नेहपूर्वक उन बूंदों को पोंछ डाला।

(१३)

नादिया बहुत समझदार थी। वह तुरन्त समझ गई कि माइकेल के शान्त व्यवहार के पीछे अवश्य कोई महत्त्व का कर्तव्य छिपा है। किन्तु यह नहीं समझ में आ रहा था कि कर्तव्य क्या है? फिर भी वह इतना अनुमान कर सकी थी

कि वह कर्तव्य इतना गंभीर और महत्त्वपूर्ण होना चाहिए, जिसके पालन करने के लिए ऐसा घोर अपमान पी जाना पड़े। ऐसे कर्तव्य के लिए अनेक बार अपनी इच्छाओं की बलि देनी पड़ती है। इसी कारण उन्होंने ऐसा घोर अपमान अत्यन्त शान्ति से पचा लिया है।

फिर भी नादिया ने इस सम्बन्ध में माइकेल से एक शब्द भी न पूछा। वह इस प्रकार के नीरव भाव, स्नेह और आदर से माइकेल को आश्वासन दे रही थी मानो उसकी सब छोटी बड़ी बातों को जानती हो। इस प्रकार कितने ही घण्टे गुजर गये। माइकेल पूर्ववत् नीरव और अविचल रहा। उसके मुख से कोई शब्द न निकलता था मानो किसी ने उसकी जीभ पर ताला लगा दिया हो। घोड़े वाले ने माइकेल को इस बात का कोई आश्वासन न दिया कि कल घोड़े का प्रबन्ध कर दिया जायगा। हाँ, उसने नादिया के सोने के लिए एक कमरे का प्रबन्ध कर दिया।

नादिया माइकेल का साथ नहीं छोड़ना चाहती थी, किन्तु जब उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह कुछ समय अकेला रहना चाहता है तब वह उठ खड़ी हुई और बोली—"भैया!" और इतना कहकर चल पड़ी। माइकेल ने उसे रोकने का कोई भी प्रयास नहीं किया।

नादिया ने सारी रात व्याकुलता से गुजारी। माइकेल की भी यही स्थिति थी। उसकी आँखें मिचती ही न थीं। उस व्यक्ति द्वारा किया गया घोर अपमान उसे बारंबार याद

आता था। अन्त में उसके मुँह से केवल ये ही शब्द बाहर निकल सके—"प्यारे देश की स्वाधीनता का प्रश्न है, जार के सम्मान का प्रश्न है। माइकेल! तुझे विचलित न होना चाहिए।"

इतने घोर अपमान के बावजूद भी माइकेल के मन में एक बात का घोर कुतूहल पैदा हो रहा था कि वह कौन होगा? उसने क्यों पशुवत् व्यवहार किया? वह कहाँ से आया होगा और कहाँ जा रहा होगा? उसको इतनी जल्दी क्या रही होगी?

उस व्यक्ति के मुख-मण्डल और अंग-भंगिमा ने माइकेल के मन पर एक ऐसी गहरी छाप डाल दी कि वह उस छाप को निर्मूल करने में असमर्थ था।

२४वीं जुलाई को प्रभात काल में ही नये घोड़े मिल गये। फिर यात्रा आरंभ हुई। आगे सीमाहीन प्रदेश था और पीछे इशिम नगर था। उस नगर के साथ वह अपनी लज्जा, अपमान और ग्लानि को छोड़े जा रहा था।

माइकेल हरेक स्टेशन पर पूछ-पूछकर इस बात का पता लगाता जा रहा था कि क्या इर्कुट्स्क के रास्ते पर आगे जाने के लिए गाड़ी चल रही है? इस गाड़ी के यात्री ने कहीं भी एक क्षण का अकारण विलंब नहीं किया था।

इशिम छोड़ने के बाद अब तक माइकेल के मुख से एक शब्द भी बाहर न निकला था। नादिया माइकेल की इस दुःख-

पूर्ण मानसिक स्थिति को अच्छी तरह समझती थी और उसे विविध प्रकार से आश्वासन देती थी। वह भी इर्कुट्स्क पहुँचने के लिए अधीर हो रही थी। वह सोचती कि यदि घोड़ों के पंख होते तो कितना अच्छा होता। एक-एक घण्टा युग की तरह व्यतीत हो रहा था। उसे यह भी ज्ञात था कि माइकेल इर्कुट्स्क पहुँचने के लिए मुझसे भी अधिक अधीर है। इर्कुट्स्क कहाँ है? कितनी दूर है?

नादिया ने यह भी विचारा कि माइकेल की माँ ओम्स्क में है। यदि विद्रोही उस नगर पर आक्रमण करेंगे तो एक भयंकर आपत्ति खड़ी हो जायगी। कदाचित् इसी बात की कल्पना से माइकेल इतना अधिक व्यग्र बना होगा। यह सोचकर उसने माइकेल से उसकी माँ की चर्चा छेड़ते हुए कहा—"भैया!"

"कहो।"

"विद्रोह शुरू होने के बाद क्या माँ का कोई समाचार मिला?"

माँ का नाम सुनते ही माइकेल का मन सजग हो उठा। वह बोला—"नहीं बहन! कोई समाचार नहीं मिला। कुछ दिन पहले माँ का एक पत्र मिला था। उसमें आनन्द का समाचार था, किसी दुखद समाचार का उल्लेख नहीं था। कुछ भी हो, मेरी माँ बड़ी साहसी है। वह एक दुर्धर्ष साइबीरियन स्त्री है। यद्यपि वह वृद्धावस्था में है; किन्तु उसका मन खूब दृढ़ और अखण्ड है।

"आप अपनी माँ से कब मिलेंगे ?"

"माँ से ? हाँ, माँ से लौटते समय मिलूंगा।"

"ऐसा क्यों ? हम लोग तो ओम्स्क नगर से होकर चलने वाले हैं। तो क्या आप केवल माँ से आधे घण्टे के लिए भी न मिलेंगे ?"

"नहीं। इस समय मैं माँ का दर्शन करने भी न जा सकूंगा।"

"माइकेल का हृदय प्रकम्पित हो उठा। उसकी आवाज में किसी मर्मभेदी कम्प की प्रतिध्वनि सुनाई दी। उसने खिन्न स्वर में कहा—"नहीं बहन ! नहीं !"

"आप इस तरह 'ना' क्यों कर रहे हैं ? आपकी बूढ़ी माँ तो आपसे मिलने को अधीर हो रही होगी। फिर आप अनिच्छा क्यों प्रकट करते हैं ?"

"क्या तू यह बात जानना चाहती है कि मैं अपनी माँ से क्यों नहीं मिलना चाहता ?" माइकेल ने पूछा।

यह सुनकर नादिया लज्जित हो उठी।

माइकेल ने कहना आरंभ किया—"नादिया ! मैंने जिस कारण उस मानव-पशु का जघन्य प्रहार और अपमान सहन किया उसी से माँ के पास जाने से वंचित रहूँगा।"

नादिया का मन व्याकुल हो उठा। उसने इस चर्चा को यहीं रोकते हुए कहा—"बस भैया ! अब कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। मुझे उस दुःखद घटना को नहीं सुनना

है। मुझे अब तक आपका जो अनुभव हुआ है उसके आधार पर कह सकती हूँ कि आपके ऊपर कोई गंभीर जिम्मेदारी है। उसी को लेकर आप इस लम्बी यात्रा पर निकल पड़े हैं। वह कर्तव्य माता-पुत्र के मिलाप से भी पवित्र होना चाहिए।"

नादिया अब आगे कुछ बोल न सकी। वह समझ गई कि माइकेल विचित्र स्थिति में जी रहा है। उसने माइकेल से इस सम्बन्ध में प्रश्न करना बिल्कुल छोड़ दिया।

२५वीं जुलाई को माइकेल और नादिया प्रातःकाल इर्तुश नदी के तट पर पहुँच गये। वहाँ से ओम्स्क नगर बिल्कुल समीप था।

इर्तुश उत्तर एशिया की एक बड़ी नदी है। आल्ताई पर्वत उसका उद्गम स्थान है।

वर्षा ऋतु में साइबेरिया का बरफ पिघल पिघलकर नदियों का जलप्रवाह खूब बढ़ा देता है। पानी की तीव्रता से नदियों में धारा का जोर खूब बढ़ जाता है। इस समय इर्तुश नदी भी पगली-सी बनी प्रवाहित हो रही थी। किसी कुशल तैराक के लिए भी इस समय नदी का पार करना कठिन था। और किसी छोटी-बड़ी नाव द्वारा पार करना भी इस समय कम संभव प्रतीत होता था। फिर भी माइकेल या नादिया में से कोई भी विचलित न हुआ। वे आगे-पीछे की चिन्ता छोड़कर नदी पार करने को तैयार हो गये।

किनारे पर कुछ नावें पड़ी थीं। माइकेल ने अधिक पैसे देने का लालच दिया। मलाह पैसे के लालच में आकर उन्हें उस पार ले जाने को तैयार हो गये। वे लोग अपनी गाड़ी और घोड़े के साथ नाव में बैठे।

नदी के मध्य भाग में नाव के पहुँचते ही माइकेल अचानक चौंक पड़ा। नादिया भी घबराकर उसकी ओर देखने लगी। एक-दो क्षण के बाद उसने पूछा—"क्या है भैया?"

नादिया ने उत्तर दिशा की ओर देखा तो तातार लोगों की नावें दिखाई दीं। माइकेल मलाह से कहने लगा—"खूब तेजी से नाव चलाओ। मैं तुम्हें पचास रूबल दूंगा। चलाओ! जल्दी चलाओ!!"

मलाह ने नाव को तेजी से चलाना आरंभ किया। इसी बीच तातारी लोगों की नावें इनकी नाव के पास आ पहुँचीं।

"नादिया! तुम घबराना मत। मैं इस समय यह नहीं कह सकता कि हम लोगों को क्या करना होगा। तो भी तू तैयार रह! कदाचित् जल-धारा में कूद पड़ना पड़े! क्या तू कूद सकेगी?"

"हाँ, मैं कूद पड़ूँगी। आप जो कुछ कहेंगे वह सब मैं करूँगी।"

"मुझ पर विश्वास रख! रख सकेगी?"

"हाँ, भैया! आप पर मेरा सम्पूर्ण विश्वास है।"

तातारों की नावें ओम्स्क पर आक्रमण करने जा रही

थीं। उनकी सबसे आगे वाली नाव के सैनिकों ने कहा—"आत्मसमर्पण करो।"

माइकेल ने उनकी आवाज पर कुछ ध्यान न दिया। उसी समय तातार लोगों ने गोली चलाना आरंभ किया। माइकेल के घोड़े गोलियों की चोट से मर गये। साथ ही तातार लोगों की एक नाव माइकेल की नाव से टकराई।

माइकेल चौंक पड़ा। वह जोर से चिल्लाया—"नादिया! नादिया! आओ और जल्दी कूद पड़ो।"

माइकेल पानी में कूद पड़ा। नादिया कूदने की तैयारी कर ही रही थी कि एक तातर ने उसे पकड़ लिया।

(१४)

ओम्स्क नगर पश्चिम साइबेरिया की राजधानी है। वहाँ शासन करने के लिए गवर्नर-जनरल रहता था। विद्रोहियों ने इस नगर पर आक्रमण किया था। उनके सामने सरकारी सेना न टिक सकी इसलिए नगर छोड़कर उसके उत्तर दिशा में उन्होंने आश्रय लिया था। तातार लोगों का सरदार वही विश्वासघातक आइवेन ओगारेफ था। उसका स्वभाव तातार लोगों के स्वभाव से भी नीच था। कसाई से भी अधम था।

जिस समय माइकेल नदी में कूदा उस समय एक तातार ने उसपर भाले से वार किया था। उसकी चोट गहरी होने पर भी प्राणघातक न थी। चोट की वेदना से वह कुछ

समय अचेतावस्था में पड़ा था। जब उसने आँखें खोलीं तो अपने को एक मछुवे के घर में लेटा हुआ पाया।

उसने मछुए की ओर देखा और कुछ बोलने का प्रयत्न किया; किन्तु मछुए ने उसे बोलने से रोका और कहा— आप बोलिए मत ! मैं थोड़ी देर बाद आपको सारी बात बता दूँगा।"

माइकेल ने तुरन्त अपना सरकारी सन्देश-पत्र तलाश किया। वह सुरक्षित था। फिर उसने पूछा—"मेरे साथ जो लड़की थी वह कहाँ गई ?"

मछुवे ने उत्तर दिया—"तातारों ने उसे जान से नहीं मारा है। वे उसे नाव पर बैठाकर ले गये हैं। कदाचित् उसे जेल में बन्द करेंगे।"

"मैं इस समय कहाँ हूँ ?"

"ओम्स्क नगर से कुछ दूर।"

"और मेरी चोट…?"

"कोई खतरनाक नहीं है। दो दिन में आराम हो जायगी। आप पानी में कूद पड़े थे, इसीलिए तातार लोग आपकी तलाश नहीं कर पाये थे। आपका पैसा मेरे पास है।"

"धन्यवाद ! क्या आप मुझे एक घोड़ा मोल दे सकेंगे ?"

"इस समय एक घोड़ा या एक गाड़ी भी नहीं मिलेगी। तातार लोग जहाँ जहाँ गये वहाँ की कोई वस्तु भी रहने नहीं दी।"

माइकेल दुखी होकर बोला—"तब तो मैं अभी ओम्स्क जाऊँगा।" क्या वहाँ भी घोड़ा नहीं मिल सकेगा ?"

"क्या आपको मेरे वचन पर विश्वास नहीं है ? ओम्स्क जाकर क्या करेंगे ?"

"मुझे रोको मत ! मेरे लिए एक क्षण का विलम्ब भी असह्य है।"

मछुए ने समझ लिया कि यह व्यक्ति किसी प्रकार रुक नहीं सकेगा। अवश्य ही यह कोई महत्त्वपूर्ण कार्य लेकर वहाँ जा रहा है। वह बोला—"चलिए। मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ। कदाचित् वहाँ कोई घोड़ा मिल जाय !"

माइकेल ने कृतज्ञता से कहा—'आपने मेरे लिए जो कष्ट उठाया है उसका बदला ईश्वर आपको अवश्य देगा।"

"बदला ! मूर्ख और लोभी मनुष्य ही बदले की आशा रखते हैं।"

ओम्स्क नगर में पहुँचकर माइकेल अचानक एक टूटी हुई दीवार के पीछे छिप रहा। यह देखकर उस मछुए ने पूछा—"क्यों ? क्या है ?"

माइकेल का उत्तर पाने के पूर्व ही मछुए ने उस रास्ते से होकर तातारियों का एक दल जाते देखा। उसमें लगभग तीस हजार अश्वारोही थे।

सेना के चले जाने के बाद माइकेल ने मछुए से पूछा—"सेना का नायक कौन था ?"

"आइवेन ओगारेफ !"

'ओह ! यही आइवेन ओगारेफ है !' माइकेल बड़-बड़ाया।

कैसा आश्चर्य ? इसी व्यक्ति ने उसका इशिम स्टेशन पर अपमान किया था। इसी व्यक्ति ने निजनी नोवोगोराड में बोहेमियन की पोशाक पहनी थी। इसी व्यक्ति ने जिप्सी लोगों के वेश में उनमें मिलकर और पुलिस की आँख में धूल डालकर विद्रोहियों के दल में प्रवेश किया था। यही व्यक्ति 'काकेसस' जहाज पर भी था।

आइवेन ओगारेफ ने तीन दिन पहले ओम्स्क नगर पर आक्रमण किया था।

माइकेल अपने दुर्भाग्य पर विचार कर रहा था। यदि रास्ते में वह दुर्घटना न होती तो वह अवश्य इर्कुट्स्क पहुँच गया होता।

पोस्टिंग स्टेशन पर पहुँचाकर मछुए ने बिदा ली। अब ओम्स्क नगर तातारियों के अधिकार में था। माइकेल ने बड़ी कठिनाई से एक घोड़ा खरीदा। रात को प्रस्थान करने के विचार से ही उसने पोस्टिंग स्टेशन पर ही ब्यालू किया। वह पोस्टिंग स्टेशन के एक कमरे में बैठकर पास में एकत्र हुए लोगों की बात सुनने लगा। इतने में उसे एक मर्मभेदी चीख सुनाई दी।

"बेटा ! मेरा बेटा !"

माइकेल ने देखा कि उसकी बूढ़ी माँ सामने खड़ी थी। वह भी माँ से गले मिलने को खड़ा हुआ; किन्तु उसी समय उसे अपना कर्तव्य याद आया। कर्तव्य का भान होते ही वह व्याकुल हो उठा। उसने कर्तव्य की बलिवेदी पर मातृ-प्रेम की समाधि दे दी और अपने मुख-मण्डल पर कोमल भाव की एक रेखा भी न प्रकट होने दी। माता ने पुनः कहा—"बेटा! मेरा बेटा!"

माइकेल तनिक भी विचलित न हुआ। और बोला—"अरी बूढ़ी! तू कौन है? मैं तेरा लड़का नहीं हूँ।"

•'माइकेल'''बेटा माइकेल!'

माइकेल ने अपने स्वाभाविक स्वर को बदलते हुए कहा—'अरी बुढ़िया! तू कौन है?"

"मैं कौन हूँ? बेटा! तू क्या बोलता है? क्या तू अपनी माँ को भी भूल गया?"

"तू भूल रही है। मैं तेरा लड़का नहीं हूँ। कदाचित् मेरी आकृति तेरे पुत्र से मिलती-जुलती होगी!"

बुढ़िया अधिक समीप आ गई। बोली—"क्या तू मार्फा स्ट्रगोफ का पुत्र नहीं है?"

"नहीं। मेरा नाम निकोलस कोपनिफ है। मैं एक सौदा-गर हूँ।"

"बुढ़िया ने फिर एक बार माइकेल का चेहरा ध्यान से देखा। इसके बाद वह काँपती हुई आवाज में बोली—

"अरे, ऐसा है ! मुझसे एक बड़ी भूल हो गई। मेरा माइकेल तेरे जैसा ही था। मुझे अब अच्छी तरह दिखाई नहीं देता।"

"ऐसा ही है माताजी !"

इतना कहकर माइकेल वहाँ से रवाना हो गया। दस मिनट बाद एक तातार सरदार पोस्टिंग स्टेशन पर आया और बोला—"मार्फा स्ट्रगोफ !"

माइकेल की माता का नाम मार्फा स्ट्रगोफ था।

'मुझे कौन बुलाता है ?' मार्फा दौड़ती हुई आई।

'तुझे कैद किया जाता है।' सरदार ने कहा।

कैद करने के बाद वह आइवेन ओगारेफ के सामने उपस्थित की गई। आइवेन ओगारेफ उससे पूछने लगा :—

"नाम"

"मार्फा स्ट्रगोफ।"

"तेरे कोई लड़का है ?"

"हाँ, लड़का है।"

"वह जार के सन्देश-वाहक का काम करता है ?"

"हाँ।"

"इस समय वह कहाँ है ?"

"मास्को में है।"

"तुझे उसका कोई समाचार मिला है ?"

"नहीं।"

"कितने दिन से समाचार नहीं मिला ?"

"लगभग दो महीने से।"

"अभी थोड़ी देर पहले तू जिसे बेटा-बेटा कहकर पुकारती थी वह कौन था?"

मार्फा सजग हो गई और बोली—"वह एक साइ-बेरियन था। मैंने उसे भूल से अपना पुत्र समझ लिया था।"

"तू यह सब चालाकी छोड़ दे। झूठ बोलने के बदले तुझे कैसा कठोर दण्ड दिया जायगा उसे क्या जानती है?"

"मैं सच कह रही हूँ।" वह बोली।

भला आइवेन ओगारेफ इसे क्यों सच मानने लगा। तुरन्त उस बुढ़िया को अँधेरी कोठरी में ले जाने का आदेश दिया।

बुढ़िया बोली—"ओह! हत्यारा!"

फिर तो आइवेन ओगारेफ अच्छी तरह समझ गया कि वह निकोलस कोपनिफ ही माइकेल स्ट्रगोफ है।

उसने निकोलस को पकड़ने का आदेश दिया।

(१५)

जब तक आइवेन ओगारेफ के सैनिक उसे पकड़ने का प्रयत्न करें तब तक माइकेल बहुत दूर निकल गया।

२६वीं जुलाई। ओमस्क नगर मास्को और इर्कुट्स्क के ठीक बीचो बीच स्थित है। अभी इर्कुट्स्क पहुँचने में दस दिन लगने की संभावना थी। आज का दिन किसी उल्लेखनीय कठिनाई का नहीं था।

माइकेल ३०वीं जुलाई को बाराबरा प्रदेश में पहुँचा। वहाँ से इर्कुट्स्क जाने का रास्ता सीधा था। इस भाग में बनस्पति की बहुलता रहती है।

कुछ देर बाद वह एलाम्स्क नाम के एक स्थान पर पहुँचा। उस समय सन्ध्या के चार बज रहे थे।

अधिक थकावट के कारण घोड़ा अब आगे नहीं बढ़ सकता था। उसे आराम देने के लिए माइकेल ने वहाँ कम-से-कम एक रात ठहरने का विचार किया।

उस रात को आराम करके फिर माइकेल दूसरे दिन इर्कुट्स्क को रवाना हुआ। उसे यह भी खबर मिली कि विद्रोही बाराबरा तक आ गये हैं।

१ली अगस्त को माइकेल पक्रोस्को नाम के नगर में पहुँचा।

घोड़ा थककर लथपथ हो गया था। वह दिन उसने उस नगर में ही बिताया। दूसरे दिन वह वहाँ से ७५ मील दूर स्थित कॉम्स्क नगर में पहुँचा। यह नगर सैलानियों के नगर के रूप में प्रसिद्ध था। वहाँ के निवासियों को तातारियों के आक्रमण का भय नहीं था। वे आक्रमण होने पर भी भाग खड़े होने की सरलता पर विश्वास रखते थे। माइकेल ने उस नगर की धर्मशाला में रात गुजारी।

रात को एक बार उसकी आँख खुली। उसे अपने कर्तव्य की याद आई, और सरकारी सन्देश याद आया। उस

सन्देश पर जार और रूस का भविष्य अवलम्बित है, यह बात उसके स्मृतिपट पर चमक उठी।

उसने सोचा कि मुझे ग्रांड ड्यूक के पास शीघ्र पहुँच जाना चाहिए और किसी आपत्ति की चिन्ता न करनी चाहिए।

पाँचवीं अगस्त के दिन इर्कुट्स्क नगर थोड़ी ही दूर पर था।

(१६)

जिस रास्ते पर माइकेल चल रहा था वह तातारियों से पादाक्रान्त हो चुका था। चारों ओर सर्वनाश का दृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। माइकेल ने सोचा कि अब खूब होशियारी से काम लेना पड़ेगा।

उसने आकाश में धुएँ के काले बादल छाये देखे। विचारने लगा कि क्या अमीर की सेना आती होगी अथवा फ्यूफर खान ने सारे प्रदेश पर आक्रमण कर दिया होगा ?

वह ये बातें किससे पूछे ? रास्ते पर कोई आदमी दिखाई न देता था। रास्ते के दोनों ओर खाली झोपड़ियाँ थीं—कोई आदमी न था। कुछ आगे जाने पर उसे एक कुटुम्ब दिखाई दिया। माइकेल घोड़े को चाबुक मारते हुए वहाँ पहुँचा। उसमें एक वृद्ध; दो चार बच्चे और युवती थी।

माइकेल ने वृद्ध से पूछा—"दादा ! मैं दो चार बातें जानना चाहता हूँ।"

"क्या क्या बातें ?"

"क्या इस रास्ते पर तातारी लोगों ने अत्याचारपूर्ण आक्रमण किया है ?"

'हाँ, वे सब जलाकर राख करते हुए आगे गये हैं।"

"उनकी सेना छोटी है या बड़ी ?"

"बड़ी सेना है। खूब निर्दय है। हमारे खेतों, घरों और फसलों को उन्होंने जला डाला है।"

"सेना का नायक कौन है ?"

"अमीर फ्यूफर खान"

"क्या उसने टोम्स्क नगर जीत लिया है ?"

"हाँ।"

"क्या किलवन नगर पर भी आक्रमण कर दिया है ?"

"नहीं। अभी किलवन नगर में विद्रोहाग्नि नहीं जली है।"

"मैं आपका कृतज्ञ हूँ।"

माइकेल ने बूढ़े के हाथ पर पाँच रूबल रखकर बिदा ली।

टोम्स्क नगर पर आक्रमणकारियों का अधिकार था; किन्तु अभी तक किलवन नगर में तातारी नहीं पहुंच पाये थे। वह रास्ता अभी खतरनाक न था। किन्तु वहाँ जाने के लिए ओबी नदी पार करनी पड़ती थी।

इसी समय उसे घोड़ों की टापों की आवाज सुनाई दी।

किसी अश्वारोही दल के ओमस्क जाने का अनुमान करके वह एक सुरक्षित झाड़ी में छिपकर बैठ गया। उसका विचार उन अश्वारोहियों की निगाहों से बचना था। रात का समय था। चारों ओर घोर अन्धकार छाया था।

इतने में अश्वारोही समीप आ गये। उनकी संख्या पचास के आसपास थी। दस बारह आदमियों के हाथ में मशालें थीं।

ये उजबेक जाति के सैनिक थे और ओम्स्क नगर से आये थे। वे इस स्थान पर कुछ खाने-पीने के विचार से ठहरना चाहते थे। इनके नायक का नाम पेण्ड जावाची और सहायक का नाम देवासची था।

आराम लेते हुए पेण्ड जावाची बोला—"वह आदमी हमसे बहुत दूर नहीं होगा। कदाचित् आसपास कहीं छिपा हो ?"

"ऐसा हो तब तो बहुत अच्छा। यदि वह यहाँ होगा तो इर्कुट्स्क नहीं पहुँच सकेगा।"

"उसकी बूढ़ी माँ से आइवेन अवश्य सच्ची बात का पता लगा लेगा।"

माइकेल इन सारी बातों को सुन रहा था। उसे यह ध्यान आया कि ये लोग मुझे जार का छद्मवेशी दूत समझ गये हैं और मेरा ही पीछा कर रहे हैं। शोचनीय बात यह है कि मेरी माँ आइवेन ओगारेफ के पास कैद है। वह हत्यारा सच्ची बात जानने के लिए अत्याचारों की झड़ी लगा देगा।

उसे पता था कि उसकी माँ बड़ी साहसी और धैर्यवान स्त्री है। उसका साहस अदम्य है। प्राण जाने पर भी वह अपने मुँह से सच्ची बात का भेद नहीं खोलेगी। परन्तु इस समय वह कर ही क्या सकता था ? इस समय उसका जीवन, उसका कर्तव्य, उसकी माँ के प्रति प्रीति—ये सभी संकट में थे। इसलिए अब उसे अधिक विचारने या विलम्ब करने का समय नहीं था। भीषण संयोगों और कठिनाइयों से उसकी साहस-वृत्ति अनेक गुनी बढ़ने लगी।

उसने सोचा कि इस सेना के पहले ही मुझे ओबी नदी पार कर लेनी चाहिए। रात समाप्त होने वाली थी। इस शेष अन्धकार का सहारा लेकर वह काम पूरा करना चाहिए। अन्य कोई उपाय न था।

वह उठ खड़ा हुआ। और घोड़े को पुचकारकर धीरे से उसे नदी-तट की ओर मोड़ा।

इसी बीच एक महान् आपत्ति खड़ी हो गई। उसका घोड़ा ज्योंही सेना के घोड़ों की निगाह में आया त्योंही वे जोर से हिनहिना उठे। माइकेल सकपकाया। उसने अपना रिवाल्वर हाथ में लिया और किसी भी शत्रु को समीप आने पर मार डालने का निश्चय किया।

घोड़ों की हिन-हिनाहट से एक सैनिक ाग उठा। उसकेज मन में कुछ सन्देह पैदा हुआ कि एक काली आकृति धीरे-धीरे चल रही है। वह सावधान हुआ और अन्य सैनिकों को

भी जगाया। सबके सब जल्दी से उठ खड़े हुए। उन सब ने उस तरफ घोड़े दौड़ा दिये।

माइकेल अपने घोड़े को तीर की तरह दौड़ा रहा था। सेना के दोनों नायक बोल उठे—"पकड़ो! पकड़ो!"

एक गोली सन्-सन् करती माइकेल के माथे के पास होती हुई चली गई; किन्तु उसने न तो उसका कोई प्रत्युत्तर दिया, न पीछे मुड़कर देखा। उसका लक्ष्य एक ही था—ओबी नदी पार करना।

उजबेक अश्वारोही उसके पीछे चल पड़े। रात का अंधकार धीरे-धीरे कम हो चला। सबेरा होने में अधिक देर न थी। अब दूर के वृक्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे थे।

माइकेल ने सावधानी से अपने घोड़े को एक ओर मोड़ा। उसने एक उजबेक अश्वारोही को तेजी से अपनी ओर आते देखा। वह सेना का उपनायक देवासची था, जो अपने सैनिकों से अलग पड़ चुका था।

माइकेल ने उसकी ओर अपनी रिवाल्वर का निशाना किया। सन्न् करती एक गोली छूटी और देवासची चोट खाकर हाय-हाय करता हुआ धरती पर गिर पड़ा; किन्तु उसके सैनिकों ने अपने सेनापति का ध्यान छोड़कर माइकेल का पीछा करना शुरू किया।

अब स्थिति औरं भी अधिक गंभीर बन गई। माइकेल का घोड़ा लथ-पथ हो गया था। वह उसे उत्साहित करने का

प्रयत्न कर रहा था। अब सबेरा हो गया। सामने ओबी नदी दिखाई देने लगी।

माइकेल शत्रुओं की गोली का जवाब गोली से देने लगा। उसकी गोलियों से अनेक सैनिकों की मृत्यु हो गई; फिर भी वह महान् संकट में फँस गया। शत्रु पूरे वेग से उसके पीछे आ रहे थे। अब माइकेल का घोड़ा नदी के तट पर आ गया। उसने अपने घोड़े की पीठ थपथपाते हुए कहा— "शाबाश दोस्त!"

दूसरे ही क्षण माइकेल और उसका घोड़ा नदी की धारा में कूद पड़े। उजबेक सेना किनारे पर आकर खड़ी हो गई और विचार करने लगी कि अब क्या करना चाहिए?

फिर भी किसी सैनिक ने पानी में उतरने का साहस न किया। पेण्ड जीवाची ने माइकेल की ओर एक गोली छोड़ी। इससे उसका घोड़ा घायल हो गया और पानी के अन्दर डूब गया। घोड़े के साथ ही माइकेल भी डूब गया। सेना फिर उसे न देख सकी।

भाग दूसरा

(१७)

नदी के उस पार एक घना वन था। माइकेल नदी से बाहर निकल कर उस जंगल में अदृश्य हो गया और बड़ी सावधानी से पूर्व दिशा की ओर आगे बढ़ने लगा। कुछ दूरी पर एक नगर आया।

उस नगर का नाम किलेवन था। वहाँ गर्मी के दिनों में हवा खाने के लिए गवर्नर और दूसरे कर्मचारी आते थे; इस बात को माइकेल भी जानता था। अभी तक विद्रोही उस नगर में नहीं पहुँचे थे। उसका विचार शत्रुओं के पहुँचने से पहले ही किलवन पहुँचकर और वहाँ से कोई अच्छा घोड़ा खरीदकर इर्कुट्स्क जाने का था।

दिन काफी चढ़ आया था। सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैल रहा था। फिर भी कहीं से किसी मनुष्य की आवाज नहीं सुनाई देती थी। तातारियों के भय से नगरनिवासी अपने घरबार छोड़कर भाग गये थे। ओह! कितनी भयंकर तातार सेना है! उसे रोकने की हिम्मत किसी में न थी। इसीलिए नगर सुनसान हो गया था।

माइकेल लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ रहा था; किन्तु कुछ ही दूर जाकर ठहर गया। उसे गोलियों की आवाज सुनाई दी। उसने अनुमान किया कि तातारी सेना

के साथ रूसी सेना का सामना हो रहा होगा। यह बात ठीक निकली। गोलियों और गोलों के कारण दक्षिण का आकाश धुएँ से भर रहा था और अन्धकारमय हो रहा था। उसने नगर के अन्दर संग्राम होने का अनुमान किया।

अब माइकेल नगर के उत्तर की ओर चलने लगा और कुछ दूर जाकर रुक गया। उस समय विद्रोहियों की सेना नगर के पास आती दिखाई दी। उन सबकी दृष्टि से छिपकर भाग जाना कठिन था।

वह इधर-उधर देखने लगा। कुछ दूरी पर मैदान के एक सिरे पर छोटे बड़े वृक्षों का एक झुण्ड दिखाई दिया। उसके बीच एक छोटा घर था। उसने इसी घर में आश्रय लेने का विचार किया। वह थककर चूर हो रहा था और अधिक सोच-विचार करने में अपने को असमर्थ पा रहा था। उसे भूख सता रही थी, शरीर का जोड़-जोड़ दुख रहा था। इस घर के आश्रय को वह अपना सद्भाग्य मान रहा था।

वह जल्दी से चलकर वहाँ पहुँचा और देखा कि वह घर तार-आफिस है। वहाँ से पूर्व और पच्छिम दोनों दिशाओं की ओर तार-लाइनें जाती थीं।

उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि इस घर में कोई नहीं रहता है। यदि सचमुच कोई न हो तो अच्छा ही है। इस प्रकार वह सारे दिन उसमें छिप सकेगा और रात के अन्धकार में वहाँ से रवाना होने की सुविधा भी रहेगी।

साधारण धक्का देते ही दरवाजा खुल गया और अन्दर

ट्रान्स-मीटर यंत्र के पास एक आदमी बैठा दिखाई दिया। उसकी उँगलियाँ यंत्र पर चल रही थीं। वह व्यक्ति बाहर की चिन्ता छोड़कर निर्विकार भाव से अपने कर्तव्य में लीन प्रतीत हो रहा था।

माइकेल ने उसके पास जाकर कहा—"क्यों श्रीमान्! कोई समाचार है?"

'नहीं!' उसने हँसकर कहा।

"क्या रूसियों और तातारियों का युद्ध आरंभ हो गया है?

"हुआ होगा।"

"किसकी विजय होने वाली है?"

"यह तो मैं नहीं बता सकता, साहब!"

माइकेल ने पूछा—"तार कहाँ तक जा सकता है?"

"किलेवन तक! क्रोसनयेयास्क नगर की लाइन बन्द हो गई है। रूसी सीमा तक अभी लाइन सुरक्षित है।"

"क्या सरकारी समाचार भेजे जाते हैं?"

"संयोग के अनुसार! साधारण व्यक्ति भी पैसा देकर समाचार भेज सकता है। प्रत्येक शब्द का दस कोपेक लिया जाता है। यदि आपकी इच्छा हो तो तार भेज सकते हैं।"

इस निर्विकार व्यक्ति से माइकेल ने कहा—"नहीं! मुझे समाचार नहीं भेजना है।"

इतने में ही कमरे का दरवाजा धड़ाक से खुला। माइकेल ने तातारियों के अन्दर आने का अनुमान किया और खिड़की के रास्ते भागने की बात सोचने लगा।

उसी समय वहाँ दो व्यक्ति हाँफते-हाँफते आये। वे न तो तातारी थे, न विद्रोही थे। वे हेरी और जोलिवेट थे।

माइकेल के रवाना होने के आधे घण्टे बाद ये दोनों भी इशिम नगर से चल पड़े थे। इर्तुश नदी की दुर्घटना के कारण माइकेल को बीच में तीन दिन का विलम्ब हुआ। इसीलिए ये संवाददाता उससे पहले ही किलेवन नगर पहुँच आये। यहाँ आकर उन्होंने अपनी आँखों से रूसियों और तातारियों का युद्ध देखा। दोनों संवाददाताओं में स्पर्धा पैदा हुई कि कौन पहले यूरोप में समाचार भेजेगा? इसीलिए वे दोनों एक दूसरे के शत्रु जैसे बनकर इस तार आफिस में घुस आये थे।

हेरी ने सरकारी कर्मचारी के सामने एक कागज रखा। कर्मचारी ने कहा—"प्रत्येक शब्द का दस कोपेक होगा।"

हेरी ने मुट्ट भर कोपेक मेज पर रख दिये। जोलिवेट तो आँख फाड़कर देखता ही रहा। कर्मचारी ने ट्रांसमिटर द्वारा तार किया।

डेली-टेलीग्राफ—लन्दन।

किलवन, गवर्नमेण्ट आफ ओम्स्क।

छठीं अगस्त। रूसी और तातारी सेना में भयंकर युद्ध। रूसी सेना की घोर पराजय।

कर्मचारियों ने उपर्युक्त शब्द जोर से कहे। जोलिवेट तुरन्त आगे आया ओर बोला—"अब मेरी बारी है।"

यह सुनकर भी हेरी उस कर्मचारी के पास से हटा

नहीं। यह देख कर जोलिवेट बोला—"अब आपका काम पूरा हुआ। आगे सरकिये।"

"नहीं। अभी बाकी है।" ऐसा कहकर हेरी ने दूसरा कागज कर्मचारी के सामने रख दिया।

जोलिवेट का क्रोध सीमा पार कर रहा था। उसे अवकाश होता तो हेरी से झगड़ा-लड़ाई किये बिना नहीं रहता और उस कर्मचारी को भी तार लेने से मना करता। अन्याय वह कैसे सहन करता?

कर्मचारी भी स्थिति समझ गया। उसने हेरी से कहा—"मुझे उनका काम भी करना चाहिए।"

हेरी कुछ बोला नहीं। वह खिड़की से नगर की ओर देखने लगा। उसने कर्मचारी के हाथ में दूसरा कागज दिया। उसमें लिखा था—"दो आलीशान मकान आग में जल रहे हैं और आग धीरे-धीरे दक्षिण दिशा की ओर बढ़ रही है।"

जोलिवेट ने कर्मचारी से हेरी का काम बन्द करने को कहा; किन्तु प्रत्येक शब्द का दस कोपेक मिलने से कर्मचारी ने हेरी का काम नहीं छोड़ा।

हेरी गर्व से जोलिवेट की ओर देखता रहा। अन्य समाचार प्राप्त करने की इच्छा से वह खिड़की के बाहर देखने लगा। इतने ही में जोलिवेट ने धीरे से रूबल की एक थैली कर्मचारी के सामने रख दी और साथ ही तार का कागज भी सौंप दिया। उसमें लिखा था—

"मोडलिन जोलिवट। १० फोवर्ग मन मार्टे, पेरिस।

किलवन, गवर्नमेन्ट आफ ओम्स्क। साइबेरिया, छठीं अगस्त।

लोगों के झुण्ड के झुण्ड नगर छोड़कर भाग रहे हैं। रूसी सेना हार गई है। तातारी उसका पीछा कर रहे हैं।"

हेरी चौंक पड़ा। वह खूब गुस्से में भर गया। उस समय युद्ध खूब भयंकर बन गया था। सेना आगे बढ़ रही थी। गोले की आवाज सुनाई दे रही थी। उससे एक बार तार-आफिस हिल उठा। एक गोला आफिस की दीवार पर टकराया। दीवार टूट गई। दूसरे गोलों के आने की भी पूरी संभावना थी।

माइकेल ने समझ लिया कि रूसी सेना किलवन से भाग रही है। अब इर्कुट्स्क जाने के लिए दक्षिण का ही रास्ता सुरक्षित है। उसी समय तातारी सेना की जय-गर्जना सुनाई दी। एक ही साथ अनेक बन्दूकें छूटीं और तार-आफिस की खिड़कियों के काँच टुकड़े-टुकड़े हो गये। हेरी के कन्धे पर चोट आई।

जोलिवट ऐसे भयंकर समय में भी घबराया नहीं। धैर्य से तार लिखता गया :—

डेली टेलीग्राफ के संवाददाता को चोट।

अब कर्मचारी ने कहा कि तार नहीं भेजा जा सकेगा।

वह खड़ा हुआ और सिर पर हैट रखकर टूटी हुई खिड़की के रास्ते बाहर भागा।

उस समय कुछ विद्रोही आफिस के अन्दर घुस आय। माइकेल और संवाददाताओं को भागने का अवसर न मिला। तातारियों ने उन्हें कैद कर लिया।

(१८)

डैचिनकस नगर किलवन से एक दिन की दूरी पर स्थित है। बीच में एक बड़ा मैदान था। बीच-बीच में पाइन और देवदार के वन थे। उसी प्रदेश में विद्रोहियों के शिविर पड़े थे। इस समय बुखारा का प्रचंड और उद्दण्ड अमीर कैम्प में बैठा अपनी सेना की प्रतीक्षा कर रहा था।

७वीं अगस्त का दिन था। रूसी सेना हार गई थी। असंख्य रूसी बन्दी बनाये गये थे। वे लोग इसी शिविर में थे। क्या उनका उत्साह सचमुच नष्ट हो गया था ?

संसार में कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो जीवन की अन्तिम साँस तक हतोत्साह नहीं होते। माइकेल भी उन्हीं में से एक आदमी था। उसकी सारी रगें जोर से धड़क रही थीं। उसका सन्देश-पत्र पास में सुरक्षित था। यहाँ के विद्रोही अभी तक उसका नाम न जानते थे। अनेक कैदियों में वह भी एक साधारण कैदी जैसा दिखाई दे रहा था।

आइवेन ओगारेफ अभी पीछे था—काफी दूर।

माइकेल के मन में इस बन्धन से छूटने की बात चक्कर काट रही थी। उसने सोचा कि इन लोगों की आँख में धूल झोंककर मुझे किसी भी तरह छूटना चाहिए।

यहाँ पर तातारियों की पचीस हजार सेना थी। उसमें ताजिक लोग अधिक थे। ताजिक तुर्किस्तान की एक जाति है।

जिस समय कैदियों को वहाँ लाया गया उस समय खान अपने कैम्प में आराम कर रहा था। वह बाहर नहीं था। इसीलिए कैदियों को राहत मिली। खान शाही स्वभाव का आदमी था। उसके पास ऐसी सत्ता थी कि एक ही आदेश से सैकड़ों कैदियों के सिर धड़ से अलग हो सकते थे।

वे लोग कैदियों के साथ बड़ा क्रूर बर्ताव करते थे। उन्हें खाने-पीने में भी कष्ट दिया जाता था। बेचारे कैदी कर ही क्या सकते थे? उनके सुख-दुःख का आधार खान के स्वभाव पर निर्भर था।

माइकेल विद्रोहियों के फरमान को शान्त चित्त से सहन कर रहा था। उसे पता था कि टोम्स्क पहुँचने के पहले भागने का अवसर हाथ नहीं आयेगा। उसकी सहनशक्ति भी असाधारण थी। उसे विश्वास था कि यदि वह इस हालत में भी टोम्स्क पहुँच जाय तो वहाँ से भागने में कोई कठिनाई नही आयेगी। बारह घण्टे में वह खान के प्रदेश से बाहर निकल जायगा। उसके बाद आइवेन भी उसे नहीं पकड़ सकेगा।

उसने सोचा कि आइवेन के आने के पहले ही हमें छूटकर भाग जाना चाहिए। नहीं तो उसके आने के बाद बाजी पलट जायगी। और यदि आइवेन की सेना खान की सेना से मिल जायगी तो वह एक ऐसी महान् सेना बनेगी जिसे

कोई शक्ति हरा नहीं सकेगी। फिर तो वह सेना निस्सन्देह इर्कुटस्क पर सरलता से अधिकार कर सकेगी। इस विचार से वह दुखी हो उठा।

इसके साथ ही उसे अपनी माता और नादिया की भी याद आई। नादिया तातारियों के चंगुल में फँस गई थी। इसलिए वह भी मेरी माता की तरह कैदी बनी होगी। किन्तु दुर्भाग्य है कि वह स्वयं कैदी है—असहाय है। स्वयं कुछ नहीं कर सकता।

उसने दूसरे कैदियों की ओर देखा। अचानक उसकी दृष्टि पास में बैठे हुए दो कैदियों पर पड़ी।

हेरी को चोट लगी थी। इसलिए जोलिवेट ने उसका भार अपने सिर पर ले लिया था। वह उसे किलवन से यहाँ तक ढोकर लाया था।

माइकेल उनकी हालत जानने के लिए अधीर हो उठा; किन्तु तुरन्त उसे अपनी स्थिति का ध्यान आया। वह दूसरे कैदियों में इस प्रकार मिल गया और ऐसा भाव धारण किया मानो उन दोनों संवाददाताओं को जानता ही न हो।

इस प्रकार चार दिन बीते। इसके बाद घटना बदली।

१२वीं अगस्त को प्रभात काल में अचानक रणसिंगे गरज उठे। तोपें दानादन छूटीं।

चौकीदार बोला—"कर्नल आइवेन ओगारेफ का आगमन हुआ है।"

आइवेन ओगारेफ के आदेश से कैदियों को मैदान में लाया गया। वह उन्हें टोम्स्क नगर ले जाना चाहता था, जहाँ से नया आक्रमण करने का विचार कर रहा था।

कुछ देर बाद कुछ अश्वारोही बाहर आये। उनके साथ उजबेक रक्षक और चौकीदार भी थे। आइवेन उनके संरक्षण में खान की छावनी में गया। अचानक एक स्त्री रास्ते के एक सिरे पर खड़ी मिली। वह जिप्सी साँगरे थी। आइवेन ने उससे पूछा—"कोई नया समाचार है ?"

"खास नहीं।"

"जाओ। घबराओ मत।"

"अभी उस वृद्धा के साथ अधिक बातचीत करने का अवसर नहीं मिला है।"

"वह मिलने वाला है।"

"कब ?"

"टोम्स्क पहुँचकर।"

"किन्तु कब ?"

"घबराओ नहीं साँगरे! हम लोग तीन दिन के अन्दर ही टोम्स्क पहुँच जायेंगे।"

साँगरे दूसरी ओर चली गई। ओगारेफ का घोड़ा आगे बढ़ा।

खान एक सम्राट् की शान से बैठा था। उसने यह ऐश्वर्य प्रजा का रक्त-पान करके प्राप्त किया था।

आइवेन को देखते ही सारी छावनी सजग हो उठी। खान भी उठ खड़ा हुआ। दूसरे व्यक्ति भी खड़े हो गये।

खान ने आइवेन का सत्कार करने के बाद कहा—"बोलिये। क्या बात है?"

आइवेन ने विनीत स्वर में कहा—"सरकार! मैं संक्षेप में अपनी बातें कह रहा हूँ। इशिन से इर्तुश तक का सारा प्रदेश अपने अधिकार में आ गया है। इधर टोम्स्क तक बड़े बड़े रास्ते अपने कब्जे में हैं। आप अब जहाँ चाहें वहाँ आक्रमण कर सकते हैं।"

खान प्रसन्नता से बोला—"मैं यूरोप की ओर चढ़ाई करूँ तो?"

"तो साइबेरिया के टोल्स्क नगर से यूराल पर्वत तक सारा प्रदेश आपके अधिकार में आ जायगा।"

"और पूर्व की ओर आक्रमण करूँ तो?"

"तो यह विशाल साइबेरिया तातार राज्य में मिल जायगा। इर्कुट्स्क का पतन होगा। इससे आप समृद्धिशाली मध्य एशिया के एकछत्र सम्राट् बनेंगे।"

खान बोला—"किन्तु हमें यह बात भी विचार लेनी चाहिए कि जार की सेना हमारा सामना करेगी और उनका सामना कठिन होगा।"

"पूर्व या पश्चिम किसी भी दिशा का डर रखने की आवश्यकता नहीं है। हमारा आक्रमण अचानक और विद्युत्-

वेगी होगा। रूसी सेना के सामना करने के पहले ही टोलुस्क पर हमारा अधिकार हो जायगा। किलवन में रूसी सेना की जो दशा हुई है वही अन्य स्थानों में भी होगी।"

कुछ समय विचार करके खान ने कहा—"अब तातारी सेना के लिए क्या आदेश दे रहे हो ?"

आइवेन ने कहा—"मुझे पूर्व तरफ प्रस्थान करना उचित मालूम होता है। पूर्व में मैदानों की घास हमारे घोड़े आराम से चरेंगे। इर्कुट्स्क के पतन से रूस का प्रभुत्व छिन्न-भिन्न हो जायगा।"

खान बोला—"अच्छा, यही ठीक है।"

आइवेन ने कहा—"तो सरकार का आदेश ?"

"आज ही यहाँ से छावनी हटाकर हम लोग टोम्स्क पर आक्रमण करेंगे।" आइवेन शिविर के बाहर निकला।

उसके बाहर आते ही एक जोर का कोलाहल सुनाई दिया। यहाँ आवाज वहीं से आ रही थी जहाँ कैदी खड़े किये गये थे। उसमें बन्दूकों की आवाज भी आ रही थी। कोई कैदी भागने का प्रयत्न कर रहा था। उसे रोकने के लिए बन्दूक की आवाज हुई थी।

आइवेन घटनास्थल पर पहुँचा। उसके सामने दो कैदी लाये गये। एक सहायक सेनापति ने आइवेन से कुछ सलाह लिये बिना दोनों कैदियों का सिर उड़ा देने का संकेत किया; लेकिन आइवेन ने उसे तुरन्त रोका। यदि उसने रोका न

होता तो उन दोनों कैदियों के सिर कभी के धड़ से अलग हो गये होते।

ये दोनों कैदी हमारे पूर्व परिचित संवाददाता हेरी और जोलिवेट थे।

आइवेन ने दोनों कैदियों की ओर देखा; किन्तु वह उन्हें पहचान न सका। जिस समय उसने इशिम स्टेशन पर माइकेल का अपमान किया उस समय ये दोनों महानुभाव उपस्थित थे और उसने इन्हें एक सामान्य मुसाफिर समझा था, इसीलिए विशेष ध्यान न दिया था। किन्तु संवाददाता आइवेन को न भूले थे।

जोलिवेट ने धीरे से हेरी के कान में कहा—"अरे, क्या यह वही पशु जैसा व्यक्ति स्वयं आइवेन ओगारेफ है? बड़ा अद्भुत!"

हेरी बोला—'अरे! हाँ। किन्तु हमें इसका कृतज्ञ होना चाहिए; क्योंकि इसी की कृपा से हमारे सिर बच पाये हैं।"

आइवेन ने पूछा—"तुम कौन हो?"

"हम अंग्रेज और फ्रेंच संवाददाता हैं।" हेरी ने कहा।

"इसका प्रमाण?"

दोनों ने अपना परिचय-पत्र दिखाया।

उसे देखने के बाद आइवेन ने पूछा—"तुम्हारी क्या इच्छा है? क्या समाचार प्राप्त करने की अनुमति चाहते हो?"

"हमें मुक्ति मिले तो बहुत अच्छा।"

"अच्छा! और यह समाचार तुम अपने समाचार-पत्र के लिए भेज देना। मैं उसे खूब ध्यान से पढ़ूँगा।"

हेरी बोला—"लेकिन...साहब! एक प्रति का मूल्य ६ पेनी है।"

आइवेन हँसकर वहाँ से रवाना हुआ।

हेरी ने जोलिवट से कहा—"आपको आइवेन कैसा आदमी लगा?"

"हमारे सिरों की रक्षा करने वाला।"

दोनों हँस पड़े।

हेरी ने कहा—"चाहे कुछ भी हो, छुट्टी तो मिल गई! किन्तु इस मुक्ति की खुशी कैसे मनायी जायगी?"

"चलिये, टोम्स्क की ओर चलें। वहाँ की स्थिति को स्पष्ट रूप से देखें और यह भी देखें कि हम लोग रूसी सेना में घुसकर काम कर सकते हैं या नहीं।"

हेरी बोला—बिल्कुल ठीक बात है। इन जंगली तातारियों के साथ हमारा गुजारा नहीं हो सकता। जंगली के साथ जीने की अपेक्षा सभ्य जाति के साथ मरना अच्छा है।

माइकेल सदा इस शंका से पीड़ित था कि यदि आइवेन मुझे देख लेगा तो मेरे सिर पर भयंकर आपत्ति आये बिना न रहेगी; किन्तु ऐसी किसी घटना के होने के पहले वहाँ से शिविर उठा लिया गया।

१२वीं अगस्त को सख्त गरमी पड़ रही थी। उसी समय कैदियों ने प्रस्थान किया। कैदी आइवेन के लश्करी सैनिकों के पहरे में चल रहे थे। उसमें एक वृद्धा भी थी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसका किसी से सम्पर्क न था। विषाद की सजीव मूर्ति प्रतीत होती थी। उस पर विशेष पहरा था; किन्तु वृद्धा को इसकी चिन्ता न थी, उसका ध्यान भी इधर न था। उसे सांगरे ध्यान से देख रही थी; किन्तु वृद्धा को उससे कोई आशंका न होती थी। दुर्बल होने पर भी वह चल रही थी।

परन्तु विधि का विधान था कि उस वृद्धा के साथ एक युवती भी चलती थी। उसके चेहरे पर साहसिकता थी और आँखों में विचित्र करुणा थी। वह वारंवार वृद्धा की सहायता करती थी; किन्तु उसकी ओर वृद्धा का ध्यान विशेष रूप से न जा सका। जब वृद्धा थकावट से झुक जाती तब वह युवती उसे पकड़ कर खड़ी करती। ऐसा होने पर भी उनमें कोई बातचीत नहीं हुई।

यह वृद्धा मार्फा थी और युवती, नादिया।

वृद्धा की इस प्रकार चिन्ता रखनेवाली नादिया को इसका पता न था कि यह वृद्धा ही माइकेल की माँ है। इन दोनों की इस प्रकार की अकारण ममता देखकर तातारी सैनिकों के मस्तक भी श्रद्धा से उनकी ओर झुक जाते।

तातारी लोग नादिया को पकड़कर ओमस्क ले गये थे। उसी के साथ मार्फा को भी बन्दिनी बना दिया गया था।

नादिया में साहस और दृढ़ता कूट कूटकर भरी थी। वह किसी आपत्ति से घबरा नहीं सकती थी। तातारियों की कठोरता देखकर वह मन ही मन आग-बबूला हो उठती थी। उसे वारंवार माइकेल की याद आती थी। वह सोचती थी कि क्या माइकेल मर गया होगा? किन्तु तत्क्षण कह उठती कि ऐसा साहसी और परोपकारी व्यक्ति इस प्रकार नहीं मरेगा। लेकिन उसे कहाँ ढूँढ़ा जाय? कभी कभी उसके मन में आता कि मैं माइकेल का बदला लूँ। अथवा वह अपना कर्तव्य बता गया होता तो मैं उसे अवश्य पूरा करती!

वृद्धा ने एक बार नादिया से कहा—"बेटी! तू मेरे लिए जो कष्ट सहती है उसका बदला तुझे ईश्वर अवश्य देगा।"

नादिया ने मार्फा को आपबीती सुना दी। इस प्रकार वह अपना दुःख-भार कम करना चाहती थी।

वृद्धा बोली—"निकोलस कोपनिफ! ओह! मैंने उसके समान साहसी युवक नहीं देखा। तू अच्छी तरह जानती है कि उसका नाम निकोलस कोपनिफ ही है?"

नादिया का चेहरा कुछ उतर गया। वह बोली—"माँ! आप ऐसा क्यों पूछ रही हैं? मुझे विश्वास है कि वह मुझसे झूठ बात न कहेगा और झूठा परिचय नहीं देगा।"

यह सुनकर मार्फा के हृदय को चोट लगी। वह बोली—"बेटी! क्रोध न कर। तूने कहा कि वह इतना साहसी था कि……

"हाँ माँ ! वह असाधारण साहसी था।"

मार्फा मन ही मन बोली—'मेरा पुत्र भी वैसा ही साहसी था।"

फिर उसने नादिया से कहा—"उसे कोई आपत्ति हताश नहीं बना सकती। कोई कष्ट उसे झुका नहीं सकता; किन्तु इसके साथ ही उसका हृदय फूल जैसा कोमल था। यह ठीक है न!"

"हाँ, अक्षर-अक्षर ठीक है।"

"और उसने सिंह की तरह तेरा रक्षण किया!"

"हाँ, माँ!"

मार्फा ने आँखें बन्द करके मन ही मन कहा—"वह मेरा पुत्र है, मेरा ही पुत्र है।"

इसके बाद वह नादिया से बोली—"तूने यह भी बताया कि इशिम स्टेशन पर उसने घोर अपमान सहन कर लिया।"

नादिया कुछ सकुचाकर बोली—"हाँ, माँ!"

"ऐसा अपमान वह क्यों सहन करेगा?" मार्फा की आवाज में कम्प था। उसका शरीर काँप रहा था।

नादिया की आँखों में आँसू छलछला पड़े। वह अवरुद्ध कण्ठ से बोली—"माँ—माँ! उस पर दोष मत लगाओ, उससे घृणा मत करो। ईश्वर जानता है कि उसने क्यों अपमान सहन कर लिया।"

"परन्तु···परन्तु जो व्यक्ति ऐसा अपमान सहन करले उससे क्या तुझे कुछ भी घृणा नहीं हुई ?"

"घृणा ? नहीं, माँ ! मुझे उसके प्रति श्रद्धा हुई ।"

मार्फा कुछ देर चुप रहकर बोली—"क्या उसका शरीर खूब लम्बा था ?"

नादिया बोली—"हाँ, माँ ! सचमुच वे सुडौल हैं ।"

मार्फा अपने भावों पर नियंत्रण न रख सकी । उसने आवेश से नादिया को अपनी छाती से लगा लिया और बोली—"विश्वास कर बेटी ! वह मेरा ही पुत्र है । मैं सच कहती हूँ ।

"हाँ बेटी ! तू अपने सहयात्री की मनोरम कहानी फिर सुना । मुझे उसे सुनने में बड़ा आनंद आता है । क्या उसने अपनी माँ के बारे में भी कुछ कहा था ?"

"हाँ, माँ ! उसने अपनी माँ की बात भी बताई थी । मैंने उससे जिस समय अपने पिता की बात कही थी उस समय उसने अपनी माँ की बात बताई थी । बताते समय उसकी आँखें आँसू से भर गई थीं ।"

"नादिया ! तू सच बता । क्या वह अपनी माँ के प्रति इतना अधिक प्रेम रखता था ? क्या माँ से मिलने के लिए भी उत्सुक था ?"

"नहीं । वह मिलने के लिए उत्सुक नहीं दिखाई देता था ।"

मार्फा रो पड़ी और बोली--"क्या तू सच कहती है कि वह अपनी माँ से मिलने के लिए उत्सुक न था ?"

"हाँ, माँ ! मैं सच कहती हूँ; किन्तु यह सब कर्तव्य के कारण था। हमें उस कर्तव्य का ठीक पता नहीं कि क्या था। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि वह कर्तव्य महत्त्वपूर्ण होना चाहिये। जिस कर्तव्य-भावना से प्रेरित होकर वह माँ से मिलना न चाहता था उसी के वशीभूत होकर वह इर्कुट्स्क जा रहा था। उसके सामने जीवन-मरण का प्रश्न था। फिर भी वह अपने कर्तव्य के प्रश्न को अधिक महत्त्व दे रहा था।"

मार्फा श्वास लेकर बोली--"कर्तव्य ! कर्तव्य ! उसके मन में माँ के प्यार, स्नेह और चुम्बन का कोई मूल्य न था।"

वह विचार-मग्न हो उठी। उसने ध्यान दिया कि ये सारी बातें तो ओम्स्क में देखे हुए उस साइबेरियन युवक में ठीक ठीक मिलती थीं। उसने कर्तव्य के सामने माँ के प्रेम को भी ठुकरा दिया।

वह मन ही मन बड़बड़ाई--"मेरे बेटे ! तू निश्चिन्त रह। मैं किसी प्रकार का विश्वासघात न करूँगी। किसी प्रकार का दुष्ट भी मुझे नहीं डिगा सकेगा। अपने जीवन का बलिदान देकर भी मैं इस बात को स्वीकार न करूँगी कि तू मेरा पुत्र है।"

उस समय वृद्धा ने निकोलस को पार्नफ और माइकेल स्ट्रगफ को एक ही व्यक्ति कहकर नादिया के सामने रहस्य का उद्घाटन

कर दिया होता, किन्तु वह चुप रही। नादिया तो मानती थी कि वह नदी में डूबकर मर गया; किन्तु मार्फा उसके बारे में कह सकती थी कि वह मरा नहीं है, बल्कि उसने ओम्स्क नगर में अपने पुत्र को देखा है। फिर भी मार्फा ने इस विषय में कुछ नहीं कहा—वह चुप रही।

कुछ समय बाद मार्फा बोली—"नादिया ! धैर्य मत छोड़। दो-चार दिन में दुर्भाग्य दूर होगा। जो व्यक्ति तुझे बहिन कहकर आश्रय दे चुका है वह अब भी जीवित है। ऐसे व्यक्ति को भगवान् कदापि अपने पास नहीं बुलाता। बेटी ! निराश मत बन। मुझे अपने पुत्र के लिए किसी प्रकार का दुःख नहीं है।"

(२०)

हजारों कैदी चल रहे थे। उनमें अनेक जाति के लोग थे। सरकार और जनता दोनों के आदमी थे। वे पंक्ति बाँधकर चलते थे। हाथ में, पैर में और कुछ कैदियों की कमर में बेड़ियाँ, कड़ियाँ और जंजीरें बंधी थीं। कैदियों में स्त्री और बालक भी थे। उनके चौकीदार खूब निर्दय थे। पशुओं की भाँति कैदियों को मारा जाता था।

कैदियों की अगली टुकड़ी में माइकेल था। ओम्स्क के कैदी दल में मार्फा और नादिया थीं। इसीलिए वे एक दूसरे को देख न सकती थीं। इन लोगों पर भी अकारण चाबुक पड़ते थे।

उनके आगे खान की सेना थी। सेना के चलने से धूल उड़ती थी, जिसके कारण कैदियों को बड़ी परेशानी थी।

मरुभूमि जैसा रास्ता, कड़ाके की धूप, बराबर चलते रहने के असह्य परिश्रम और व्याकुल कर देने वाली प्यास से कैदियों का बुरा हाल था। अनेक कैदी भूख-प्यास के कारण विक्षिप्त होकर धरती पर गिर पड़ते और मर जाते थे। रक्षक लोग उनके मृत देह वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाते थे।

कैदियों के एक सिरे पर माइकेल था और दूसरे सिरे पर नादिया थी। वृद्धा मार्फा तो नादिया की ही सहायता से रास्ता काट रही थी। माइकेल भी यथाशक्ति दूसरे कैदियों की मदद कर रहा था। यदि कोई कैदी थकावट के कारण गिर पड़ता तो वह उसका हाथ पकड़कर खड़ा करता था।

सन्ध्या समय वे पाबेड़ियारो नाम के गाँव में पहुँचे। यहाँ से ओम्स्क नगर जाने का सीधा रास्ता आरंभ होता था। पास ही टोम नदी थी। पानी देखते ही कैदी मानो पागल बन गये। उनका बस होता तो वे पानी में कूद पड़ते; किन्तु चौकीदारों ने उन्हें रोका। कैदियों में आगे चलने की शक्ति न थी। पानी का प्रवाह जोर से बह रहा था।

गाँव की सारी नावें तट पर मँगा ली गईं इसलिए कैदियों को भागने-कूदने का अवसर नहीं मिला। गाँव के एक भाग में सेना का पड़ाव पड़ा और उससे कुछ दूरी पर पहरा दिया जाने लगा।

माइकेल चुपके से जल-प्रवाह में डुबकी लगाकर भागने का विचार कर रहा था।

खान को टोम्स्क के नगर तक पहुँचाकर आइवेन वापस आया। दूसरे दिन खान खूब ठाटबाट से बादशाह के रूप में प्रवेश करने वाला था।

सूर्य अस्त हो गया। भूख और प्यास से त्रस्त कैदी व्याकुल हो उठे। अचानक उन्हें पानी देने का प्रबन्ध हुआ। नादिया भीड़ को चीरती हुई मार्फा को लिए हुए पानी के पास पहुँची। उसने अंजुली भरकर मार्फा को पानी पिलाया और फिर स्वयं पिया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो नवजीवन का संचार हो रहा है।

पानी पीने के बाद नादिया खड़ी हो गई। वह एक आदमी को देख कर चौंक उठी—वह माइकेल था। सन्ध्या की लाल किरणें माइकेल के शरीर पर पड़ रही थीं।

नादिया चिल्ला उठी। माइकेल चौंक पड़ा। उसने गर्दन फिरा कर देखा तो थोड़ी ही दूरी पर स्नेहमयी नादिया दिखाई दी—विचित्र आकस्मिक मिलन। माइकेल को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपने पर नियंत्रण नहीं रख सकेगा, इसलिए तुरन्त ही अपना मुख दोनों हाथों से छिपा कर आँखें बन्द कर लीं और जल्दी कदम बढ़ाता वहाँ से चल पड़ा।

नादिया उत्तेजित हो उठी। उसकी इच्छा थी कि दौड़कर माइकेल से लिपट पड़े; परन्तु मार्फा ने उसे रोका और धीरे से कान में कहा—"बेटी! धीरज रख! पागल न बन!"

"माँ-माँ" आनंदावेश में नादिया बोल उठी--"वह जीवित है--वह जीवित है।"

"हाँ बेटी! वही मेरा माइकेल है। देख, मैं माँ होकर भी उससे मिलने के लिए नहीं दौड़ती। तुम्हें भी वहाँ नहीं जाना चाहिए।"

माइकेल के हृदय में भी एक तूफान मचा था। उसकी माँ और नादिया दोनों यहीं थे--कैसा दुर्भाग्य? वह सोचने लगा कि क्या नादिया से माँ ने सच्ची बातें बता दी होंगी? यदि माँ ने उसको रोका न होता तो वह जरूर मुझसे लिपट पड़ी होती। अब उसे विश्वास हो गया कि मार्फा ने नादिया से सब बातें बता दी होंगी। उसका मन भी उन दोनों से मिलने को तरस रहा था, फिर भी उसकी बुद्धि ऐसा करने से रोकती थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि थोड़ी सी असावधानी से महान् संकट उपस्थित हो जायगा।

पन्द्रह मिनट बाद जिप्सी साँगरे आइवेन के शिविर में पहुँची। आइवेन ने पूछा--"क्या समाचार है साँगरे!"

साँगरे बोली--"मार्फा का पुत्र माइकेल इन कैदियों में ही छिपा हुआ है।"

"क्या वह भी कैदी है?"

"हाँ।"

"अरे! ऐसी बात!"

"आइवेन ! तुझे कुछ भी पता नहीं है। तू उसे देखने पर भी पहचान नहीं पाता है।"

"लेकिन तू तो उसे पहचानती है। फिर क्या चिन्ता ? क्या तुमने उसे देखा है ?"

"नहीं। मैंने उसे नहीं देखा। मैं मार्फा के हाव-भाव से कह रही हूँ।"

आइवेन ने कहा—"तू कहीं धोखा तो नहीं खाती है ?"

"नहीं आइवेन !"

"तू कहती है कि उसे देखा नहीं है। तब फिर उसे हजारों कैदियों में कैसे ढूँढ़ा जाय ?"

साँगरे ने आइवेन की ओर देखा। उसकी दृष्टि में क्रूर आनन्द की चमक थी। वह बोली—"यह ठीक है कि मैं उस युवक को नहीं पहचानती, किन्तु उसकी माँ तो पहचानती ही है। उस वृद्धा से ही भेद खुलेगा और मैं ही यह कार्य करूँगी। देखती हूँ कि वह बुड्ढी क्या करती है।"

आइवेन के मुख पर भी एक क्रूर हास्य दौड़ गया।

१६वीं अगस्त को आइवेन एक सैनिक दल लेकर कैदियों के शिविर की ओर गया। उसका चेहरा मलीन और क्रूर था। यह नहीं बताया जा सकता कि उसके हृदय में क्या भाव थे।"

माइकेल ने उसको आपत्ति की घटा के समान समझा। आइवेन घोड़े से नीचे उतरा। उस समय वहाँ साँगरे भी

उपस्थित थी। उसने आइवेन की ओर देखकर कहा—"कोई विशेष समाचार नहीं है।"

आइवेन व्यग्र हो उठा। उसने एक अफसर को संकेत किया। कैदियों में कोलाहल मच गया। सैनिक कैदियों पर हिंसक पशु की भाँति टूट पड़े। चाबुकों की झड़ी बरसने लगी। भालों की नोकों से काम लिया गया। कुछ ही देर में बैठे हुए कैदी खड़े हो गये। वे थर-थर काँप रहे थे। उनके चारों ओर सशस्त्र पुलिस खड़ी थी।

कुछ समय बाद कोलाहल शान्त हुआ। आइवेन के मूक संकेत से जिप्सी साँगरे मार्फा की ओर बढ़ी। मार्फा ने नादिया की ओर देखा। उसके चेहरे पर अवज्ञा का हास्य फड़क रहा था। उसने माथा झुकाकर कहा—"बेटी! तू ऐसा भाव धारण कर ले मानो मुझे बिल्कुल पहचानती नहीं है। एकदम अपरिचित बन जा। यदि मुझ पर अत्याचार की झड़ी अथवा जुल्म के बादल भी बरस पड़ें तो तू मुख से ममता का एक शब्द भी मत निकालना। याद रख! यह कार्य मेरे लिए नहीं; अपितु मेरे पुत्र के लिए है। तू इस बात को मत भूल कि तेरे आश्रयदाता का जीवन इसी पर अवलम्बित है। बेटी!"

जिप्सी साँगरे ने मार्फा के पास आकर उसकी गर्दन पर हाथ रखा। मार्फा बोली—"क्या बात है? क्या मुझसे कुछ कहना है?"

साँगरे ने व्यंगपूर्ण शब्दों में कहा—"हाँ—हाँ। यहाँ आ।" ऐसा कहकर उसे घसीटकर आइवेन के पास ले गई।

मार्फा को देखते ही आइवेन का क्रोध दुगुना हो गया। उसने कठोर स्वर में कहा—"तेरा ही नाम मार्फा स्ट्रगोफ है ?"

"हाँ।" मार्फा ने शान्ति से उत्तर दिया।

"तुझे तीन दिन पहले की बात तो याद है न! तुझसे जो बात ओम्स्क नगर में पूछी गई थी उसका उत्तर दे। बोल, क्या तू उत्तर देने को तैयार है ?"

"नहीं।"

"तेरा पुत्र माइकेल रूस का राजदूत है। क्या तुझे इस बात का पता है ?"

"नहीं। मैं नहीं जानती।"

"क्या तूने ओम्स्क में जिसे पुत्र कहकर पुकारा था वह तेरा पुत्र नहीं है ?"

"नहीं। वह मेरा पुत्र नहीं है।"

"तुझे उसको फिर दिखाया जाय तो क्या पहचान सकेगी ?"

"नहीं।"

सभी लोग मार्फा के इस साहस और निर्भयता को देखकर अवाक् थे। सबको ऐसा प्रतीत हुआ कि यह वृद्धा दृढ़ प्रतिज्ञ है। उसकी इच्छा के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं जाना जा सकता।

आइवेन क्रोध से आग-बबूला हो गया। एक तीखी नजर से देखकर बोला—"बुड्ढी ! तेरा पुत्र इन कैदियों में ही छिपा है। तुझे ही उसको ढूँढ़ निकालना है।"

"कदापि नहीं। मुझसे यह संभव नहीं।"

"देख ! तू अच्छी तरह विचार कर ले। सभी कैदियों को पंक्तिबद्ध खड़ा रखा जायगा। उसमें से तुझे माइकेल को ढूँढ़ निकालना पड़ेगा। यदि तू ऐसा नहीं करेगी तो भयंकर दण्ड पावेगी।"

वृद्धा मूक बनी रही। उसके चेहरे पर भय का कोई चिह्न न दिखाई देता था। आइवेन समझ गया कि सचमुच वृद्धा अदमनीय है। वह अत्याचार से डरने वाली नहीं है। इसलिये इसपर ऐसा अत्याचार करना चाहिये; जिसे देखकर माइकेल स्वयं उसे बचाने को दौड़ पड़े। पुत्र को अपनी दृष्टि के सामने देखकर वृद्धा का भाव जरूर बदल जायगा। आइवेन की धारणा थी कि जार के राजदूत के रूप में काम करने वाले माइकेल के पास कोई गुप्त सन्देश-पत्र अवश्य होगा। उसी सन्देश-पत्र को लेने की इच्छा उसे सता रही थी।

आइवेन ने कहा—"एक एक कैदी को मार्फा के सामने बारी बारी से लाया जाय।"

मार्फा अविचल भाव से खड़ी थी और पत्थर की मूर्ति की भांति निश्चल थी। उसकी आँखों में उदासीनता भरी

थी। इतना होने पर भी मुख के भाव में कोई सामान्य परिवर्तन भी न दिखाई देता था।

प्रत्येक कैदी को बारी बारी से लाया गया।

माइकेल का मन खूब स्थिर था। उसके चेहरे पर परिवर्तन की कोई भाव-रेखा न थी। उसके चलने में दृढ़ता थी। वह दोनों हाथों की मुट्ठियाँ बाँधकर निर्भयता से चलता था। अन्त में माँ और बेटे की इस दृढ़ता की विजय हुई। आइवेन की कामना सफल न हुई। सभी कैदी मार्फा के सामने से गुजर गये।

जिप्सी साँगरे क्रोध से लाल अंगारा बन गई। वह बोली—"अब बिना कोड़े के काम न चलेगा।"

आइवेन बोला—"हाँ। बिना कोड़ा खाये वह बुड्ढी नहीं मानेगी। इस पर कोड़े फटकारो।"

मार्फा को कोड़ों की भयंकरता का पता था। उसे यह भी मालूम था कि कितने ही आदमियों को कोड़े से मार डाला गया है। दो सैनिकों ने मार्फा का हाथ पकड़ लिया। उसे जबर्दस्ती से घुटने के बल बैठाया गया। उसकी पीठ उघाड़ दी गई।

एक तातारी जल्लाद कोड़ा लेकर मार्फा के पास आया। अब केवल आदेश की ही देर थी। आइवेन घोर स्वर से बोला—"चलाओ।"

कोड़ा हवा में ऊँचे उठा। मार्फा की पीठ पर कोड़ा पड़ने के पहले ही जल्लाद के हाथ पर किसी का हाथ पड़ा। वह माइकेल का ही हाथ था। माइकेल अपनी स्थिति को सोचे-समझे बिना ही जल्लाद पर टूट पड़ा था।

इशिम स्टेशन पर आइवेन ने उसका घोर अपमान किया था। उसने उसका प्रत्युत्तर न दिया था; किन्तु आज वह अपनी माता का यह अपमान न सहन कर सका। आइवेन का उद्देश्य सफल हो गया। वह बोला—"क्या तू ही माइकेल स्ट्रगोफ है ? तू ही इशिम स्टेशन पर भी था न ?"

"हाँ। मैं वही हूँ।" इतना कहकर माइकेल ने हवा में घुमाकर आइवेन के मुँह पर जोर से कोड़ा मारा।

इससे जोर का कोलाहल मचा। सैनिक माइकेल पर टूट पड़े। कुछ तलवारें उसके माथे पर खींच ली गईं। कोड़े की कड़ी चोट से, अपमान और क्रोध से विक्षिप्त बना हुआ आइवेन बोला—"इसको मत मारो। स्वयं खान ही इसे दण्ड देंगे। इसकी जाँच करो। देखो, इसके पास क्या मिलता है ?"

माइकेल के लिए अब कोई उपाय नहीं था। उसने अपने पाकिट से जार की मुहर वाला पत्र निकाला; किन्तु उसे फाड़ने का समय नहीं मिला। सरकारी सन्देशपत्र आइवेन के हाथ में आ गया।

इधर हेरी और जोलिवेट भी टोम्स्क के नगर तक नहीं पहुँच सके थे। इसलिए वे जांबेडियारो की छावनी में चुपचाप

बंठकर अनुकूल अवसर की बाट देख रहे थे। उन्होंने इस दृश्य को आँखों के सामने देखा।

जोलिवेट ने हेरी से कहा—"यह चाहे कोपनिफ हो या माइकेल स्ट्रगफ हो; किन्तु सचमच बहादुर है। वाहरे साइबेरियन जवान!"

"बिल्कुल ठीक है। यह समाचार हमारे समाचार-पत्र के लिए खूब सनसनीखेज होगा।" हेरी ने कहा।

जोलिवेट ने कहा—"देखो!, आइवेन के गले पर कोड़े की निशानी (साट) उभर आई है।"

आइवेन की गर्दन से रक्त टपक रहा था, फिर भी वह सन्देश-पत्र पढ़ने में मग्न हो गया था। उसे पढ़ने के बाद उसने टोम्स्क की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया।

रणसिंगा बज उठा। माइकेल के चारों ओर पहरे का प्रबन्ध हुआ। उसके हाथ-पैरों में बेड़ियाँ पड़ी थीं। ऐसी हालत में भी वह मतवाला बना हुआ चल रहा था।

(२१)

टोम्स्क नगर सन् १६०४ में बसा था। यह साइबेरिया के मध्य भाग में स्थित है। इसके एक ओर टोल्स्क और दूसरी ओर इर्कुट्स्क हैं।

टोम्स्क नगर राजधानी न होने पर भी समृद्ध था और उल्लेखनीय था। इसके चारों ओर अल्ताई पर्वत की श्रेणियाँ थीं। इस पर्वत की एक श्रेणी चीन की सीमा तक जाती है।

इसी पर्वत से टोन नदी निकलती है। नदी का मार्ग समतल भूमि वाला है। उसमें सोना, चाँदी, प्लेटीनम आदि बहुमूल्य खनिज पदार्थ मिलते हैं। इसी कारण यह नगर समृद्ध है। इस नगर में लखपतियों और करोड़पतियों की संख्या काफी थी। वे लोग खनिजों के बाहुल्य से ही धनवान् बने थे।

खान ठाट बाट से टोम्स्क नगर में प्रवेश करने वाले थे। इसके लिए सारी पूर्व तैयारी हो चुकी थी। नाच-गाने हो रहे थे, दावत की योजना की गई थी। नगर पास ही दिखाई दे रहा था। वहाँ के सुन्दर, भव्य भवन और ऊँची मीनारें आकाश से बातें कर रहीं थीं। फब्बारे चल रहे थे।

समतल भूमि के पास एक स्थान पर एक नये ढंग का महल बना था। इस महल के अन्दर ही खान का दरबार होने वाला था। अमीर के साथ अधिकारी, दरबारी, अन्य अतिथि तथा रक्षक भी उपस्थित रहने वाले थे।

प्रभात हुआ। खान खूब ठाट बाट से नगर में प्रवेश करने के लिए चले। वे एक सुन्दर तेज घोड़े पर बैठे थे। दोनों ओर सशस्त्र अंग-रक्षक थे। खान को नमस्कार करके सरकारी कर्मचारियों ने आगे जाने का रास्ता बताया। खान के सिंहासन के सामने एक मेज पर कुरान का ग्रन्थ रक्खा था। सिंहासन पर बैठने के बाद खान ने कुरान को आदरपूर्वक अपने मस्तक पर लगाया।

थोड़े समय बाद आइवेन आ पहुँचा। सैनिकों ने हर्षनाद

किया। माइकेल की कोड़े की चोट के कारण उसका गला कुछ फूल आया था।

खान ने शान्त भाव से आइवेन का सत्कार किया। उस समय वे संवाददाता परस्पर बातचीत करने के उद्देश्य से घूम रहे थे। वे सेना के साथ थाबेडियारो से यहाँ आये थे। रास्ते में उन्होंने तातारियों की निर्दयता भी प्रत्यक्ष देखी थी और भीषण अग्निदाह, लूट-खसोट तथा भयंकर हत्याकांड देख लिया था। यह देखकर वे काँप उठे थे। इसलिए वे दोनों इन लोगों से अलग जाकर रूसी सेना में मिल जाना चाहते थे।

जोलिवेट ने हेरी से कहा—"चाहे कुछ भी हो; किन्तु आइवेन का सम्मान-समारोह देखे बिना हमें यहाँ से रवाना नहीं होना चाहिए।"

हेरी को भी यह बात पसन्द आई। उसने सोचा कि यह कार्यक्रम एकाध घण्टे में समाप्त हो जायगा। उसके बाद वे तातारी सेना छोड़कर इर्कुट्स्क को रवाना हो जायेंगे।

वे दोनों खान का ठाट बाट देखकर चकित हो उठे और मन ही मन समारोह की प्रशंसा करने लगे, किन्तु आइवेन के आते ही ये दोनों एक ओर खिसक गये और चुपचाप उत्सव देखने लगे।

जोलिवेट बोला—"अच्छा, अब चुप रहो। नाटक का पहला अंक आरंभ होता है।"

नाटक का प्रथम अंक आरंभ हुआ। उसमें विषाद और

विवशता थी। अनेक विवश कैदियों ने खान के सामने दीन भाव से मस्तक झुकाया और बोले—"महामहिम ! विश्व के सम्राट् ! दया के सागर !"

कैदियों की प्रथम पंक्ति में माइकेल था। आइवेन के आदेशानुसार सैनिकों की एक टुकड़ी उसके आसपास खड़ी थी। वृद्ध मार्फा भी थी; किन्तु उसे आपत्तियों की चिन्ता न थी। हाँ, इस समय उसका मन आशंका से अभिभूत था। वह विचार कर रही थी कि ओह ! मुझे क्या क्या देखना पड़ेगा ? पुत्र-प्रेम से उसका हृदय काँप रहा था। उसे आइवेन से दया पाने की संभावना न थी। माइकेल ने आइवेन के गले पर इतने जोर का कोड़ा मारा था कि उसका बदला लिये बिना उसको चैन नहीं था। वह माइकेल पर भयंकर से भयंकर अत्याचार करने को तैयार था।

मार्फा मन में सोचती कि मेरे ही कारण माइकेल की यह दशा हो रही है। यदि मैंने ओमस्क में स्वयं पुत्र को देखकर पुत्र कह कर न पुकारा होता तो यह दशा न होती। मैंने अपने भावों पर नियंत्रण नहीं रखा। उसी का परिणाम सामने आया है।

माइकेल चिन्तित था। उसके मन में इस बात का संताप सता रहा था कि आइवेन मा और नादिया पर क्रूर अत्याचार की झड़ी लगाये बिना नहीं रहेगा। नादिया का मन भी दुश्शंका से आलोड़ित था। किन्तु वह बेचारी कर ही क्या

सकती थी ? वह समझती थी कि शिकारी के जाल में सिंह फँस गया है। यदि ईश्वर सहायता करे तो वह अवश्य सिंह को जाल से बाहर निकालेगी। इस कार्य में वह प्राणाहुति देने को भी तैयार थी। इसलिए ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करने लगी।

आदेशानुसार प्रत्येक कैदी ने खान को नमन किया। यदि कोई कैदी नमस्कार करने में आनाकानी करता तो सैनिक चाबुक मारकर उससे जबर्दस्ती नमस्कार कराते थे।

इस अनुचित व्यवहार से हेरी और जोलिवेट क्रोध से अभिभूत हो उठे। जोलिवेट बोला—"देखो, कैसा निष्ठुर व्यवहार है ? असहाय ! ओह ! हम लोगों से यहाँ देर तक नहीं रहा जायगा।"

"उँह ! अभी नाटक का अन्त बाकी है।" हेरी ने कहा।

"अब क्या देखना है ?"

"ओहो !" जोलिवेट ने हेरी के दोनों हाथ पकड़े।

"अरे ! आप क्या करते हैं ?" जोलिवेट ने पूछा।

"इस युवती को देखो।"

"अरे, यह तो वह...।"

"पहिचानी भी नहीं जाती। हमारे सहयात्री कोपनिफ की बहन है। यह भी कैद में पड़ गई है ?"

दोनों उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगे।

अब नादिया की बारी आई। वह आगे बढ़ी। उसकी ओर किसी की दृष्टि न थी। उसके लम्बे लम्बे सूखे केश ललाट पर बिखरे थे। इसलिए कोई उसके भाव को न समझ सका। उसके पीछे मार्फा थी। उसने खान के सामने मस्तक नहीं झुकाया। सैनिक ने उसकी गर्दन पर प्रहार किया। वह जोर से धरती पर लुढ़क पड़ी।

माइकेल ने वहाँ जाने का प्रयत्न किया; किन्तु सैनिकों ने उसे रोक लिया। मार्फा बैठ गई। सैनिक उसे घसीटने को तैयार हुए; किन्तु आइवेन के रोकने से वे शान्त हो गये।

अब माइकेल की बारी आई। उसे घसीट कर खान के सामने लाया गया। उसने अपना मस्तक झुकाने का कोई भाव व्यक्त नहीं किया।

"मस्तक झुका!" आइवेन ने सत्तापूर्ण स्वर में कहा।

माइकेल ने दृढ़ता से कहा—"कदापि नहीं।"

दो सैनिक आगे आये। माइकेल ने बेड़ियों से जकड़े हुए अपने दोनों हाथ जोर से उनके सिर पर दे मारा। वे दोनों धरती पर लुढ़क पड़े।

आइवेन ने क्रोध से कहा—"मृत्युदण्ड..."

माइकेल ने उत्तर दिया—"मैं मृत्यु से नहीं डरता; किन्तु तेरे मुख पर विश्वासघात का जो कलंक लगा है वह मेरी मृत्यु से नष्ट नहीं होगा।"

इस अपमान से आइवेन के चेहरे पर कालिख पुत गई।

"रूस का गुप्तचर" आइवेन कठोर स्वर से बोला।

आइवेन को पता था कि गुप्तचर के विरुद्ध खान का क्या आदेश मिलने वाला है।

सैनिकों की पंक्ति को चीरते हुए माइकेल ने दो कदम आइवेन की ओर बढ़ाये। उसी समय खान का हाथ ऊपर उठा। चारों ओर सन्नाटा छा गया। सैनिक विस्मय से देखने लगे। सब अवाक् रह गये।

खान ने कुरान के पृष्ठ उलटने शुरू किये। उनकी उँगली एक पृष्ठ पर रुकी। उसमें लिखा था—"उससे दुनिया की कोई वस्तु देखी नहीं जा सकती। उसे किसी बस्तु को देखने का अधिकार नहीं है।"

वे जोर से बोल उठे—"ओह! रूस का गुप्तचर! तू तातारी सेना का भेद जानने आया है? बहुत अच्छा! तुझे भी पता लगेगा कि इसका दंड.......।"

(२२)

खान ने अपना हाथ कुरान से हटाकर कहा—"तुझे जो कुछ देखना हो उसे देख ले। फिर तू कुछ नहीं देख सकेगा।"

खान के मुँह पर क्रूर हास्य चमक उठा।

जोलिवेट ने हेरी के कान म कहा—"देखो, देखो! वास्तविक अभिनय का आरंभ अब होता है।"

महल के सामने के मैदान में नर्तकियाँ आ गईं। उनके पास तन्तुवाद्य के साथ संगीतकार बैठ गये। वाद्य बजने लगे। संगीत की मीठी स्वरलहरी हवा में गूँजने लगी। नर्तकियाँ नाचने लगीं।

नर्तकियाँ अत्यन्त सुन्दर थीं। उन्होंने मणि-मुक्ता-युक्त आभूषणों को धारण किया था। कान में सुवर्ण के कर्णफूल थे। पैर में नूपुर और गले में मोती की मालाएँ थीं। नृत्य का दृश्य रमणीय था। ऐसा कमनीय दृश्य नेत्रों के सम्मुख झूल रहा था मानो स्वर्ग की अप्सराएँ धरती पर आ गई हों।

अचानक नृत्य रुक गया। उसके साथ घृणा और धमकी मिश्रित स्वर सुनाई दिया:—"देख ले, देख ले...।"

माइकेल ने देखा कि एक प्रचण्ड शरीर वाला तातारी जल्लाद उसे डरा रहा था। उसके बाद दूसरी नर्तकियों का एक दल आया।

उन्हें देखकर हेरी तुरन्त बोल उठा—"अरे! यह तो निजनी नोवोगोरोड का वह जिप्सी दल ज्ञात होता है।"

जोलिवेट बोला—"हाँ, ये जिप्सी नर्तकियाँ ही प्रतीत होती हैं।"

"ये खान की जासूसी करने में उस्ताद दिखाई देती हैं।"

साँगरे भी वहाँ उपस्थिति थी। वह सुन्दर दिखाई देती थी और पत्थर की मूर्ति की भाँति स्थिर खड़ी थी।

जिप्सी नर्तकियों ने नृत्य आरंभ किया। उनके नृत्यों में अनेक देशों की नृत्यप्रणालियों का सम्मिश्रण था। खान और सैनिक नृत्य देखने में तल्लीन हो गये।

यह देखकर जोलिवेट ने हेरी के कान में कहा—"तुमने देखा कि ये तातार लोग नृत्य के कैसे रसिक हैं?"

"यही देखने का समय है। फिर तुझे कुछ देखने को नहीं मिलेगा।"

जल्लाद हाथ में तलवार लेकर खड़ा हुआ।

दिन बीत गया। सूर्य पश्चिम में डूबने लगा। धीरे-धीरे अन्धकार फैलने लगा। क्रम क्रम से पाइन और देवदार के सघन वन अन्धकार के परदे में छिपने लगे। टोम नदी की जलधारा पर अन्धकार छा गया। सैकड़ों मशालें एक साथ जल उठीं। साँगरे ने नर्तकियों को कुछ और आगे ले लिया—खान के सिंहासन के पास। पुनः नृत्य होने लगा।

कुछ देर बाद खान ने हाथ उठाकर नृत्य बन्द करने का संकेत किया।

इस समय माइकेल एक बहादुर आदमी की तरह खड़ा था। वह खान की क्रुद्ध आँखों की ओर देखने लगा; किन्तु

जिस समय उसने आइवेन की ओर दृष्टि फेरी उस समय उसका मन घृणा से घुटने लगा। उस समय माइकेल के सामने मृत्यु खड़ी थी फिर भी उसके मन में भय की भावना न थी।

खान क्रोध से काँप रहा था। उसने दाँत पीसते हुए कहा—"गुप्तचर! क्या तू मेरा भेद जानने आया था? अच्छा, अब अन्तिम बार तुझे जो देखना हो उसे देख ले। एक ही क्षण बाद तेरी आँखों की ज्योति सदा के लिए बुझ जायगी।"

यह कैसे दुर्भाग्य की बात थी। मृत्यु से भी भयंकर थी। संसार में भला अन्धे लोगों से भी विशेष दुखी कौन होगा?

माइकेल दृढ़ था। खान की धमकी उसे अपने मार्ग से डिगा न सकी। उसके लिए खान से क्षमा माँगने की बात असंभव थी। उसे क्षमा माँगने की अपेक्षा मर जाना विशेष प्रिय था। यदि वह संसार में जीना चाहता था तो अपनी माँ के लिए—नादिया के लिए भी। ये दोनों उसे बारंबार याद आती थीं। इतना होने पर भी उसने चिन्ता का आभास अपने मुख पर न आने दिया।

अचानक माइकेल के मन में बदला लेने की लिप्सा जाग उठी। मुख पर घृणा का भाव लक्षित हो उठा। उसने गरज कर कहा—"आइवेन! विश्वासघातक आइवेन! याद रख। मेरा अन्तिम ध्येय बदला लेना है।"

आइवेन अज्ञात भय से काँप उठा।

यद्यपि माइकेल की यह धमकी निरर्थक थी। कुछ ही क्षण बाद उसकी आँखों की यह ज्योति बुझ जाने वाली थी। अन्ध जीवन में भला वह आइवेन का क्या बिगाड़ सकेगा ?

उसी समय मार्फा भी माइकेल के पास आ गई। वह अपने आंतरिक भावों को न दबा सका और आवेश में बोला—"माँ—माँ—माँ" किन्तु इतना बोलने के बाद वह रुक गया। उसे आगे बोलने के लिए कोई शब्द मिलता ही न था। मानो उसकी बोलने की शक्ति को लकवा मार गया। फिर भी दूसरे ही क्षण मानो उसकी किसी आन्तर-शक्ति ने धक्का मारा और वह बोला—"माँ, प्यारी माँ ! एक बार तू मेरी आँख के सामने खड़ी रह। मैं तुझे तृप्ति होने तक अपनी आँखों से देख लूँ। मैं इस शैतान को देखकर अपने नेत्रों को कलुषित करना नहीं चाहता।"

यह कहकर वह अपनी माँ की मधुर मूर्ति को देखने लगा। मार्फा के मुँह से एक शब्द भी न निकला। वह पत्थर की मूर्ति की तरह माइकेल के सामने खड़ी रही।

आइवेन ने कहा—"इस बूढ़ी को यहाँ से दूर हटाओ।"

दो सैनिक आगे आये, किन्तु उनके आने के पहले ही मार्फा दो कदम पीछे हट गई। वह दूर से माइकेल को देखने लगी। माइकेल की आँखें अश्रुसिक्त हो उठीं।

पास ही एक गड्ढे में आग सुलग रही थी। उसी अग्नि में जल्लाद अपनी तलवार तपा रहा था। तलवार थोड़ी ही देर में लाल हो गई। माइकेल उसे देखकर भी विचलित न हुआ। उसकी दृष्टि तो अपनी माता पर टिकी थी। वह अन्तिम बार माँ को ध्यान से देख लेना चाहता था। माँ भी पुत्र को स्नेह भरी दृष्टि से देख रही थी।

अन्त में उसने अपने दोनों हाथ फैलाकर कहा—"बेटा! मेरा प्यारा बेटा!"

जल्लाद ने अग्नि से तलवार निकाली। तलवार की धार चमक रही थी। उसने बिना एक क्षण बिलम्ब किये तपी हुइ तलवार की धार को माइकेल की आँख पर रख दिया। माइकेल अन्धा बन गया—दृष्टिहीन बन गया।

सभा समाप्त हुई। खान अपने मंत्रियों के साथ वहाँ से चला गया। आइवेन धीरे धीरे आगे बढ़ा। उसके हर कदम में विजय का नशा छाया था। वह माइकेल के पास होता हुआ दूर चला गया।

माइकेल वहाँ अकेला खड़ा रहा। उससे थोड़ी दूर पर उसकी माँ मृतप्राय अवस्था में पड़ी थी। मानो उसकी सारी चेतना हत हो गई हो। तातारी सेना आनंदित होकर वहाँ से नगर की ओर चल पड़ी। समस्त वातावरण में शान्ति छा गई।

माइकेल को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अभी धरती पर

लुढ़क पड़ेगा। वह मन ही मन बोला—"माँ, माँ, क्या तू अपने अभागे बेटे की बात सुनने के लिए जीवित है?"

इसका कोई उत्तर नहीं मिला। माइकेल माँ के पास आ पहुँचा। इतने में वहाँ नादिया आ गई। उसने माइकेल के हाथ के बन्धन तोड़ डाले और कहा—"भैया?"

"कौन? नादिया!"

"हाँ भैया! आप कोई चिन्ता मत कीजिये। मैं आपकी आँखों की ज्योति बनूँगी। मेरा हाथ पकड़ लीजिये। मैं आपको इर्कुट्स्क ले चलूँगी।"

(२३)

माइकेल और नादिया दोनों चल दिये। दोनों टोम के किनारे किनारे आगे बढ़ रहे थे।

टोम्स्क नगर से इर्कुट्स्क नगर जाने का मार्ग सीधा था। उस मार्ग पर कोई भय न था। विद्रोही लोग नगर में खाने-पीने में मस्त थे। वे प्रातःकाल प्रस्थान करने वाले थे। यही समय उन्हें योग्य प्रतीत हो रहा था।

माइकेल और नादिया सेमिलेस्को नगर में पहुँचे। वह नगर जन-विहीन प्रतीत हो रहा था। आक्रमण के भय से बहुत से लोग नगर छोड़कर भाग गये थे। उस समय माइकेल और नादिया दोनों भूख-प्यास से विह्वल हो रहे थे।

इसलिये वे दोनों नगर के कोने के एक खाली मकान में आराम करने लगे।

मकान खाली था। उसके दरवाजे खुले थे। अन्दर एक बेंच पड़ी थी। दोनों उसपर चुपचाप बैठ गये। नादिया एक करुणाभरी दृष्टि से माइकेल की ओर देखा। उसने ऐसी दृष्टि से उसे पहले कभी नहीं देखा था।

इतने में माइकेल बोला—"नादिया! तू कहाँ है?"

"यहीं हूँ माइकेल! आपके पास बैठी हूँ।"

आज उसने पहली बार ही माइकेल का नाम लिया। अपना नाम सुनकर वह चौंक उठा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि नादिया उसके बारे में सब कुछ जान गई है। उसने कुछ देर शान्त रहकर कहा—

"हम लोगों को एक दूसरे से पृथक् होना पड़ेगा।"

"अलग होना पड़ेगा! यह आप क्या कह रहे हैं भैया?" नादिया बोली।

"मेरी चिन्ता मत कर बहन! इर्कुट्स्क में तेरे पिता रास्ता देख रहे होंगे। तुझे वहाँ पहुँचना चाहिए।"

नादिया बोली—"यदि मैं आपको आधे रास्ते में छोड़-कर चली जाऊँ तो मेरे पिता मुझे कदापि क्षमा न करेंगे। आपने मेरे लिए कैम दुःख नहीं सहा है।"

माइकेल बोला—"तुझे अपने पिता की स्थिति का भी विचार करना चाहिए।"

नादिया ने उत्तर दिया—"माइकेल ! इस समय आपको ही मेरी सबसे अधिक आवश्यकता है—पिता से भी अधिक। क्या आपने इर्कुट्स्क जाने का विचार स्थगित कर दिया है?"

"नहीं।" माइकेल ने कहा।

"किन्तु आपके पास अब सन्देश-पत्र तो नहीं है।"

"इतना होने पर भी मैं इर्कुट्स्क जाना चाहता हूँ। मैंने यहाँ पर जो कुछ देखा है उसकी जानकारी देना चाहता हूँ। मुझे आइवेन से बदला लेना है। मैं उससे पहले इर्कुट्स्क जाना चाहता हूँ।"

"तो आप मुझसे पृथक् होने की बात क्यों कहते हैं?"

माइकेल ने कुछ देर शान्त रहने के बाद कहा—"किन्तु नादिया ! उस शैतान ने मेरा सर्वस्व लूट लिया है। उसका...?"

नादिया बोली—"मेरे पास कुछ रूबल बचे हैं और मेरी दोनों आँखें सलामत हैं। आप मेरी चिन्ता मत कीजिए।"

"हम लोग किस तरह वहाँ पहुँच सकेंगे?"

"क्यों? पैदल चलेंगे।"

"किन्तु क्या खाकर दिन बितायेंगे?"

"भिक्षा माँगकर भैया!" नादिया बोली।

"बहुत अच्छा बहिन! चलो।"

नादिया ने माइकेल का हाथ पकड़कर कहा—"चलो।"

पुनः कठिन यात्रा आरंभ हुई। नादिया में उत्साह का

आधिक्य प्रस्फुटित हो रहा था। यदि माइकेल की आँखें होतीं तो वह भी उसका उत्साह देखकर अवाक् हो जाता। नादिया शान्त थी और मुंह से एक शब्द भी न बोलती थी।

माइकेल के मन में कुछ नवीन भावनाएँ जागरित हो चली थीं। उसने नादिया का हाथ किसी अन्यमनस्क भाव से पकड़ा था। वह अपने मन के भावों को व्यक्त करना न चाहता था। कभी वह नादिया के मुख का भाव जानने की इच्छा करता था; किन्तु अन्धा आदमी! दृष्टिहीन आदमी। क्या देख सकता है?

एक बार माइकेल ने पूछा—"नादिया! क्या रास्ते में कोई है?"

"नहीं भैया! एक प्राणी भी दिखाई नहीं देता।"

"तो पीछे की ओर से किसकी आवाज आ रही है? क्या कोई शत्रु है? यदि शत्रु हो तो हमें यहीं कहीं छिप जाना चाहिए। मनुष्य को समय पर सावधान हो जाना चाहिए।"

नादिया ने आवाज सुनने का प्रयत्न किया। इसके बाद उसने माइकेल से कहा—"भैया! एक व्यक्ति गाड़ी हाँकता हुआ इसी ओर आ रहा है।"

"गाड़ी में दूसरा कौन है?"

"कोई नहीं।"

माइकेल ने सोचा कि यदि एक व्यक्ति है तो वह कोई

ग्रामवासी होना चाहिए। यदि गाड़ी के अन्दर बैठने को जगह हो तो नादिया उसमें बैठ जाय। मुझे अपनी कोई चिन्ता नहीं है।

कुछ ठहर कर उसने नादिया से कहा—"तो कोई डर नहीं है नादिया! वह कोई ग्रामवासी है, जो शत्रु के भय से नगर छोड़कर भाग रहा है। कुछ ठहरकर देखें कि क्या है?"

कुछ ही देर बाद गाड़ी वहाँ आ पहुँची। वह कुछ टूटी-फूटी दशा में थी। इस गाड़ी का नाम किबिनका था। उसमें एक रूसी युवक बैठा था। वह धीरे धीरे गाड़ी हाँक रहा था और विश्वसनीय सा प्रतीत हो रहा था। उसके मुख पर भय का कोई चिह्न न था। गाड़ी में एक कुत्ता सोया था।

गाड़ी में बैठे हुए व्यक्ति ने इन दोनों को देखकर पूछा—"आप लोग कहाँ जा रहे हैं?"

माइकेल चौंक उठा। दूसरे ही क्षण उसे वह आवाज परिचित सी प्रतीत हुई। उसकी दुर्भावना अदृश्य हो गई।

युवक ने फिर पूछा—"आप कहाँ जाते हैं?"

"इर्कुट्स्क।"

"इर्कुटस्क! जानते हो, यहाँ से इर्कुट्स्क कितनी दूर है?"

"हाँ, जानता हूँ···।"

"तब भी तुम इस रास्ते होकर जा रहे हो!"

माइकेल को सम्बोधित करके युवक ने कहा—"आप अकेले होते तो कोई आपत्ति नहीं थी; किन्तु साथ में यह युवती है।"

"यह मेरी बहिन है।"

"मैं मानता हूँ कि यह आपकी बहिन है, किन्तु यह स्त्री है, पुरुष नहीं है। यदि आप मेरी बात सुनना चाहें तो कहूँगा कि यह आपकी बहिन पैदल चलकर कदापि इर्कुट्स्क नहीं पहुँच सकती।"

माइकेल ने दो कदम आगे आकर कहा—"मित्र! मैं क्या करूँ? तातारियों ने हमारा सर्वस्व लूट लिया है। हमारे पास फूटी कौड़ी भी नहीं बची है। मुझपर दया करो और मेरी बहिन को अपनी गाड़ी पर बैठा लो। इसे किसी तरह बचा लो। मुझे अपनी कोई चिन्ता नहीं है। मैं आपकी गाड़ी पकड़कर पीछे पीछे चला चलूँगा।"

युवक ध्यान से सुनता रहा। माइकेल के समझाने पर भी नादिया तैयार न हुई। उसने तुरन्त ही कहा—"नहीं, नहीं। ऐसा नहीं होगा। मेरा भाई अन्धा है।"

युवक चकित हो गया और बोला—"अन्धा है?"

नादिया ने करुण स्वर से कहा—"हाँ। तातारियों ने मेरे भाई की आँखों को दाग दिया है।"

"दाग दिया है? कैसा दुर्भाग्य? मैं तो क्रास्नोयपर्स्क जा रहा हूँ। आप भाई-बहन दोनों मेरी गाड़ी में आ जाइये।

जरा सिकुड़कर बैठना पड़ेगा; किंतु यह कोई कठिन बात नहीं है। मेरा साथी कुत्ता सड़क पर चला आवेगा। उसे कोई कठिनाई नहीं होगी।"

माइकेल ने कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हुए कहा—"क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?"

"मेरा नाम! मेरा नाम निकोलस पिगासफ है।"

"यह नाम मैं जीवन भर नहीं भूलूँगा।" माइकेल ने धीरे से कहा।

"अच्छा, अच्छा। ये सब बातें छोड़िये। जल्दी गाड़ी में बैठ जाइये। बहिन को भी आपके पास ही बैठाऊँगा और मैं आपके सामने बैठकर गाड़ी चलाऊँगा।"

फिर उसने अपने कुत्ते की ओर देखकर कहा—"चलो मित्र! यह जगह खाली करो। अब तुम्हें पैदल चलना पड़ेगा।"

कुत्ते का नाम सार्को था। कुत्ते ने पहले कुछ मस्ती भरी आवाज की; किन्तु इसके बाद उचककर नीचे उतरा। माइकेल और नादिया गाड़ी में बैठे। थकावट के कारण नादिया थोड़ी ही देर में सो गई।

पिगासफ ने माइकेल से कहा—"सचमुच लड़की भली है।"

"हाँ, भाई। बहुत भली लड़की है।" माइकेल ने कहा।

"स्त्रियाँ भी साहसी होती हैं; किन्तु उन्हें ऐसा अवसर

कम मिलता है। अच्छा, यह बताइये कि आप कितनी दूर से आते हैं ?"

"बहुत दूर से।" माइकेल ने कोई दूसरी बात छेड़ने का प्रयत्न नहीं किया। उसने उस युवक से पूछा—"क्या तुमने मुझे कहीं देखा है ?"

युवक ने ध्यान से माइकेल का चेहरा देखा और बोला—"आपको ? मुझे कुछ याद नहीं आता।"

"परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आपकी आवाज मैंने कहीं सुनी है।"

"संभव है, ऐसा हो। यह भी हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की मुझसे मिलती-जुलती आवाज सुनी हो। कदाचित् आप यह जानना चाहते होंगे कि मैं कहाँ से आ रहा हूँ—मैं किलवन से आ रहा हूँ।"

"किलवन से ? तब तो मैंने आपको देखा होगा। क्या आप तार-आफिस में थे ?"

"हाँ, मैं तार-आफिस में क्लर्क था।"

"दो संवाददाताओं ने आपके आफिस में खिड़की के पास खड़े होकर खबर भेजी थी। क्या यह बात आपको याद है ?"

"भेजी होगी; किन्तु ऐसे बहुत से आदमी आकर समाचार भेजते रहते हैं। सब बातें कैसे याद रहें ?"

यह सुनकर माइकेल को पिगासफ के भोलेपन का ध्यान आया। गाड़ी धीरे धीरे चल रही थी। माइकेल के मन में गाड़ी को तेजी से चलाने की इच्छा थी; परन्तु उसे अनुभव हो रहा था कि घोड़ा अपनी चाल बढ़ा नहीं सकेगा। घोड़े और गाड़ीवान का नियम दो दो घण्टे चलने के बाद एक घण्टे आराम लेने का था।

एक जगह मुकाम पड़ा। घोड़े को चरने के लिए छोड़ दिया गया। पिगासफ ने माइकेल और नादिया को खाना खिलाया। उसके पास बीस आदमियों के उपयोग में आने लायक भोजन रखा था।

एक दिन के आराम और निद्रा से नादिया में नये जीवन का संचार हो उठा। पिगासफ भी नादिया को विशेष आराम देने का प्रयत्न करता था।

फिर यात्रा आरंभ हुई। रास्ते में इलौचा नदी आई। यह नदी पूर्वी और पश्चिमी साइबेरिया की सीमा का काम करती थी। चारों ओर दूर तक वनस्पति दिखाई देती थी। रास्ता किनारे किनारे जाता था। यह रास्ता भी निर्जन प्रतीत हो रहा था। कोई मनुष्य दिखाई न देता था। लोग आक्रमण के भय से यहाँ से भागकर ऐनीसेई नदी के तट की ओर चले गये थे। उनका यह विश्वास था कि नदी का विशाल पाट देखकर तातारी लोग आक्रमण करने का साहस न करेंगे।

माइकेल अन्धा था। नादिया उसे कहकर बताती थी कि

कहाँ आ पहुँचे हैं, किस दिशा में क्या है ? वनस्पति कहाँ है ? और वृक्ष किस प्रकार के हैं ? ये बातें नादिया तो बताती ही थी, कभी कभी पिगासफ भी अवसर पर बातें करता था। उसे बातचीत करना पसन्द था। बातचीत में वह हँसा भी सकता था।

एक दिन माइकेल ने पूछा—"आकाश कैसा है ?"

पिगासफ ने उत्तर दिया—"शानदार और खूब सुन्दर है, मानो गर्मी की ऋतु बीतने पर हो। गर्मी की ऋतु तो साइबेरिया में बहुत अल्पवयस्क होती है। शरद की हवा चलते ही कुछ दिनों में बरफ जमने लगती है। कदाचित् इस ठंढ में तातारी लोग अधिक आगे बढ़ने का प्रयत्न नहीं करेंगे।"

माइकेल ने सिर हिलाया और पिगासफ के साथ अपनी असम्मति दिखाई।

पिगासफ उस बात को समझ गया और बोला—"क्या आपको हमारी बात में शंका प्रतीत होती है ? क्या आप ऐसा मानते हैं कि ऐसे समय पर भी तातारी लोग इर्कुट्स्क पर आक्रमण करेंगे ?"

"मुझे ऐसा ही विश्वास है।"

"हाँ, आपकी बात सत्य हो सकती है। उस सेना में एक अधिक दुष्ट व्यक्ति है। वह पाखण्डी है। उसका नाम आइवेन है। आपने सुना ही होगा।

"अच्छी तरह सुना है।"

"आपको ज्ञात होगा कि हमारा देश देशद्रोही व्यक्तियों को कोई स्थान नहीं देता।"

"हाँ।"

"वह आदमी चाहे कितना ही प्रभावशाली और कुशल हो किन्तु मैं उससे घृणा करता हूँ।"

मैं भी उसका नाम सुनकर भड़क उठता हूँ। उसने हमारी पवित्र मातृभूमि को कलंकित किया है। उसके नाम मात्र से मैं क्रोध से भर उठता हूँ। यदि वह एक बार मेरे हाथ में आवे तो उसका गला ही दबोच दूँ।"

"लेकिन जब हाथ में आवे तब न!"

"हाँ तभी। उस समय उसके टुकड़े टुकड़े कर डालूँ।"

"आप ठीक कहते हैं। मैं भी ऐसा ही चाहता हूँ।"

(२४)

आठ दिन बाद दूर से क्रोस्नो यार्स्क नगर दिखाई दे रहा था। रूसी सेना ने बड़ी तेजी से येनीसेइस्क नगर में एक सेना एकत्र कर ली थी। इस सेना ने टोम्स्क पर अधिकार पाने के लिए तातारी सेना पर अचानक आक्रमण भी कर दिया; किन्तु इसे खान की सेना के सामने पराजित होना पड़ा। रूसी सेना पराजित होने पर भी कितने ही दिनों तक इर्कुट्स्क के रास्ते की नाकेबन्दी करने में लगी थी।

कुछ दूर पर आकर गाड़ी खड़ी हो गई। माइकेल ने नादिया से पूछा—"बहिन! हम लोग कहाँ पहुँच आये?"

"नगर के समीपवर्ती रास्ते पर।"

"नगर के पास!" माइकेल ने आश्चर्य से कहा।

नगर होने पर भी कोई आवाज नहीं सुनाई दे रही थी। क्या सारा नगर सो गया है? नादिया भी नगर की नीरवता देखकर स्तब्ध थी। इस नीरवता का कारण उसकी समझ में न आया।

नादिया विचारने लगी कि यह विचित्र नगर है। यहाँ न तो किसी प्रकार का शोरगुल सुनाई देता है, न कोलाहल। अभी सन्ध्या का समय है। क्या सब लोग एकदम सो गये होंगे?

माइकेल के मन में एक आशंका खड़ी हो गई। गाड़ी भी उसी समय खड़ी हो गई। वह बोला—"गाड़ी क्यों ठहर गई?"

पिगासफ ने हँसकर कहा—"इसी लिए मैंने गाड़ी खड़ी कर दी कि नगर के लोगों की नींद में व्याघात न पड़े!"

इतना कहकर उसने घोड़े को चाबुक मारकर आगे बढ़ाया। कुछ देर बाद गाड़ी नगर के एक अच्छे रास्ते पर आकर खड़ी हो गई। सारा नगर निस्तब्ध था। वहाँ भयंकर झगड़े-लड़ाई के बाद होनेवाली शांति की नीरवता व्याप्त थी। रास्ते पर कोई चौकीदार न था। फुटपाथ पर कोई आदमी न था। मार्ग के दोनों ओर ऊँचे ऊँचे महलों की पंक्तियाँ थीं, किंतु उनमें कोई आदमी न था। बगीचे निर्जन थे। देवालयों में घंटारव नहीं सुनाई देता था।

बात यह थी कि आज से कुछ दिन पहले सरकारी आदेशानुसार नगर-जन अपने मकान खाली करके समीपस्थ प्रदेश में जा छिपे थे। सरकारी दफ्तर भी हटा लिया गया था। नगर को इस प्रकार व्यवस्थित खाली किया गया था कि शत्रु को नगर से सामान्य वस्तु भी न मिल सके।

गाड़ी जनशून्य नगर में और आगे बढ़ी। माइकेल, नादिया और पिगासफ सभी मौन थे। पिगासफ यहाँ नौकरी पाने की इच्छा से आया था। उसे विश्वास था कि उसकी कर्तव्यपरायणता की अवहेलना कदापि नहीं होगी; किन्तु नगर की यह दशा देखकर उसे अपनी आशा पर पानी फिरता दिखाई दिया।

वह बोला—"वाह रे भाग्य! इस उजाड़ नगर में मुझे कौन नौकरी देगा?"

नादिया बोली—"आप ठीक कहते हैं। यहाँ आपको कौन नौकरी देगा? आप हम लोगों के साथ इर्कुट्स्क ही चलिये।"

"बहुत अच्छा! आपका विचार कुछ खराब नहीं है। चलो, इर्कुट्स्क ही चलेंगे। वहाँ कोई नौकरी मिल जायगी। चलो, अभी प्रस्थान करेंगे।"

"नहीं, अभी नहीं। रात को यहाँ आराम करें। सबेरे ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे।" माइकेल बोला।

नादिया ने माइकेल की ओर करुण भाव से देखा। वह

माइकेल की बातों का अर्थ समझ गई। रास्ते में एनी सेई नदी आती थी। यह नदी जितनी ही बड़ी थी उतनी ही भयंकर भी थी। रात को नदी पार करना कठिन ही नहीं, असंभव भी था। इसी लिए माइकेल ने सबेरे चलने का आग्रह किया।

पिगासफ ने तर्क-वितर्क न करके गाड़ी को एक खाली मकान के अहाते में खड़ा कर दिया।

२६वीं अगस्त को रात के पिछले पहर ये लोग वहाँ से चल पड़े और नदी के तट पर पहुँचे। नादिया नदी के भयंकर स्वरूप को देखकर चिन्तित हो उठी।

माइकेल ने नादिया से पूछा—"क्या किनारे पर कोई नाव दिखाई देती है ?"

"अभी अँधेरा है भैया ! इसलिए कुछ दिखाई नहीं देता।"

नदी की गर्जना सुनाई दे रही थी। थोड़ी देर बाद सूर्य निकला। माइकेल ने पूछा—"धूप निकलती दिखाई देती है। क्या अब सब कुछ दिखाई दे रहा है ?"

"अभी ठीक से नहीं दिखाई देता। कुछ देर बाद सब स्पष्ट दिखाई देगा।" नादिया बोली।

पिगासफ भी कहने लगा—"घबराइये मत मित्र ! अभी कुहरा दूर होगा और सब कुछ दिखाई देने लगेगा। देखिये, हवा भी कितने जोर से चल रही है ? इस ओर के वृक्ष अब

दिखाई देने लगे हैं। अरे! अब तो कुहरा एकदम चला गया! कैसा मनोहर दृश्य है?"

"क्या कोई नाव दिखाई देती है? माइकेल ने पूछा।

"नहीं। नाव तो कोई दिखाई नहीं देती।"

"एक बार फिर ध्यान से देखो। चारों ओर जहाँ तक दृष्टि जा सके वहाँ तक देखो।"

पिगासफ और नादिया दोनों देखने लगे; किन्तु कोई नौका उन्हें दिखाई नहीं दी।

माइकेल ने इसका कारण समझ लिया। सरकारी आदेशानुसार नौका द्वारा नदी पार करने का निषेध किया गया होगा। नौकाओं को इसी लिए हटा लिया गया होगा, जिससे उनके द्वारा शत्रु-गण नगर पर आक्रमण न कर सकें।

कुछ दूरी पर एक गाँव था। माइकेल ने कहा—"चलो, उस गाँव में चलें। वहाँ चलकर नदी पार करने का कोई उपाय ढूँढ़ें।"

वे गाँव में पहुँचे और वहाँ भी कोई नौका न मिलने से बहुत हताश हो गये। माइकेल बोला—"ऐसे निराश होने से काम न चलेगा। हमें किसी भी तरह उस पार जाना ही है। इधर उधर देखो। कहीं न कहीं सूखी लकड़ी और लतायें मिल जायेंगी।"

किन्तु उनकी वह धारणा भी निष्फल हो गई। उन्हें ऐसी

कोई चीज नहीं मिल सकी। हाँ, उन्हें 'कौमिस' नाम के शराब के पीपे मिले।

माइकेल बोला—"एक पीपे को भरा छोड़कर दूसरों को खाली कर डालो।"

"आप क्या करते हैं? क्या ऐसी कीमती शराब को फेंकना उचित है?"

"हमारे लिए इस समय नदी पार करना ही महत्त्व का है। इस मूल्यवाब् शराब की चिन्ता करना उचित नहीं है।"

पिगासफ अभी तक इस बात को न समझ सका। उसने पूछा—

"माइकेल! आपके कहने का उद्देश्य क्या है? क्या आप इस पीपे पर बैठकर नदी पार करना चाहते हैं?"

माइकेल ने हँसकर कहा—"हाँ, मैं यही चाहता हूँ। पीपे खाली करो। उसमें हवा भरकर उसके मुँह को बन्द कर दो। इसके बाद इन बंद पीपों को अपनी गाड़ी के चारों पहियों के साथ बाँध दो। तब तुम्हें मालूम होगा कि हमारी गाड़ी कितनी सरलता से पानी में तैरती है और हमारा बोझ उठा ले सकती है।"

पिगासफ खूब प्रसन्न हुआ और बोला—"वाह रे मित्र! आपने अच्छी बुद्धि दौड़ाई। अब हम लोगों के लिए कोई चिन्ता नहीं। शीघ्र ही कार्य को आरंभ करना चाहिए।

थोड़ी देर में एक को भरा छोड़कर सब पीपे खाली किये गये। तीन पीपों में हवा भरी गई। उन पीपों को गाड़ी से बाँध दिया गया। गाड़ी एक नौका जैसी बन गई। एक पीपा घोड़े के गले से बाँधा गया।

गाड़ी पानी में उतार दी गई। कुत्ता भी साहसी था। वह भी गाड़ी के साथ पानी में उतरा। सब गाड़ी में बैठ गये। माइकेल ने घोड़े की लगाम पकड़ ली। पिगासफ रास्ता बता रहा था। नादिया माइकेल से सटकर बैठी थी। गाड़ी जल-प्रवाह पर निर्विघ्न चल रही थी। कुछ देर बाद वे घाट से काफी दूर चले गये; किन्तु प्रवाह की गति सर्वत्र समान न थी। नदी में किसी किसी जगह बड़ी बड़ी और भयंकर पानी की भँवरें थीं। दुर्भाग्य से गाड़ी एक ऐसी ही भँवर में फँस गई और फिरकी की तरह चक्कर काटने लगी। माइकेल ने गाड़ी पर काबू पाने का बहुत प्रयत्न किया; किन्तु उसे सफलता न मिली।

भीषण आपत्ति थी! जिस प्रकार हवा में सूखे पत्ते चक्कर लगाते और डूबते हैं उसी प्रकार भँवर में गाड़ी घुमरने लगी। घोड़ा डुबकी खाने लगा और डुबकी खा खाकर अध-मरा हो गया। कुत्ते के लिए तैरना कठिन हो गया। इसलिए वह भी गाड़ी में आ बैठा। माइकेल ने नाव का बचाना कठिन समझा और उसे भँवर में डूबने की संभावना देखी।

नादिया अवाक् थी। गाड़ी को गोल गोल फिरते देख उसे ऐसा प्रतीत होता था मानो अभी इससे बाहर फेंक दी

जायगी। बेचारा पिगासफ उस समय निर्विकार और निश्चिंत था मानो उसे आपत्ति की भयंकरता का ख्याल ही न था। उसे जीवन का कोई मोह न था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसे किसी प्रकार का मोह न था। वह जीवन को चार दिन की चाँदनी और मनुष्य को संसार का एक मेहमान समझकर निर्विकार हो रहा था। चाहे कुछ भी हो; किन्तु उसके मुख पर हास्य की एक कला भी खोई हुई प्रतीत न होती थी।

आपत्ति की भयंकरता देखकर माइकेल तुरन्त पानी में कूद पड़ा। उसने घोड़े की लगाम खींचकर उसे उत्तेजना दी। घोड़ा उस गाड़ी को खींचकर भँवर के बाहर निकल आया।

माइकेल विजयी हुआ। संकट दूर टला। पिगासफ आनंद से नाच उठा। थोड़ी देर में गाड़ी तैरती नदी के अन्दर स्थित एक द्वीप पर आ लगी। उन लोगों ने वहीं एक घण्टा आराम किया।

द्वीप पर सघन वनस्पति थी। चारों ओर वृक्ष और लतायें दिखाई दे रही थीं। विश्राम करके वे द्वीप के तट पर आये। यहाँ कोई खतरा न था। कोई भँवर भी दिखाई न देती थी; किन्तु प्रवाह अत्यन्त तेज था। माइकेल को प्रवाह देखकर इसलिए आनंद हुआ कि इससे गाड़ी का वेग बढ़ेगा।

साइबेरिया की सभी नदियाँ ऐसी ही भीषण होती हैं। उन्हें पार करना बहुत कठिन होता है। किसी को माइकेल के भाग्य का पता भी न था कि क्या होनेवाला है।

अन्त में वे कुशलपूर्वक दूसरे तट पर पहुँचे।

पिगासफ बोला—"वाह रे मित्र ! हम लोग भयंकर जल-प्रवाह पार करके एक स्वप्न-राज्य के तट पर आ गये हैं। हमारी यात्रा कितनी आश्चर्यजनक और खतरनाक थी ?"

माइकेल बोला—"हमारी अपेक्षा तातारियों को नदी पार करना अधिक खतरनाक सिद्ध होगा।"

(२५)

इर्कुट्स्क के रास्ते पर कोई खतरा न था। तातारियों की सेना अभी बहुत दूर थी। जिस समय वह क्रास्नोयार्स्क पहुँचेगी उस समय उसे जनशून्य नगर और सुनसान पंथ ही देखने को मिलेगा। वे लोग भला एनीसेई नदी को कैसे पार करेंगे ?

कुछ देर विश्राम करने के बाद पुनः यात्रा आरंभ हुई। यहाँ का रास्ता अच्छा था। दोनों ओर वृक्ष थे। बीच बीच में देवदार और पाइन के जंगल भी मिलते थे; किन्तु कोई मनुष्य न दिखाई देता था। रास्ते के गाँव निर्जन और उजाड़ दिखाई देते थे। सरकारी आदेशानुसार लोग गाँव खाली करके चले गये थे।

२८वीं अगस्त को ये लोग रिविनस्क नगर पहुँचे। यह नगर भी जन शून्य था। देवालय सुनसान थे। धर्मशालाएँ निर्जन थीं।

माइकेल बोला—"अब ओडिन्स्क नगर आयेगा।"

"बहुत अच्छा ! किन्तु क्या वहाँ तार आफिस होगा ?

परन्तु यदि वह नगर भी निर्जन होगा तो मुझे नौकरी मिलने की कोई संभावना न होगी। ऐसा प्रतीत होता है कि मुझे इर्कुट्स्क गये बिना कहीं नौकरी न मिलेगी। आप ही बताइये कि क्या मेरा कहना असत्य है? बिना नौकरी के जीवन कैसे गुजरेगा?"

माइकेल ने विलम्ब करना उचित न समझा। वह दस दिन के अन्दर ही इर्कुट्स्क पहुँचकर ड्यूक से मिलना चाहता था।

छठीं सितम्बर को गाड़ी एक छोटे गाँव के एक खाली मकान में खड़ी हुई। गाड़ी से उतरते ही नादिया को दो चाकू जमीन पर पड़े हुए मिले। ऐसे चाकुओं का उपयोग साइबेरिया के शिकारी किया करते हैं। उसने एक चाकू माइकेल को दिया और दूसरा अपने पास रखा।

इस समय पिगासफ का मन सशंक था। वह पूर्ववत् प्रसन्न न दिखाई देता था। उसे ऐसा प्रतीत होता था कि आगे जाते ही उस पर कोई महान् संकट टूट पड़ेगा। इसीलिए वह कुछ बोलता न था। नादिया ने उसमें उत्साह भरने का बहुत प्रयत्न किया; किन्तु उसका परिणाम शून्यवत् रहा। अंधविश्वासी कुटुम्ब में जन्म होने के कारण पिगासफ की आशंका किसी भी तरह दूर नहीं की जा सकती थी।

गाड़ी खूब तेज चल रही थी। पिगासफ का ध्यान अन्तिम स्थान पर जल्दी से जल्दी पहुँचने की ओर था। वह

संकट की अनिवार्यता को अपने मन से हटा नहीं सकता था। इर्कुट्स्क पहुँचे बिना उसके मन में चैन आने की संभावना न थी।

कुछ समय बाद उसकी आशंकाएँ सच होने के चिह्न उपस्थित हो गये। उन्हें स्थान स्थान पर जो दृश्य दिखाई दिये उससे नादिया का मन भी शंकित हो उठा। उसने माइकेल से कहा—"अभी तक संकटों ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा।"

रास्ते के दोनों ओर खेत थे। उन्हें देखने पर स्पष्ट लक्षित होता था कि आक्रमणकारियों ने सारी फसल जला डाली है। जमीन पर हजारों घोड़ों की टापों के निशान थे। गाँवों की झोपड़ियाँ भी जला डाली गई थीं। मिट्टी के मकानों पर गोलियों के निशान दिखाई देते थे।

माइकेल के मन में एक भीषण दुर्भावना उत्पन्न हुई; किन्तु उसने अपने मन के भय को नादिया अथवा पिगासफ किसी पर व्यक्त न होने दिया। जब तक कोई खास आपत्ति न आये तब तक वह अपनी यात्रा को जारी रखना चाहता था। गाड़ी पूर्ववत् चल रही थी। अब भी आक्रमणकारियों द्वारा जलाई गई झोपड़ियों से धुयें का बादल आसमान में ऊँचे चढ़ रहा था।

उन्होंने ऐसे दृश्य देखते देखते सारी रात गुजार दी। सवेरा होते ही गाड़ी खड़ी हो गई। घोड़ा भड़ककर पीछे हट

गया। सार्को कुत्ता भी भूंकने लगा। माइकेल ने व्याकुल होकर पूछा—"नादिया ! क्या बात है ?"

"कोई आदमी रास्ते में पड़ा है।" ऐसा कहकर पिगासफ गाड़ी से नीचे उतर गया। उसने पास जाकर देखा तो एक तातारी मनुष्य की मृत देह रास्ते पर पड़ी थी। माइकेल भी नीचे उतरा। दोनों ने मिलकर शव को रास्ते के एक ओर रख दिया। गाड़ी फिर आगे बढ़ी। इसके बाद उन्हें ऐसे अनेक तातारियों की लाशें दिखाईं दीं, जिनके हाथ-पैर कटे थे।

वे सारे दिन डरते डरते आगे बढ़े और संध्या होते-होते ओडिन्स्क नगर में पहुँचे। मकान की ऊँची मीनारें और चारों ओर धुएँ का बादल दिखाई दे रहा था।

नादिया और पिगासफ रास्ते की एक एक बात माइकेल को बताते जाते थे। उनके मन में बारंबार रास्ते की भयंकरता का विचार उठ खड़ा होता था।

माइकेल ने गाड़ीवान से कहा—"भाई, खूब सावधानी से गाड़ी चलाना। अत्यन्त सावधान रहने की आवश्यकता है।"

नादिया के मन में सन्देह उत्पन्न हुआ। वह डरती डरती बोली—"आकाश में धुएँ के काले बादल देखने से मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि नगर भीषण अग्नि से भस्म हो रहा है।"

नादिया का अनुमान ठीक था। कुछ दूर आगे जाते ही

उन्होंने प्रचण्ड आग देखी । वे विचारने लगे कि यह किसने लगाई होगी ? तातारी सेना को परेशान करने के लिए रूसी सेना के ऐसा करने की भी संभावना प्रतीत होती थी। इस बात को मानने में कोई आपत्ति न थी कि रूसी सरकार ने तातारियों को किसी भी प्रकार की सामग्री न मिलने के उद्देश्य से आग लगा दी होगी।

कुछ देर विचार करके माइकेल ने कहा—"मित्र ! अब सीधा रास्ता छोड़कर हमें सड़क से नीचे उतर चलना चाहिए।"

पिगासफ अभी कुछ उत्तर देना ही चाहता था कि नगर के दक्षिणी भाग से उन्हें बन्दूकों की आवाज सुनाई दी। उस आवाज के साथ ही उनका घोड़ा धरती पर लुढ़क गया। यह देखकर सब चौंक पड़े। नादिया और पिगासफ ने गरदन फेरकर देखा तो दस अश्वारोही खूब जोर से दौड़े चले आ रहे थे।

ये अश्वारोही विद्रोहियों के सैनिक थे; किन्तु उनमें खान की सेना के सैनिक न दिखाई देते थे। वे खोकंद और कुंडुज के सैनिक प्रतीत होते थे। यह सेना दूसरी ओर से आक्रमण कर रही थी। आइवेन ने विचार किया था कि पूर्व साइ-बेरिया पर अधिकार पाने के लिए दूसरी ओर से भी आक्रमण किया जाय। इसीलिए उसने यह सेना भेजी थी। वे सैनिक आगे बढ़ते बढ़ते एनीसेई नदी के तट पर पहुँच गये और गाँवों को लूटते-जलाते आगे बढ़ने लगे।

नादिया, माइकेल और पिगासफ इन सैनिकों के चंगुल में फँस गये। आधे घण्टे में सैनिकों ने इन्हें कैद कर लिया और निजनी ओडिन्स्क नगर को ले गये। लगभग सारा नगर आग से भस्म हो गया था।

सैनिकों ने पहले इस बात पर ध्यान न दिया था कि माइकेल अन्धा है। कुछ समय बाद उन्हें यह बात ज्ञात हुई। उन्होंने माइकेल का निष्ठुर परिहास करना आरंभ किया।

एक सैनिक बोला—"इस सूरदास जी का रूप तो देखो।"

इसके बाद मजाक करने की रीति क्रूर होने लगी। उनका एक घोड़ा एकदम शक्तिहीन हो गया था। एक सैनिक ने छुरी से घोड़े की दोनों आखें फोड़ डालीं और उसकी पीठ पर माइकेल को बैठाया। यह देखकर सेना के दूसरे सैनिक ही-ही-ही हँसने लगे।

इस भयानक स्थिति में माइकेल गंभीर बन गया था; उसने अपने मुख से एक शब्द भी न निकाला। सैनिक बार-बार घोड़े को मारते थे और घोड़ा माइकेल को लेकर इधर-उधर भागता फिरता था। यह कैसा भयंकर संकट था? सामने एक गहरी खाई थी। अंधा घोड़ा उसी ओर जा रहा था। पिगासफ ने दौड़कर घोड़े को रोकने का प्रयत्न किया; किन्तु सैनिकों ने उसे ऐसा न करने दिया।

माइकेल को लेकर घोड़ा खाई में लुढ़क पड़ा। पिगासफ

और नादिया भय से चिल्ला उठे। उस भाग्यहीन माइकेल का यह भाग्य था।

इसके बाद सब खाई की ओर आगे बढ़े। वहाँ जाकर उन्होंने देखा कि वहाँ माइकेल खड़ा है। उसे कुछ विशेष चोट न लगी थी। संकट का अनुभव होते ही माइकेल के सावधानी दिखाने के कारण उसे विशेष चोट न लगी थी; किन्तु घोड़े के दो पैर टूट गये थे।

सैनिकों ने घोड़े की लगाम निकालकर माइकेल को बाँधा और उसे खींचते खींचते आगे बढ़े। घोड़ा थोड़ी देर बाद वहीं मर गया। उसके शव को गीधों ने खोद खोदकर खा डाला।

माइकेल को अत्यन्त कष्ट सहन करना पड़ता था। इतना होने पर भी उसने अपने मुँह से एक शब्द न निकाला। उन सबको अब उसके लौह पुरुष होने की प्रतीति हुई।

११वीं सितम्बर को एक दूसरी घटना घटी। उसका परिणाम सचमुच शोचनीय था। रात हो चुकी थी। सैनिकों ने विश्राम लेने के लिए एक गाँव में पड़ाव डाला। विश्राम के समय उन्होंने इतनी शराब पी कि आराम लेने की बात ही भूल गये। नशे के चक्कर में वे ठहरने के बदले आगे बढ़ने लगे।

अब तक उन्होंने नादिया के साथ कोई खराब बर्ताव न किया था; किन्तु शराब के नशे में उन्होंने उससे दुर्व्यवहार करना

आरंभ किया। माइकेल अन्धा था; किन्तु सैनिकों का यह व्यवहार पिगासफ से न देखा गया। वह क्रोध से उत्तेजित हो गया और नादिया को शराबियों के हाथ से छुड़ाने के लिए आगे बढ़ा। उसने परिणाम पर थोड़ा भी विचार न किया। पिगासफ को आगे बढ़ते देखकर सैनिकों की निर्दयता दूनी हो गई।

बन्दूक की एक आवाज हुई और पिगासफ गोली खाकर जमीन पर गिर पड़ा, तब भी उन सैनिकों का क्रोध शान्त न हुआ। उन्होंने पिगासफ के शरीर को टुकड़े टुकड़े करने के लिए हाथ में छुरी ली; किन्तु उनके नायक ने ऐसा करने से रोक दिया। और आदेश दिया—"आगे बढ़ो।" शराबी सैनिक यह सुनकर अवाक् बन गये। इसके बाद उन्होंने जल्दी से पिगासफ को एक घोड़े पर लाद लिया।

इसी समय के अन्दर माइकेल ने दाँतों से अपने बंधन काट डाले। सैनिकों का ध्यान उधर न गया। वे आगे चले गये। माइकेल और नादिया पीछे रह गये।

(२६)

इस दुखद घटना से माइकेल और नादिया शोक-सागर में डूब गये। इस सहयात्री ने उनकी खूब सहायता की थी। उनके मन को ऐसे साथी का वियोग विह्वल बना रहा था।

रात के दस बजे थे। धरती पर अन्धकार का परदा छा गया था। नगर, गाँव और पर्वत आदि कुछ भी दिखाई न

देता था। इतने समय में सैनिक बहुत दूर निकल गये थे। उस निर्जन प्रदेश में केवल दो ही व्यक्ति थे—माइकेल और नादिया।

एक दीर्घ निःश्वास लेकर नादिया बोली—"भैया···।"

माइकेल चुप था। नादिया मन ही मन बड़बड़ाई—"ओह! कैसा दुर्भाग्य? हम लोगों के लिए उस बेचारे की कैसी दुर्दशा हुई! उसने हम लोगों के लिए प्राणार्पण किया।"

माइकेल बिल्कुल चुप था। वह सिर नीचा किये न जाने क्या सोच रहा था।

नादिया ने फिर पूछा—"अब क्या होगा? और हम लोग कहाँ चलेंगे?"

तुरन्त ही माइकेल चैतन्य हो गया। उसने संक्षिप्त उत्तर दिया—"इर्कुट्स्क चलना है।"

नादिया को माइकेल की दृढ़ प्रतिज्ञा याद आई और वह कुछ अधिक बातचीत किये बिना ही उठ खड़ी हुई। उसके मुँह से केवल इतना ही निकला—"तो चलो!"

"हाँ, चलो बहिन!" माइकेल नादिया का हाथ पकड़कर खड़ा हुआ।

रात बीत चुकी थी। अब सवेरा होने में अधिक देर न थी। माइकेल और नादिया की यात्रा चल रही थी। उन्होंने एक क्षण भी विराम न लिया था। उनके आगे आगे उसी रास्ते

तातारी सेना के लक्षण भी स्पष्ट प्रतीत हो रहे थे। रास्ते पर मरे हुए घोड़े और टूटी हुई गाड़ियाँ पड़ी थीं। स्थान-स्थान पर सैनिकों द्वारा की गई लूट-खसोट के चिह्न देख पड़ते थे। फिर भी उन्हें अब कोई विशेष संकट न दिखाई देता था।

एक दिन माइकेल ने कहा—"तू क्यों घबराई-सी दिखाई देती है?"

"ऐसा नहीं है।" नादिया बोली।

"जब तू चलते चलते शक्तिहीन हो जाना तो मुझसे कहना। बोलो, कहोगी न?"

यह बात करते करते उन्होंने मार्फा की चर्चा भी छेड़ी। माइकेल ने दीर्घ निःश्वास लेकर कहा—"नादिया! माँ की इस स्थिति के लिए मैं उत्तरदायी हूँ। मैंने माँ से न मिलने की प्रतिज्ञा की थी; परन्तु उस प्रतिज्ञा का पालन न कर सका। यह मैंने एक महान् पाप किया है।"

नादिया ने सान्त्वना देते हुए कहा—"आपने अपनी इच्छा से ऐसा थोड़े ही किया। वह मिलाप अचानक हो गया था।"

"परन्तु मेरी प्रतिज्ञा थी कि प्राण भले ही जायें; किन्तु मैं माँ से नहीं मिलूँगा।"

नादिया बोली—"एक बार विचार करके देखिये कि जिस समय अपने पुत्र के सामने माँ पर अकथ्य अत्याचार

हो, माँ की पीठ पर कोड़े पड़ें, उसे जल्लाद मारने को तैयार हो उस स्थिति में पुत्र किस प्रकार चुप बैठे ? कदापि ऐसा नहीं हो सकता। माइकेल! उस समय कोई भी प्रतिज्ञा, कोई भी शपथ पुत्र को बाँध नहीं सकती।"

"परन्तु बहन! मेरी प्रतिज्ञा भंग हो गई है। मैं महा अपराधी हूँ। ईश्वर मुझे क्षमा करे।" इतना कहकर माइकेल ने माथा झुका लिया।

नादिया फिर धीरे धीरे बोली—"मैंने एक बात आपसे पूछने का विचार बहुत दिनों से किया है। यदि आप बुरा न मानें तो आज पूछूं। यदि आप कहने की अनुमति नहीं देंगे तो भी मुझे बुरा नहीं लगेगा।"

"अच्छा, कहो तो सही।"

नादिया बोली—"आपके पास जो पत्र था उसे तो दुष्ट आइवेन ने ले लिया। अब आप इर्कुट्स्क जाने के लिए इतना अधिक अधीर क्यों हो रहे हैं ? ऐसा प्रतीत होता है कि आप मुझे मेरे पिता के पास पहुँचाने के लिए उत्सुक हो रहे हैं। क्या यह बात सच है ?"

माइकेल ने नादिया का हाथ पकड़कर कहा—"नादिया! यह बात नहीं है। मैं अपना कर्तव्य पूरा करने की कामना से ही जा रहा हूँ। अब तू ही मुझ अन्धे की आँख है। तू ही इस समय मुझे चला रही है। कौन जाने भाग्य में क्या

लिखा है? मेरा विचार आइवेन से पहले इर्कुट्स्क पहुँचने का है।"

नादिया समझ गई कि दूसरी अनेक ऐसी बातें हैं, जिन्हें माइकेल नादिया से नहीं कहना चाहता। वह कर्तव्य पूरा करने के बाद ही चुप बैठेगा।

तीन दिन बाद १४वीं सितम्बर को माइकेल और नादिया एक गाँव में पहुँचे। उस समय नादिया की हालत बहुत खराब थी। उसके पैरों की चलने की शक्ति जवाब दे गई थी। उसका शरीर दर्द से काँप रहा था तो भी उसने यात्रा चालू रखी थी और अपने मन को दृढ़ बना रक्खा था।

इस प्रकार सारा दिन व्यतीत हुआ। स्थान स्थान पर आग से भस्मीभूत झोपड़ियाँ दिखाई देती थीं। असहाय निवासियों के शव रास्ते में पड़े थे।

कुछ दिन पहले इस रास्ते से शत्रुओं की सेना जाने के लक्षण दिखाई पड़ते थे। फिर भी वहाँ तक खान की सेना के आगमन का कोई चिह्न दृष्टिगोचर न होता था। इससे माइकेल के मन में एक आशा का संचार हो रहा था। उसे प्रत्येक क्षण इस बात का स्मरण हो आता था कि ग्राण्ड डयूक का प्राण उसके हाथ में है। माइकेल का इर्कुट्स्क पहुँचने का निश्चय दृढ़ होने लगा। नादिया मौन थी। वह चुपचाप माइकेल का हाथ पकड़कर चल रही थी।

माइकेल को नादिया की स्थिति का पूरा पूरा ध्यान था। उसका मनोबल दृढ़ था; किन्तु थकावट के कारण शारीरिक बल घटने लगा था। यदि इस प्रकार बहुत देर तक चलना पड़ा तो उसके लुढ़क पड़ने की संभावना थी। यदि माइकेल अन्धा न होता तो नादिया ने स्वयं उससे कह दिया होता कि भैया! अब मुझसे नहीं चला जाता। वह अकेले ही अन्धे माइकेल का सहारा होने के कारण कुछ न बोली।

१८वीं सितम्बर को वे एक गाँव में पहुँचे। उस समय सन्ध्या का अन्धकार पृथ्वी पर फैल चुका था। नादिया ने एक ऊँचे शिखर पर चढ़कर देखा और बोली—"कुछ दूरी पर कोई चमकदार चीज दिखाई देती है।"

"वह डिन्का नदी है।" माइकेल बोला।

नादिया ने माइकेल का हाथ पकड़ा और खड़ी हो गई; किन्तु अब उसके पैरों में आगे बढ़ने की शक्ति न थी। कुछ दूर आगे बढ़ी होगी कि थककर जमीन पर बैठ गई।

माइकेल इसका कारण समझ गया; वह बोला—"नादिया! कुछ आराम कर ले।"

नादिया ने कहा—"अब रात हो गई है। क्या आप आराम नहीं करेंगे?"

माइकेल बोला—"यह नदी पार कर लें तो बहुत अच्छा हो। इस समय यदि खान की सेना यहाँ आ जाय तो उसके और हमारे बीच नदी की धारा आ जाये और हमारी स्थिति

बिगड़े नहीं। इससे हमें बड़ी राहत मिलेगी; किन्तु मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि तू बहुत थक गई है। अब आगे नहीं चल सकेगी।"

नादिया बोली—"भाई! चल सकूँगी।"

वह माइकेल को लेकर नदी की ओर चली। वह नदी इर्कुट्स्क के रास्ते को काटकर बहती थी।

अन्धेरी रात थी। आकाश मेघाच्छादित था। बिजली चमक रही थी। नादिया यह सब देखती हुई आगे चल रही थी। दूर तक पहाड़ या लता कुछ दिखाई न देता था। भूमि समतल थी। चारों ओर निस्तब्धता थी। उनके चलने की आवाज ही शान्ति भंग करती थी।

अचानक नादिया खड़ी हो गई। एक कुत्ते के भूँकने की आवाज सुनाई दे रही थी। वह माइकेल से बोली—"भैया! सुन रहे हो।"

माइकेल कुछ कहना चाहता था; किन्तु असहायता से कुछ बोल न सका। कुत्ते की आवाज सुनकर नादिया का मन आशंका से भर उठा। वह आर्तनाद करके बोली—"पिगासफ! पिगासफ!"

माइकेल ने नादिया का हाथ जोर से पकड़ा। नादिया के मुख से अनायास शब्द निकल पड़े—"चलो! चलो! जल्दी आगे चलो भैया!"

नादिया में किसी अगम्य शक्ति का संचार हुआ। वह माइकेल को जोर से आगे खींचने लगी। वे इस समय तृणाच्छादित भूमि पर चल रहे थे। माइकेल ने पूछा—"क्या हम लोग पशुओं के चरागाह से चल रहे हैं?"

नादिया ने हाँफते-हाँफते उत्तर दिया—"हाँ। बाईं ओर से कुत्ते की आवाज आ रही है।"

कुछ देर बाद वे नदी के पास आ पहुँचे। फिर उस कुत्ते के भूँकने की आवाज सुनाई दी और साथ ही एक विनयावनत स्वर भी सुनाई दिया।

माइकेल ने कहा—"पिगासफ! पिगासफ!"

कोई प्रत्युत्तर न मिला। नादिया ने भी उधर देखा; किन्तु कुछ दिखाई न दिया। कुछ देर बाद माइकेल को ऐसा प्रतीत हुआ मानो कोई उसका नाम लेकर पुकार रहा है। उस स्वर में अत्यन्त वेदना थी।

नादिया और माइकेल चौंक उठे। उसी समय सार्को उनके पास आया और भूँकने लगा।

कुत्ते का शरीर भी घायल हो गया था। घावों से रक्त टपक रहा था। पिगासफ के भी कहीं आसपास होने की सम्भावना होती थी; परन्तु वह कहीं दिखाई न देता था। नादिया का हृदय धड़कने लगा। उसकी सारी शारीरिक शक्ति मन्द पड़ गई थी। और मुँह से कोई दृढ़ता की बात ही न निकाल सकती थी।

माइकेल लम्बे डग भरता हुआ आगे बढ़ा। कुत्ता फिर भूंकने लगा। उसकी आवाज से वातावरण गूंज उठा। आकाश से एक गीध नीचे उतर रहा था। गीध कुत्ते पर झपटा और उसने अपनी तीक्ष्ण चोंच को कुत्ते के मस्तक में चुभा दिया। अब कुत्ता अपने को न संभाल सका और धरती पर लुढ़क पड़ा।

उसी समय पिगासफ का स्वर सुनाई दिया। इस समय का स्वर पहले से भी हृदयद्रावक था। नादिया इस दुख से बावली हो गई। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि भयंकर पक्षी पिगासफ पर आक्रमण कर रहे हैं।

"माइकेल, माइकेल ! वे यहाँ हैं, यहाँ हैं।" ऐसा कहकर नादिया दौड़ने लगी और एक ठेस खाकर पिगासफ पर लुढ़क पड़ी।

जंगली तातारी अत्यन्त भीषण, निष्ठुर और क्रूर तातारी सताने में कुछ उठा न रखते थे। वे शत्रु का हाथ-पैर बाँधकर जमीन में गाड़ देते थे और केवल चेहरा ही बाहर खुला रख छोड़ते थे। उस गाड़े हुए व्यक्ति पर जोर की धूप पड़ती, भीषण बरसात पड़ती और वह भूख-प्यास से अधमुवा जैसा हो जाता था। उस पर भूखे गीधों का दल टूट पड़ता था। इस तरह वह घुल-घुल कर मरता था।

अभागे पिगासफ को भी तातारियों ने इसी प्रकार बाँध कर जमीन में गाड़ दिया था। तीन दिन से इसी दशा में

पड़ा हुआ पिगासफ मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था; किन्तु उसके वफादार कुत्ते ने गीधों से उसकी रक्षा की थी। कुत्ते ने गीधों के सारे आक्रमणों को अपने ऊपर सहन किया और अन्त में बेहद घायल होकर अपने स्वामी के रक्षणार्थ प्राण-विसर्जन किया।

माइकेल ने अपने छुरे से जमीन खोदना शुरू किया। अब तक पिगासफ की आँखें और मुँह बन्द था किन्तु उसने अब आँखें खोलीं और सामने माइकेल और नादिया को खड़े पाया।

वह क्षीण स्वर से बोला—"मैं अपनी मृत्यु से पहले तुम दोनों का दर्शन करके अपने को धन्य मानता हूँ। मेरी अब एक ही अंतिम प्रार्थना है कि......।"

माइकेल ने किसी बात पर ध्यान न दिया। वह पागल की तरह जमीन खोदता रहा और बहुत परिश्रम करके अन्त में पिगासफ को जमीन से बाहर निकाला। अफसोस! उस समय पिगासफ के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे।

माइकेल ने छुरे से जमीन को और अधिक खोदा और उसमें पिगासफ को दफनाया। सार्फा कुत्ते की लाश भी उसके साथ दफनाई।

उसी समय कुछ दूरी पर खट-खट आवाज सुनाई दी। माइकेल और नादिया ने चौंक कर उधर देखा। कुछ तातारी

अश्वारोही डिन्का नदी की ओर जा रहे थे। माइकेल ने धीरे से कहा—"नादिया...नादिया...।"

उस समय नादिया दिवंगत पिगासफ की आत्मा को चिर शान्ति पाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी। माइकेल ने फिर कहा—"नादिया ! देख, इधर कौन आ रहा है?"

नादिया ने ध्यान से देखा। आकाश में बिजली चमक रही थी। उसने बिजली के प्रकाश में अश्वारोहियों की पंक्तियाँ देखकर भय से काँपते हुए कहा—"सर्वनाश भैया ! खान की सेना आ पहुँची है।"

"बहिन ! खूब सजग बन जा। अब हमें बहुत कुछ करना होगा।"

माइकेल पिगासफ के बारे में सोचता रहा कि पिगासफ कितना शान्त और भद्र पुरुष था। ओह ! बेचारे ने मानवता से प्रेरित होकर अपना बलिदान दिया।

वह नादिया से बोला—"चलो नादिया ! अब हमारा कर्त्तव्य पूरा हुआ है। अब बड़े रास्ते से जाने में खतरा है। चलो, दूसरे रास्ते से चलें। डिन्का को पार करने की आवश्यकता नहीं है।"

उस समय नादिया थकावट से लथपथ हो रही थी। बेचारी आगे न चल सकी। वहीं बैठी की बैठी रह गई। माइकेल समझ गया; किन्तु यह विलम्ब करने का समय न

था। उसने कहा—"नादिया! चिन्ता मत कर। अभी मुझमें शक्ति है। तुझे उठाकर ले चलूँगा।"

इतना कहकर उसने नादिया को अपनी पीठ पर बैठा लिया। इस प्रकार वे दक्षिण दिशा की ओर चले जा रहे थे। बेचारी नादिया रास्ता बता रही थी। अभी इर्कुट्स्क दूर था। पता नहीं, यह रास्ता कब समाप्त होगा? यह रास्ता काट कर क्या माइकेल चुपचाप रहेगा? इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता था। सामने सेयानस्क पर्वत खड़ा था। उसे लाँघने के लिए असाधारण शक्ति की आवश्यकता थी। उतनी शक्ति भला माइकेल में कहाँ थी? किन्तु उसने यह बात नादिया से नहीं कही और आगे बढ़ता ही गया।

बारह दिन बाद वे एक विशाल मैदान में आ पहुँचे। सामने ही सीमाहीन 'बेकाल' सरोवर दिखाई दे रहा था।

(२७)

बेकाल सरोवर खूब रमणीय और विचित्र है। वह समुद्र से १७०० फुट की ऊँचाई पर स्थित है और काफी लम्बा चौड़ा है। उसकी गहराई का तो अनुमान ही नहीं किया जा सकता। यह सरोवर अत्यंत पवित्र माना जाता है। लोग उसे 'सागर-पुत्र' कहते थे।

सरोवर के चारों ओर ज्वालामुखी पर्वत हैं। इसमें लगभग तीन सौ नदियों का पानी आता है और इसमें से एक ही नदी निकलकर काफी दूरी पर एनीसाई नदी से

मिलती है। उस नदी का नाम है अगारा। उसी नदी के दूसरे तट पर पूर्व साइबेरिया की राजधानी इर्कुट्स्क थी।

सरोवर से होकर आनेवाली हवा अत्यन्त आह्लादक थी। साधारणतः यहाँ वायु की गति सन्तुलित नहीं होती। इसलिए सामान्यतः यहाँ की ऋतुएँ समय का बन्धन नहीं मानतीं। इस घटना के समय वहाँ शरद ऋतु का आरंभ था। पाँच बजते ही दिन डूब जाता था। रात लम्बी होती थी। ठंढ का तेज अधिक था। पर्वतों पर बरफ आच्छादित हो जाती थी। अधिक सर्दी पड़ने पर सरोवर का पानी भी जम जाता है। उस जमे हुए पानी पर लोग स्लेज गाड़ी चलाते हैं। यह बरफ गर्मी के दिनों के पहले नहीं पिघलती।

माइकेल नादिया को लेकर सरोवर के दक्षिण कोने पर खड़ा हो गया। नादिया उसकी पीठ से उतरकर एक ओर बैठ गई। उसका सारा शरीर शिथिल था। केवल उसकी आँखें ही चैतन्य दिखाई देती थीं। इस पहाड़ी प्रदेश में केवल दो ही मानव थे—नादिया और माइकेल। उनके लिए न तो कहीं आराम था, न विराम। उनके भोजन का भी कोई सहारा न था। उनका शरीर खूब थका हुआ था। ऐसे व्यक्ति के मरने में क्या देर लगती है ? नादिया का मन अत्यन्त व्यग्र था।

माइकेल के मन में एक ही प्रश्न था इर्कुट्स्क कितनी दूर है ? यद्यपि यहाँ से इर्कुट्स्क केवल तीन दिन के अन्तर पर था; किन्तु इन लोगों के लिए वहाँ पहुँचना कठिन काम था।

वे लोग पहाड़ी प्रदेश पारकर ज्योंही कुछ आगे बढ़े त्योंही सरोवर के तट पर लोगों की भीड़ खड़ी देखकर नादिया चौंक उठी। उनकी संख्या लगभग पचास के थी।

नादिया का हृदय काँप उठा। वह सोचने लगी कि क्या यहाँ तातारी सेना है? क्या यहाँ भी इन लोगों का पहरा चल रहा है? किन्तु दूसरे ही क्षण उसका भ्रम दूर हुआ। उसकी आँखों में आशा की ज्योति चमक उठी। वह हर्ष के आवेश में बोल उठी—"रूसी, रूसी सेना है।"

इस आनन्दातिरेक से वह चेतनाशून्य बनकर धरती पर गिर पड़ी। अचानक उन लोगों ने नादिया की ओर देखा। वे तुरन्त ही दौड़कर उसके पास आये और उसे अपने साथ ले गये।

ये सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और तातारियों के भय से घर छोड़ कर यहाँ एकत्र हुए थे; किन्तु पैदल जाने का कोई उपाय न था। अगारा के दोनों तटों पर तातारियों का आक्रमण होने के कारण ये लोग बेकाल सरोवर पार करके अगारा नदी के रास्ते इर्कुट्स्क पहुँचने का विचार कर रहे थे। इन लोगों को रूसी पाकर माइकेल को असीम आनन्द हुआ। फिर भी उसने अपने आनन्द को व्यक्त नहीं होने दिया और न अपना सच्चा परिचय दिया।

उनकी जल-यात्रा की समस्या बड़ी कठोर थी। उन्होंने नावें प्राप्त करने के अनेक प्रयत्न किये; किन्तु सफलता नहीं

मिली। अन्त में इन लोगों ने वृक्षों की सूखी लकड़ियों से सौ आदमियों की यात्रा के उपयुक्त एक बेड़ा तैयार कर लिया।

कुछ देर बाद नादिया होश में आई। रूसियों ने उसे खाना दिया। अभी तक नादिया की थकावट दूर नहीं हुई थी। वह सो गई।

माइकेल ने रूसियों को अपना सच्चा परिचय न दिया। इतना ही बताया कि मैं क्रास्नोयार्ड नगर का निवासी हूँ।

रात्रि के अन्धकार में बेड़ा चला। उसमें भिन्न-भिन्न तरह के लोग बैठे थे——अमीर, गरीब, बच्चे और वृद्ध। उसमें कुछ स्त्रियाँ भी थीं। वे तातारियों के आकस्मिक विद्रोह से हत-बुद्धि होकर इस रास्ते पर आ गई थीं। उसमें संन्यासी और पुरोहित भी थे, जिनके हाथ में लम्बी लम्बी लाठियाँ थीं और उनके बर्तन शरीर पर बँधे हुए दिखाई दे रहे थे। इसमें एक आदमी यूक्रेन प्रदेश का भी था और दूसरा फिनलैण्ड का था। दूसरा एक संन्यासी उत्तरी प्रदेश का था।

पुरोहित अकेला था। वह ग्रामीण मनुष्य दिखाई देता था। उसने अपने बाल-बच्चों को पहले ही उत्तरी प्रदेश में भेज दिया था और घर में अकेले ही रहने लगा था; किन्तु जब उसने देखा कि तातारियों ने इर्कुट्स्क के रास्ते पर भी

आक्रमण शुरू कर दिया है तब डर का मारा घर छोड़कर भटकते-भटकते यहाँ पहुँचा था।

एक संन्यासी बेड़े के आगे की ओर बैठा था। उसने बेड़ा खुलते समय ईश्वर से प्रार्थना की। रात का समय था। भयंकर सुनसान वातावरण था। प्राणबेधी ठंढ पड़ रही थी। सब लोग काँप रहे थे। सभी संन्यासी प्रार्थना करने लगे कि हे भगवान् हमारी रक्षा करना, हम पर कृपा-दृष्टि रखना।

नादिया सारी रात अचेत रही और माइकेल सारी रात उसके पास बैठा रहा। सबेरे के समय प्रतिकूल हवा के कारण बेड़े की चाल मन्द पड़ गई। यात्रियों को ऐसा प्रतीत हुआ कि शाम को तीन-चार बजे तक वे अगारा नदी में प्रविष्ट हो सकेंगे। हवा की प्रतिकूलता से उन्हें विलम्ब होने का कोई दुःख न था। नदी में पहुँचते समय यदि रात हो तो उन्हें अधिक अनुकूलता थी। इस प्रकार अँधेरे में छिपकर बेड़ा निर्विघ्न रूप से इर्कुट्स्क पहुँच सकेगा।

उसमें इस रास्ते का जानकार एक वृद्ध आदमी था। उसे रास्ते के विघ्नों का ज्ञान था। कितने ही स्थानों पर ठंढ के कारण पानी बरफ के रूप में जमने लगा था। इससे नदी के मुख पर यदि बरफ की परत जमी हो तो बहुत बड़ा संकट उपस्थित होने की संभावना बढ़ जाती थी।

माइकेल को भी इस रास्ते का ज्ञान था। इसलिए वह भी कुछ चिन्तित हो रहा था। कुछ देर पहले नादिया निद्रा से जगी थी। वह माइकेल को धीरे धीरे सरोवर की स्थिति का ज्ञान दे रही थी और माइकेल उसे ध्यान से सुन रहा था।

सन्ध्या होने वाली थी। उस वृद्ध पथप्रदर्शक ने कुछ देखा और कोई मूक संकेत किया। उसके मुख-मण्डल पर उल्लास दृष्टिगोचर हो रहा था। सबने उस दिशा की ओर देखा। वह अगारा नदी का मुँह दिखाई दे रहा था। उसके दोनों तटों पर ऊँचे पर्वत थे। उनके बीच से होकर नदी का जल-स्रोत बह रहा था।

एक व्यक्ति ने कहा—"इधर देखो, लेवेनिचनेया बन्दर-गाह दिखाई देता है।"

मार्गदर्शक कुछ दूसरी ही चीज देखने में व्यस्त था। वह एक विशाल हिमखण्ड को देख रहा था। बेड़े के कितने ही बाँध (बन्धन) ढीले हो गये थे। उन्हें ठीक करने की आवश्यकता थी। इन बातों को जान बूझकर भी बेड़े को लेवेनिचनेया बन्दरगाह पर खड़ा किया गया।

लेवेनिचनेया एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था; किन्तु इस समय वहाँ कोई मनुष्य न दिखाई देता था। यहाँ के लोग शत्रुओं के आक्रमण के भय से नगर छोड़कर चले गये थे। यहाँ किसी

प्रकार की सहायता की आशा न थी; किन्तु बेड़ा ज्योंही रुका त्योंही उधर से दो व्यक्ति आते हुए दिखाई दिये। उन्हें देखकर नादिया अपने मनोभाव को न दबा सकी। उसने माइकेल का हाथ जोर से पकड़ा।

माइकेल ने पूछा—"नादिया ! क्या है ?"

नादिया ने माइकेल के कान में कहा—"हमारे परिचित दो व्यक्ति इधर आ रहे हैं ?"

"किसकी बात कर रही हो ? क्या जिन लोगों से यूराल पर्वत पर मुलाकात हुई थी उनकी बात कर रही हो ?"

"हाँ भैया !"

यह सुनकर माइकेल का मन व्यग्र हो उठा। अब तक उसने किसी से अपना सच्चा परिचय न दिया था। उसे आशंका हुई कि अब वह अपने को न छिपा सकेगा; किन्तु उसकी बुद्धि अत्यन्त सजग थी। कुछ देर चुप रहने के बाद वह नादिया से बोला—"नादिया ! वे लोग बेड़े पर बैठें तो उन्हें मेरे पास बैठने को कहना। भूलना मत।"

बेचारे हेरी और जोलिवेट कहाँ से यहाँ आ पहुँचे थे। वे अपनी इच्छा से यहाँ नहीं आये थे। संयोगवशात् उन्हें यह रास्ता पकड़ना पड़ा था। वे यावेडिमारा से घोड़े पर सवार होकर इर्कुट्स्क के लिए रवाना हुए थे और खान की सेना से बहुत दूर निकल गये थे; किन्तु दूसरी ओर कुंडुज और खोकन्द की सेना वायुवेग से विभिन्न दिशाओं से दौड़ी

हुई इधर आ रही थी। इसलिए इन लोगों ने घबड़ाकर बेकाल सरोवर का रास्ता पकड़ लिया। उन्हें लेवेनिचनेया से कोई नाव मिलने की आशा थी किन्तु जब बन्दरगाह पर आये तो यहाँ कोई नाव न मिली। प्रभु पर भरोसा रखकर वे तीन दिन तक नाव की प्रतीक्षा में बैठे रहे। अन्त में उन्होंने यह बेड़ा देखा।

आते ही जोलिवेट ने वृद्ध पथप्रदर्शक से बातचीत आरंभ की। उसका सारांश यह था कि यदि वे लोग उन्हें इर्कुट्स्क तक पहुँचा दें तो वे मुँहमाँगा पैसा देने को तैयार हैं।

पथप्रदर्शक बोला—"यहाँ भाड़ा तय करने की बात नहीं है। हम भी आपकी तरह संकट में हैं। हमें तो अपना जीवन बचाने का ही मार्ग ढूँढ़ना है। आप लोग प्रसन्नता-पूर्वक बेड़े पर आ जाइए।"

दोनों संवाददाता बेड़े पर चढ़ गये। नादिया ने उन दोनों को पहले की अपेक्षा अधिक गंभीर देखा। कदाचित् स्थिति की गंभीरता का ही यह परिणाम था।

अचानक जोलिवेट की दृष्टि नादिया पर पड़ी। उसे देखते ही वह कुछ पूछने के लिए समुत्सुक हो उठा; किन्तु नादिया ने तुरन्त उसे हाथ के संकेत से चुप रहने का अनु-गेध किया। इससे जोलिवेट को असीम आनन्द हुआ। नादिया ने उसे अपने पास आने का संकेत किया।

जोलिवेट और हेरी नादिया के पास आ गये। माइकेल

को उनके आने का पता नहीं था। वह चुपचाप बैठा था। जोलिवेट आश्चर्य से नादिया की ओर देखता रहा।

नादिया बोली—"क्षमा कीजिएगा। तातारियों ने मेरे भाई की आँखें दाग दी हैं, इसलिए इन्होंने आपका कोई सत्कार नहीं किया है। इन्हें आपके यहाँ आने की कोई खबर नहीं है।"

नादिया की यह बात सुनते ही जोलिवेट और हेरी की आँखों में आँसू भर आये। और दोनों धीरे धीरे माइकेल के पास गये। उसके हाथ पर हाथ रखते ही भावावेश से उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया—कुछ बोल न सके।

माइकेल ने नमस्कार करके कहा—"प्यारे मित्रो! आप से मेरी एक प्रार्थना है कि मेरे साथ आप एक अजनवी की तरह व्यवहार कीजिए—ऐसा व्यवहार मानों मुझे पहले देखा ही न हो। मेरी अन्य बातें भी इन लोगों पर प्रकट न हों। कहिये, क्या मेरी बात स्वीकार है? क्या आप हमें वचन देंगे?"

"हाँ, मित्रवर्य! मैं शपथपूर्वक कहता हूँ....." इतना कहकर जोलिवेट चुप हो गया।

"मैं भी शपथ लेता हूँ।" हेरी बोला।

माइकेल ने प्रसन्न होकर उन्हें धन्यवाद दिया। जोलिवेट बोला—"हम लोग आपकी और क्या सेवा कर सकते हैं, जिससे आपका उद्देश्य सफल हो?"

माइकेल ने हँसकर उत्तर दिया—"मित्रवर्य! मैं अपना काम स्वयं पूरा करना चाहता हूँ। किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं है।"

"अफसोस! जंगली तातारियों ने आपकी आँखें नष्ट कर दी हैं।" माइकेल ने हँसकर कहा—"नादिया साथ रहती है। वह मुझे रास्ता बतायेगी।

आधे घण्टे बाद बेड़ा खुला और अगारा नदी में प्रविष्ट हुआ। उस समय सन्ध्या हो रही थी।

अगारा की गति खूब प्रचण्ड थी। इधर-उधर हिमखण्ड तैरते दिखाई देते थे। दोनों तटों पर वृक्ष-लताओं का मनोहर दृश्य था। एक ओर ऊँचे पर्वत-शृंग दिखाई दे रहे थे और दूसरी ओर जल का श्वेत स्रोत दिखाई दे रहा था। दूर दूर छोटे गाँव दिखाई देते थे। गाँव पर काले काले धुयें के बादल और पाइन वृक्षों की लम्बी लम्बी पंक्ति-मालायें दिखाई दे रही थीं। वे तातारियों की निष्ठुरता के प्रतीक बने दिखाई दे रहे थे; किन्तु किसी ओर से तातारियों का शोर न सुनाई देता था। कदाचित् वे धीरे धीरे इर्कुट्स्क नगर की ओर बढ़ गये थे।

इस समय तीर्थयात्री और साधु-संन्यासी कीर्तन गाने में तल्लीन थे। वृद्ध पथप्रदर्शक तैरते हुए हिम-खण्डों की ओर देख रहा था। अगारा के गतिवान प्रवाह में बेड़ा इर्कुट्स्क की ओर चला जा रहा था।

(२८)

रात्रि का अन्धकार चारों ओर फैला था। नदी का किनारा दिखाई न देता था। आकाश में काले बादल घिरे थे। पहाड़ के शिखर बादलों से घिर गये थे। इसका पता न लगता था कि कहाँ पहाड़ है, कहाँ लता, वृक्ष हैं और कहाँ आकाश है। कभी कभी हवा सनसनाती हुई आती और तुरन्त नदी के तटों से टकराकर विभिन्न दिशाओं में बिखर जाती थी।

यात्री काँप रहे थे। मनुष्य हमेशा रात का ऐसा अन्धकार नहीं चाहता है; किन्तु छिपकर भागनेवाले व्यक्ति के लिए ऐसा अन्धकार आशीर्वादस्वरूप सिद्ध होता है। नदी के दोनों तटों पर कहीं कहीं तातारी सैनिकों ने अपने शिविर डाल रखे थे। बेड़े के लोग उनके शिविरों के बीच से होकर नदी के बहाव की ओर जा रहे थे।

चारों ओर निस्तब्धता थी। बेड़े पर शान्ति छाई हुई थी। यात्री और संन्यासियों ने भजन गाना बन्द कर दिया था। उनकी प्रार्थना मन में ही चल रही थी। इस समय केवल वृद्ध पथप्रदर्शक ही काम में तल्लीन था। वह बेड़े के पास आनेवाले हिमखण्डों को कुशलता से दूर हटा रहा था।

रात्रि और अधिक भयानक हो गई। उसके साथ हवा का रुख भी बदला। लगातार हिमपात होने लगा। इससे

यात्रियों के शरीर में तीर छिदने के समान वेदना होने लगी। तब भी वे शान्त थे, क्योंकि आवाज करके तातारियों के सामने नहीं आना चाहते थे। संवाददाता भी मुँह बन्द किये यह ठंढ सहन कर रहे थे।

उस समय माइकेल के मन में तो केवल कर्तव्य पूर्ण करने की ही धुन सवार थी। उसे छोड़कर उसके मन में कोई दूसरा विचार न था। कष्टों पर कष्ट सहने पर भी उसके उत्साह में रत्ती भर कमी न आई थी।

नादिया का मन भी पूर्ववत् स्थिर और दृढ़ था। परिश्रम और थकावट के कारण अवश्य ही उसकी शारीरिक शक्ति घट गई थी; किन्तु यथोचित आराम मिलने से फिर उसमें नया बल आ गया था। उसे केवल माइकेल की ही चिन्ता थी। वह सोचती थी कि माइकेल का हृदय कितना अद्भुत है। वह संकट में सहायक बनता है, यात्रा में अनुपम सहयात्री बनता है, माया और ममता में सगे भाई जैसा व्यवहार करता है।

कभी कभी नादिया को अपने पिता की याद आती। उसके पिता अपने सगे संबंधियों को छोड़कर यहाँ एक निष्कासित का जीवन गुजार रहे थे। वहाँ पहुँचने में अब अधिक देर न थी। यदि भगवान् की कृपा-दृष्टि होगी तो कल ही पिता के दर्शन होंगे और उनकी आनंददायक गोद में मीठी साँस लेने का मौका मिलेगा।

अचानक दृश्य बदल गया। जागते हुए यात्रियों ने देखा कि नदी के तट पर स्थित एक गाँव जल रहा है। दिन में तो ऐसे अनेक दृश्य देखे गये थे; किन्तु रात के अन्धकार में यह दृश्य कितना भीषण दिखाई देता था। हिमखण्ड काँच की तरह चमकते हुए इधर-उधर तैर रहे थे। केवल इतने से ही भयंकरता की समाप्ति न हुई। यात्रियों पर एक और संकट आनेवाला था, जिसकी न तो उन्हें खबर थी, न उनके अन्दर उसे रोकने की शक्ति थी।

यह बात अचानक जोलिवेट को ज्ञात हुई। उसने अचानक अपना हाथ पानी में डाला और चौंक कर हाथ खींच लिया। फिर देखा तो हाथ में एक चिकना पदार्थ चिपका हुआ था। उसने उस पदार्थ को नाक से सूँघा। अब उसे ज्ञात हुआ कि पानी पर अधिक परिमाण में तरल नेफथा डाल दिया गया है।

नेफथा एक खनिज तेल है। यह मिट्टी के तेल से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। किसी चीज को जलाने में यह पेट्रोल की बराबरी करता है। दियासलाई की सींक रखते ही यह अत्यन्त तीव्रता से जल उठता है। यह स्थिति समझकर जोलिवेट को संकट का ध्यान आ गया।

वह विचार में पड़ गया कि नेफथा यहाँ पर कहाँ से आया? क्या नेफथा का प्रवाह स्वाभाविकता से अगारा में आया होगा? या इसमें शत्रुओं का कोई षड्यंत्र होगा?

यह युद्ध-प्रथा के विरुद्ध था। सुशिक्षित युद्ध में ऐसी नीचता या अधमता का कोई स्थान नहीं है।

जोलिवेट ने यह बात हेरी से कही; किन्तु उसने इस रहस्य को अन्य यात्रियों पर न प्रकट करने का निश्चय किया। वह जानता था कि इसे जानकर ये लोग भयभीत हो जायेंगे और एक नया संकट खड़ा हो जायगा।

मध्य एशिया के अनेक स्थानों पर मिट्टी का तेल पाया जाता है। इस प्रकार की खानें ईरान की सीमा और बाकू प्रदेश में, एवचिरन टापू, केस्पियन सागर के कितटीप प्रदेश में, एशिया माइनर, चीन और ब्रह्मदेश में पाई जाती हैं।

बाकू प्रदेश के निवासी सूर्योपासक हैं। वे किसी भी उत्सव के अवसर पर समुद्र के पानी में नेफथा छोड़ते हैं। यह अपने आप ही पानी पर खूब तैरता है। यदि इसे रात को जलाया जाय तो समुद्र में ज्वालायें उठने लगती हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानों सागर ही प्रज्वलित हो रहा हो। स्रोत पर प्रज्वलित होनेवाली आग तो और अधिक भयंकर होती है। बाकू के निवासी यह काम त्योहारों के समय करते हैं; किन्तु अगारा नदी के लिए तो यह भीषण स्वरूप धारण कर सकता है।

यह बात सत्य थी कि यात्रियों में से कोई ऐसा दुष्ट कृत्य करनेवाला न था। नदी-तट पर गाँव जल रहा था। उसमें से उड़कर यदि आग की एक चिनगारी यहाँ पड़े तो

एक भयंकर लंका-दहन का दृश्य खड़ा हो सकता था। यदि ऐसा होगा तो यात्रियों के बचने का उपाय संभव न होगा। हेरी ने कहा—"क्या ऐसे समय नदी के तट पर उतर पड़ना बुद्धिमानी नहीं कही जायगी ?"

जोलिवेट ने कहा—"कितनी भी भयंकर विपत्ति हो; किन्तु मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ, जो इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा।"

रात का समय था। एक बज गया था। हेरी कुछ देखकर चकित हो उठा। हिमखण्ड पर बैठकर कोई दल उनकी ओर आ रहा था। ये तातारी लोग प्रतीत हो रहे थे।

उसने पथप्रदर्शक से यह बात बताई। उसने आँखें फाड़कर उधर देखा और बोला—"ये तातारी लोग नहीं हैं; अपितु भेडिया नाम के वन्य जीव हैं। ये तातारियों से कम निर्दय नहीं होते। हमें अन्य यात्रियों को सजग करना पड़ेगा और खूब सावधानी से काम लेना पड़ेगा। इस समय थोड़ी भी आवाज नहीं होनी चाहिए, न तो पिस्तौल या बन्दूक की आवाज करनी चाहिए। ऐसा करने से इन पशुओं को हमारी गतिविधि का पता लग जायगा।

ये भीषण प्राणी भूख से व्यग्र होकर शिकार की खोज में घूम रहे थे। मनुष्य की गन्ध से इनका अधीर बनना अत्यन्त स्वाभाविक था। यात्रियों को ज्योंही इस बात का पता लगा त्योंही वे व्याकुल हो उठे। बच्चे और स्त्रियाँ सरक कर बेड़े के मध्य भाग में छिप गये। दूसरे व्यक्तियों ने अपनी

लाठी और लकड़ियाँ सँभालीं। कितने लोगों के पास छुरी और भाले भी थे। इस प्रकार उन्होंने बड़ी शान्ति से शत्रु का सामना किया। कितने घायल हुए; किन्तु उन्होंने पशुओं को पीछे हटा दिया। पशु नदी-तट की ओर भागने लगे।

इसी समय तातारी सेना ने नदी के पश्चिम तट पर स्थित पोशक्वस्क नगर को जलाया। ज्वालाएँ ऊपर उठने से नदी का धरातल प्रकाशित हो उठा। जंगली पशु सचमुच इस आग के प्रकाश के कारण ही भाग गये थे।

देखते देखते यह आग सारे नगर में फैल गई। सैकड़ों मकान जलकर भस्म होने लगे। लगातार तड़तड़ आवाज सुनाई दे रही थी। बीच बीच में तातारी सैनिकों के आनन्द की किलकारियाँ भी निरंतर होती थीं। यह भयंकर दृश्य देखकर बेड़े के यात्री बहुत हताश बन गये। वे शत्रुओं के इतने समीप आ पहुँचे थे। अब उनकी दृष्टि से ओझल होना कठिन था।

हेरी और जोलिवेट के मन में भी आशंका और दुर्भावना का बवंडर उठ रहा था। वे सोच रहे थे कि अब क्या होगा। यदि आग की एकाध चिनगारी पानी पर आ गई तो उसका फल क्या होगा? उनका मन विचित्र उलझन में पड़ा था। हाँ, पवन की दिशा विरुद्ध होने से यह संभावना कुछ कम प्रतीत होती थी। इसीलिए अब तक ऐसी दुर्घटना न हुई।

हेरी और जोलिवेट नदी के पश्चिमी तट की ओर देख रहे थे। कुछ देर में पानी की धारा के वेग से बेड़ा उस

नगर की सीमा छोड़कर अन्धकार में विलीन हो गया। यहाँ भी नदी के दोनों तटों पर तातारी सैनिकों के शिविर थे। उनकी आवाज बारंबार यात्रियों के कान पर टकराती थी; किन्तु तातारी लोग अन्धकार के कारण बेड़े को नहीं देखते थे।

आधी रात के बाद ठंढ का प्रभाव अधिक तीव्र हो गया। पानी भी जमने लगा। यात्रियों को डर था कि कहीं बेड़ा हिमखण्ड से टकरा न जाय। पथप्रदर्शक सबसे अधिक सजग था।

वह कहता—"देखो, देखो ! इधर बाईं ओर देखो ... !"

"क्या बाईं ओर अधिक बरफ नहीं है ?"

"हाँ-हाँ। उसे बल्ली से ढकेल दो।"

"यदि बरफ इसी प्रकार आती रहेगी तो आधे घण्टे में अपनी यात्रा कठिन बन जायगी।"

"भगवान् पर भरोसा रखो। यदि उसकी ऐसी ही इच्छा होगी तो हम लोग कर ही क्या सकेंगे ?"

जोलिवेट ने माइकेल के कान में कहा—"क्या आप यह सुन रहे हैं ?" माइकेल बोला—"हाँ, भगवान् हमारे साथ है।"

इसके बाद सब शान्त हो गये। केवल पानी पर हिम-खण्डों के टकराने की आवाज ही सुनाई दे रही थी।

माइकेल का मन महान् दुश्चिन्ता से व्याकुल बना हुआ था। बेड़ा फँसने पर बरफ के असीम घेरे को पार करना बहुत कठिन था। यदि हिमखण्ड बेड़े से टकरायेंगे तो बेड़े में लगी हुई लकड़ियाँ तितर-बितर हो जायेंगी और वह नष्ट हो जायगा। उस समय बरफ हटाकर नदी को पार करने के अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं रह जायगा। ऐसा करते करते यदि सवेरा हो गया तो तातारी लोग देख लेंगे। फिर तो कठिनाइयाँ सीमाहीन हो जायेंगी और तातारी लोग घुला घुलाकर मार डालेंगे।

माइकेल ने नादिया से तैयार रहने को कहा। नादिया ने उत्तर दिया—"भाई! मैं तैयार हूँ।"

बरफ के साथ साथ बेड़ा आगे बहा। उसके बाद धीरे-धीरे उसकी गति मन्द पड़ी। यात्रियों ने हिमखण्डों को हटाने का प्रयत्न किया; किन्तु उस प्रयत्न पर पानी फिर गया। अब रात्रि केवल डेढ़ घण्टे शेष थी। वे ऐसे स्थान पर आ पहुँचे थे जहाँ से निकलने का कोई रास्ता न था। नदी के दोनों तटों से बरफ जमती हुई यहाँ तक आई थी और नदी का मुख लगभग बन्द हो गया था। उसी समय बन्दूक की आवाज सुनाई दी। कितनी ही गोलियाँ यात्रियों के सिर पर होकर गुजरने लगीं। पश्चिमी तट से भी गोलियों की प्रचंड आवाज आने लगी। पथप्रदर्शक ने कहा "सर्वनाश! शत्रुओं को हमारा पता लग गया है।"

यात्री उस समय व्यग्र हो उठे। चारों ओर से गोलियों

की वर्षा हो रही थी। उसी समय माइकेल ने नादिया का हाथ पकड़कर कहा—"चलो, नादिया !"

नादिया चुपचाप माइकेल का हाथ पकड़ कर और बेड़ा छोड़ कर बरफ पर उतर पड़ी। माइकेल ने नादिया के कान में कहा—"भय की कोई बात नहीं है। नादिया ! खूब सावधान रहना ! आवाज न हो।"

अन्धकार के कारण कोई उन्हें देख न सका। आगे आगे नादिया और पीछे पीछे माइकेल था। बरफ पर चलते-चलते उनके हाथ-पैर छिल गये, रक्त बहने लगा; किन्तु उन्हें इसका थोड़ा भी दुःख न था। दस मिनट बाद वे बरफ पारकर पानी की धारा में पहुँच आये। वहाँ कुछ इने-गिने हिम-खण्ड तैर रहे थे। ये हिमखण्ड इर्कुट्स्क की ओर बह रहे थे।

माइकेल बोला—"यह हिमखण्ड ही अब अपना सहारा है।"

नादिया तुरन्त माइकेल के कहने का अर्थ समझ गई। उसकी आँख में आशा की ज्योति चमक उठी। वह हँस पड़ी। वे एक बड़े हिमखण्ड पर सवार हो गये। बरफ इन दोनों को लेकर जलप्रवाह में तैर रही थी। बीच बीच में उन्हें तातारी सैनिकों की आवाज भी सुनाई दे जाती थी। धीरे धीरे वह आवाज कम हो गई। बेड़े के यात्रियों की स्थिति का विचार करके माइकेल के मन में दुःख हुआ।

आधे घण्टे में माइकेल और नादिया काफी दूर निकल गये। उन्हें हिम-खण्ड को बीच से टूटने का भय सता रहा था। दोनों चुप थे। माइकेल को एक ही धुन थी कि ईर्कुट्स्क कब पहुँचूंगा। और नादिया के मन में अपने पिता से मिलने की इच्छा साकार हो चली थी। उस समय रात के दो बजे थे। एक ओर इर्कुट्स्क नगर था और दूसरी ओर तातारियों का शिविर था। सामने थोड़ी ही दूर पर इर्कुट्स्क नगर दिखाई दे रहा था।

माइकेल स्थिर और दृढ़ था। इतने ही में उन्हें हिम-खण्ड ने धोखा दिया और वह एकाएक टूट गया। माइकेल घबरा गया। उसने नादिया से कहा—"नादिया!"

"भैया···।"

"पानी में कूद पड़ो। भगवान् की इच्छा जो होगी वह होगा।"

(२९)

साइबेरिया की राजधानी इर्कुट्स्क अगारा नदी के तट पर एक विख्यात नगर है। साधारणत: उसकी आबादी उस समय तीस हजार थी किन्तु भिन्न भिन्न देशों के मनुष्यों ने यहाँ शरण ली थी। इसलिए उसकी आबादी इस समय लगभग साठ हजार हो गई थी। वह व्यापार का केन्द्र है। चीन, मध्य एशिया और यूरोप के लोग यहाँ आकर अपना माल बेचते हैं। पूर्व साइबेरिया का गवर्नर-जनरल यहीं रहता

है। उसके सहायक एक सिविल गवर्नर पर इस प्रदेश के शासन-प्रबन्ध का दायित्व था। इसके सिवाय रूस के देश-निष्कासित व्यक्ति भी वहाँ रहते थे। उनकी देख-भाल के लिए एक विशेष पुलिस दल की व्यवस्था थी। यहाँ का मेयर—नगरपति—भी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति समझा जाता था। वह सामान्यतः धनिक वर्ग से लिया जाता था।

इस समय महामान्य ग्राण्ड ड्यूक संयोगवश यहाँ आ गये थे। अचानक विद्रोह हो जाने से वे रूस वापस न जा सके। ग्रांड ड्यूक राज्य के किसी कार्य से मध्य एशिया की ओर गये थे। वहाँ से विशाल साम्राज्य का परिभ्रमण करते-करते वे इर्कुट्स्क के लिए चल पड़े। यहाँ से वे सीधे मास्को जाने का विचार कर रहे थे। इतने में ही उन्हें तातारियों के आक्रमण का समाचार मिला। वे अत्यन्त शीघ्रता से इर्कुट्स्क आ पहुँचे। ड्यूक ने विद्रोहियों का सामना करने के लिए विशाल आयोजन करना आरंभ किया।

उन्हें समाचार मिला कि इशिम नगर पर शत्रुओं ने अपना अधिकार जमा लिया है। ओम्स्क और टोम्स्क नगरों का भी पतन हुआ है। ऐसे समय पर राजधानी इर्कुट्स्क का रक्षण करना आवश्यक और अनिवार्य बन गया था।

कुछ समय तक बाहर से मदद मिलने की कोई आशा न थी। आमूर और इर्कुट्स्क के सैनिकों की संख्या तातारी सैनिकों की तुलना में बहुत कम थी। वे तातारी लोगों का सामना नहीं कर सकते थे। ड्यूक को इस बात में थोड़ी

भी शंका न थी कि शत्रु लोग बड़ी सरलता से इर्कुट्स्क पर आक्रमण कर सकते हैं। इसलिए ऐसा प्रबन्ध करने की आवश्यकता थी कि शत्रु लोग कुछ समय तक इर्कुट्स्क के पास न पहुँच सकें।

उसने अपने दूत चारों ओर भेजकर विद्रोह का समाचार अपनी प्रजा के पास पहुँचा दिया और उन्हें आकर इर्कुट्स्क में निवास करने का आदेश भी भेजा। उसने प्रजा को ऐसा भी आदेश दिया था कि आते समय जो सामान साथ में न लाया जा सके उसे जलाकर नष्ट कर दें, जिससे वे वस्तुएँ शत्रुओं के हाथ में न पड़ें। जल-थल की सवारियों को भी नष्ट करने का आदेश दिया गया था।

इसीलिए चारों ओर की प्रजा ने आकर इर्कुट्स्क में बसेरा लिया। इस युद्धकाल में धन-जन के कारण खाद्य-सामग्री के कम होने का कोई भय नहीं था। नगर-जनों ने संरक्षण के लिए अपनी सेवा अर्पित करने की तत्परता दिखाई थी और जब तक बाहर से सेना न आ जाय तब तक शत्रुओं का सामना करने का उत्तरदायित्व अपने माथे पर ले लिया था।

ड्यूक अपनी प्रजा की इस तत्परता और उत्साह को देखकर चकित हो गया। प्रत्येक नागरिक बिना विश्राम लिये रात दिन काम कर रहा था। थोड़े ही दिनों में नगर के तीन ओर चहारदीवारी खड़ी हो गई और एक गहरी खाई भी खोद ली गई। वह खाई अगारा नदी के साथ जोड़ दी गई।

अगारा नदी विशाल थी। इसलिए उस ओर से शत्रुओं के आक्रमण का कोई विशेष भय न था। नगर और उपनगर के बीच इकुत नदी बहती थी। इन दोनों भागों को आवागमन के लिए जोड़ने वाला पुल तोड़ डाला गया; जिससे शत्रुओं का डटकर सामना किया जा सके।

तातारियों का तीसरा सैनिक दल येनीसेई नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ रहा था। वे सैनिक सबसे पहले इर्कुट्स्क नगर के पास पहुँच गये थे। उन्होंने अगारा नदी के आसपास और उपनगर में स्थित गाँवों में आग लगा दी थी। अन्त में उन्होंने इर्कुट्स्क नगर के सामने अंगारा के उस पार अपना शिविर डाला और अन्य दो सैनिक दलों की प्रतीक्षा करने लगे। उनका विचार खान और आइवेन संचालित सेनाओं से मिलकर नगर पर आक्रमण करने का था।

२५वीं सितम्बर को खान और आइवेन की सेनाएँ भी आ पहुँचीं। आइवेन ने देखा कि नगर के सामने की नदी पार करना संभव नहीं है। इसलिए उसने खान को एक दो मील आगे जाकर आक्रमण करने की आज्ञा दी। उसकी सूचना सफल बनी। सैनिकों ने नावों का पुल बनाकर नदी को पार कर लिया।

उस समय तक ड्यूक ने शत्रुओं का सामना नहीं किया; क्योंकि उनका उद्देश्य केवल आत्म-संरक्षण था—आक्रमण नहीं। अब तातारी सैनिक नदी के साथ साथ आगे बढ़ने लगे। रास्ते में एक ओर गवर्नर-जनरल का ग्रीष्मावास

था। शत्रुओं ने उसमें आग लगा दी। इसके बाद नगर की नाकेबन्दी करके वे आक्रमण करने की तैयारी करने लगे।

आइवेन जितना ही चतुर था उतना ही युद्धकला में प्रवीण और कुशल था। वह रूसी सेना के तैयार होने के पहले ही इर्कुट्स्क पर आक्रमण करने का विचार कर रहा था, जिससे अचानक आक्रमण होने के कारण नागरिक विवश हो जायँ और अपना संरक्षण न कर सकें। वह ताजी खोदी गई खाई देखकर नागरिकों की दूरदर्शिता को समझ गया। उसने दो बार आक्रमण किया; किन्तु उसकी सेना को ही क्षति उठानी पड़ी। ग्रांड ड्यूक स्वयं युद्ध में सम्मिलित होकर नागरिकों को युद्ध करने के लिए प्रेरित कर रहा था।

आइवेन इससे निराश नहीं हुआ। उसने खान को विश्वास दिलाया कि मैं आपकी सेना को इस प्रकार नष्ट नहीं होने दूंगा। यही उसकी नीति थी। उसे यह भी ज्ञात था कि विलम्ब होने से उल्टे लेने के देने पड़ेंगे। उसे यह समाचार भी मिला था कि इयाकुत्स्क नगर से एक बहुत बड़ी रूसी सेना इर्कुट्स्क की ओर रवाना हो चुकी है। वह सोच में पड़ गया कि कदाचित् वह सेना आकर महान् संग्राम करने लगे तो क्या आश्चर्य ! इसलिए पाँच-छः दिन के अन्दर ही नगर पर सफल आक्रमण करना चाहिए। वह विलम्ब न करना चाहता था।

दूसरी अक्तूबर को सन्ध्या समय गवर्नर-जनरल के मकान में एक मंत्रणा-सभा की गई। उसमें महामान्य ड्यूक भी उप-

स्थित थे। साथ ही नगर के मेयर और अन्य प्रतिष्ठित कार्य-कर्ता भी उपस्थित थे।

डयूक बोले—"आदरणीय सज्जनो! हमारे सिर पर कितना बड़ा संकट आ गया है, इसे आप भली प्रकार जानते हैं। हमारी मदद के लिए इयाकुत्स्क नगर से एक बड़ी सेना चल चुकी है। वह सेना जब तक न आवे तब तक रक्षा करने का उत्तरदायित्व हमीं लोगों पर है। यदि ऐसे समय नागरिक अपना कर्तव्य छोड़ देंगे तो नगर के पतन के लिए वे ही दोषी समझे जायेंगे।"

गवर्नर-जनरल ने खड़े होकर कहा—"महामान्य डयूक! आप विश्वास रखिये कि प्रत्येक नागरिक वफादार रहकर अपनी सेवा अर्पित करेगा। ये सच्चे देशभक्त हैं।"

डयूक ने कहा—"हाँ, मुझे इनके देशप्रेम के बारे में विश्वास है। इन्होंने नगर को बचाने के लिए अब तक जो वीरता और शौर्य प्रदर्शित किया है उससे मेरा विश्वास बढ़ गया है। फिर भी इतना ही काम पर्याप्त नहीं है, बल्कि अधिक साहस की आवश्यकता है। मुझे आशा है कि माननीय मेयर महोदय मेरे इस कथन को प्रत्येक नागरिक तक पहुँचायेंगे।"

मेयर ने उत्तर दिया—"नागरिकों की ओर से मैं डयूक को धन्यवाद देता हूँ; किन्तु क्या नागरिक यह जान सकते हैं कि उन्हें सैनिक सहायता कब तक मिल सकेगी?"

डयूक बोला—"हाँ, छः दिन के अन्दर ही सेना आ पहुँचेगी। उसमें पचास हजार सैनिक हैं। उनका नायक किसे-लेफ है। वह सेना तातारी सेना को अवश्य नष्ट-भ्रष्ट कर देगी। हम लोग अवश्य विजयी होंगे।"

मेयर ने कहा—"मैं माननीय डयूक को बता देना चाहता हूँ कि नागरिक जन शत्रुओं पर टूट पड़ने को तैयार हैं। केवल आदेश की देरी है।"

डयूक ने कहा—"बहुत अच्छा। हमारी सहायता के लिए जो सेना आ रही है उसे अभी और समीप आने दो। उसके समीप आने के बाद दोनों ओर से आक्रमण करके शत्रु-दल को शिकंजे में लेंगे।"

इसके बाद उसने गवर्नर-जनरल की ओर देखकर कहा—"इस बार हमें नदी के मार्ग पर खास ध्यान रखना है। असंख्य हिमखण्ड तैरते तैरते इस ओर आ रहे हैं। जैसे जैसे ठंढक बढ़ती जायगी वैसे वैसे नदी में अधिक बरफ जमती जायगी। संभव है कि तातारी लोग ऐसी जमी हुई बरफ पर होकर आक्रमण करें।"

मेयर ने कहा—"यदि आपका आदेश हो तो आप इस काम का उत्तर दायित्व मुझ पर सौंप दीजिए।"

डयूक ने कहा—"बहुत अच्छा। आप ही यह काम कीजिए।"

पुलिस के एक अधिकारी ने कहा—"मुझे भी इस सभा में एक निवेदन करना आवश्यक हो गया है।"

"किसकी ओर से यह निवेदन है ?"

"यह साइबेरिया के निर्वासित प्रजाजनों की प्रार्थना है। महामान्य ड्यूक को पता है कि इस समय नगर में पाँच सौ राजवन्दी निवास करते हैं। वे साइबेरिया के विभिन्न प्रदेशों से आये हुए हैं। उनमें कोई डाक्टर, कोई अध्यापक, कोई व्यायाम-शिक्षक, कोई जापानी विद्यालय का शिक्षक, कोई नौकादल का अधिकारी है। इस प्रकार भिन्न भिन्न वर्गों के व्यक्ति हैं। वे नगर की इस गंभीर स्थिति को देखकर सेवा करने के लिए तत्पर हो उठे हैं।"

ड्यूक ने कहा—"मैं उनकी देशभक्ति में विश्वास करता हूँ। वे क्या करने की इच्छा रखते हैं ?"

"वे अपनी एक सेना बनाकर और सारे सैनिक दलों के आगे होकर लड़ना चाहते हैं। इस कार्य के लिए वे आपकी अनुमति की अपेक्षा करते हैं।"

यह सुनकर ड्यूक आनंद से गद्गद हो उठे। उन्होंने कहा—"बहुत अच्छा। प्रत्येक निर्वासित व्यक्ति रूस का ही निवासी है। उनका देश के लिए लड़ने का अनुरोध उचित है। उनके सेनापतित्व का काम उन्हें ही करना पड़ेगा। क्या उनमें इस उत्तर दायित्व को सँभालने वाला कोई व्यक्ति है ?"

"हाँ। एक व्यक्ति है। उनमें ही एक ऐसा व्यक्ति है।"

"कौन ?"

"वासिली फेडर।"

वासिली फेडर नादिया का पिता था। वह एक निपुण डाक्टर था। निर्वासित होकर वह इर्कुट्स्क में डाक्टरी का व्यवसाय कर रहा था। वह अत्यन्त साहसी, दयालु और देश-भक्त था। उसने बीमारों की सेवा करते करते भी एक रक्षक दल खड़ा किया था। इस दल के प्रत्येक सदस्य को विश्वास था कि रूस मेरी मातृभूमि है। वह दल रूस के जार की राजनीति से सम्पूर्ण सम्मत न होने के कारण ही निर्वासित हुआ था। फिर भी उसे इस कारण देशद्रोही नहीं कहा जा सकता।

ड्यूक ने कहा—"यह नाम मेरा परिचित है। इस निर्वासित की एक सन्तान ने ही उस दिन खूब बहादुरी से युद्ध करके मातृभूमि के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की थी। उसने इसके उपलक्ष्य में कोई भी पुरस्कार नहीं माँगा था।"

गवर्नर-जनरल ने कहा—"निस्सन्देह वासिली फेडर योग्य व्यक्ति हैं। लोगों पर उनका अच्छा प्रभाव है।

"वे इर्कुट्स्क में कितने समय से हैं?"

"दो वर्ष से।"

"उनका स्वभाव और चरित्र कैसा है?"

पुलिस अधिकारी ने कहा—"बहुत ही अच्छा। वे कर्तव्य-परायण व्यक्ति हैं। उनका शरीर नीरोग और बलवान् है। उनके देखने से ही इस बात की प्रतीति होती है कि इस

व्यक्ति ने जीवन में अनेक कष्ट सहन करने पर भी कभी अपने को पराजित नहीं माना है।"

डयूक ने आनंदित होकर कहा—'वासिली फेडर !"

वासिली ने खड़े होकर डयूक को अभिवादन किया।

डयूक ने कहा—"संरक्षण दल का नायकत्व ग्रहण करके युद्ध करने की आपकी इच्छा से मुझे आनन्द हो रहा है; किन्तु प्रत्येक व्यक्ति को ध्यान रखकर रक्त के अन्तिम बिन्दुओं तक युद्ध करना चाहिए।"

"इसे मैं जानता हूँ।"

"क्या लोग तुम्हें नायक बनाने का विचार करते हैं ?"

"हाँ।"

"तो तुम उनकी बात को स्वीकार करते हो ?"

"हाँ। देश-कल्याण के लिए मैं उनकी बात मान लेता हूँ।"

"सेनापति फेडर ! आज से आप निर्वासित नहीं हैं—मुक्त हैं।"

वासिली फेडर ने विनीत भाव से धन्यवाद देने के बाद कहा—"महामान्य, मेरे अन्य साथी निर्वासित हैं। क्या मैं उनको मुक्त करने के विषय में आपसे प्रार्थना कर सकता हूँ ?"

वासिली फेडर का अपने साथियों के प्रति यह ममत्व देखकर ड्यूक को खूब आनंद हुआ। उन्होंने कहा—"आज से वे सभी निर्वासित न होकर मुक्त हैं।"

वासिली बहुत आनन्दित हुए। ड्यूक ने उनका हाथ पकड़कर हँसते हुए कहा—"जार भी यह बात सुनकर आनंदित होंगे।"

इस समय रात काफी बीत चुकी थी। खिड़की से तातारियों के शिविर में चारों ओर जलनेवाली असंख्य मशालों का फैला हुआ प्रकाश देखा जा सकता था।

सभा समाप्त होनेवाली थी। इसी समय एक पहरेदार कमरे में आकर बोला—"महाराज! एक रूस का राजदूत बाहर खड़ा है।"

(३०)

सभा चकित हो उठी। सभा-जनों ने दरवाजे की ओर देखा। रूस के राजदूत और महामान्य जार के सन्देशवाहक को इर्कुट्स्क में आने की असंभवित बात सुनकर सब विस्मित हो उठे।

ड्यूक तेजी से आगे आकर बोले—"राजदूत कहाँ है ?"

एक व्यक्ति अन्दर घुसा। थकावट से उसका शरीर शक्तिहीन प्रतीत होता था। उसका चेहरा धूल से भरा था। उसने साइबेरियन कृषक जैसी पोशाक धारण की थी। कपड़े गन्दे थे। उसमें स्थान स्थान पर छेद हो गये थे। माथे पर रूसी

टोपी थी। पैर में फटे हुए जूते थे। यह अच्छी तरह समझा जा सकता था कि वह बड़े कष्ट से लम्बा पंथ काटकर यहाँ आया हुआ है।

उसने ड्यूक को अभिवादन करके कहा—"ग्रांड ड्यूक की जय हो।"

"क्या तू जार का राजदूत है ?"

"हाँ, सरकार।"

"कहाँ से आया है ?"

"मास्को से।"

"कब रवाना हुआ ?"

"१५वीं जुलाई को।"

"तेरा नाम ?"

"माइकेल स्ट्रगोफ"

वास्तव में यह माइकेल स्ट्रगोफ न था। यह माइकेल के वेश में आया हुआ धोखेबाज आइवेन था और माइकेल के नाम से अपना कार्य सिद्ध करना चाहता था। ड्यूक ने सभा-जनों को बाहर जाने की सूचना दी। सब बाहर चले गये। कमरे में ड्यूक और आइवेन दो ही जन रह गये।

ड्यूक ने बड़ी सावधानी से राजदूत को देखना आरंभ किया। फिर पूछा—"क्या तू १५वीं जुलाई को मास्को से रवाना हुआ था ?"

"हाँ। १४वीं जुलाई की रात को मैं नये राजमहल में

महामान्य जार के पास हाजिर था।" इतना कहकर उसने ड्यूक के हाथ में एक पत्र रख दिया।

ड्यूक ने पत्र को चुँथा हुआ देखकर पूछा—"क्या तुम्हें पत्र इसी दशा में मिला था?"

"नहीं। इसे तातारी सैनिकों के हाथ में जाने से बचाने के लिए ही मैंने इस प्रकार मोड़कर छिपा रखा था।"

"तो क्या तू तातारियों के हाथ में फँस गया था?"

"हाँ, मैं उनके हाथ में आ गया था इसीलिए १५वीं जुलाई को चलकर आज दूसरी अक्टूबर को यहाँ पहुँच रहा हूँ।"

ड्यूक ने पत्र खोला। वे तुरन्त जार के अक्षरों को पहचान गये। अब पत्र के बारे में उन्हें कोई शंका न रही। उन्हें पहले तो कुछ आइवेन पर सन्देह उत्पन्न हुआ था; किन्तु वह भी जाता रहा।

"मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह पत्र यदि तातारियों के हाथ में जायगा तो मतलब नहीं सिद्ध होगा। इसीलिए मैंने इसे मोड़कर छिपा रखा था।"

"इसमें लिखा हुआ है कि रक्त देकर भी स्वाधीनता की रक्षा होनी चाहिए। क्या तुझे इस बात का पता है?"

"हाँ।"

"तुझे यह भी पता है कि विद्रोहियों का सामना करने के लिए एक सेना रवाना हो चुकी है।"

"पता है; किन्तु वह सेना कुछ नहीं कर सकेगी।"

"क्या कारण है ?"

"आपको तो पता है कि इशिम से लेकर ओम्स्क, टोम्स्क आदि बड़े बड़े नगरों और बन्दरगाहों को शत्रुओं ने बात की बात में जीत लिया है।"

"किन्तु इन स्थलों में कहीं भी हमारी ओर से सामना या युद्ध नहीं किया गया है।"

"सरकार ! युद्ध और प्रतिरोध हुआ था; परन्तु···।"

"तो क्या वे पराजित हो गये ?"

"हाँ, सैनिक विद्रोहियों से टक्कर न ले सके। रूसी सेना विद्रोहियों की अपेक्षा बहुत कम थी।"

"क्या तू यह बात जानता है कि शत्रुओं का सामना किन-किन स्थलों पर हुआ था ?"

"हाँ। किलवन और टोम्स्क नगरों में···।"

आइवेन की यहाँ तक की बातें सत्य थीं। अब उसने अपनी असत्य बातों का आरंभ करते हुए कहा—"और तीसरी बार क्रोस्नोयार्स्क नगर में प्रतिरोध हुआ।"

"क्या कहते हो ? क्या उस आक्रमण में भी···।"

आइवेन ने अपनी बात पर विशेष भारदेते हुए कहा—"आक्रमण का सामना ही नहीं; बल्कि नियमानुसार युद्ध हुआ।"

"युद्ध ?"

"हाँ, टोल्स्क और सीमा की बीस हजार सैनिकों की सेना तातारियों की डेढ़ लाख सेना पर टूट पड़ी थी। यद्यपि वह अत्यन्त वीरता से लड़ी; किन्तु अन्त में पराजित हुई।"

ड्यूक बोले—"असत्य।"

"नहीं सरकार! अक्षर अक्षर सत्य है। क्रास्नोयार्स्क के युद्ध में मैं वहाँ उपस्थित था और वहीं बन्दी बनाया गया।"

"यह युद्ध कब हुआ था ?"

"दूसरी सितम्बर को, सरकार!"

"क्या तू विद्रोहियों की सेना का अनुमान कर सकता है ?"

"लगभग चार लाख, सरकार!"

आइवेन अपना स्वार्थ साधने के लिए असत्य और अतिशयोक्ति का सहारा ले रहा था।

ड्यूक ने फिर पूछा—"क्या हमको पश्चिम प्रदेश से कोई सहायता मिलने की आशा नहीं है ?"

"नहीं सरकार! शीत ऋतु से पहले नहीं मिलेगी।"

ड्यूक भीषण रूप से उत्तेजित हो उठा और बोला—"चाहे जो हो, माइकेल स्ट्रगोफ! पूर्व या पश्चिम ओर से सहायता मिले या न मिले, किन्तु यह एक बात अच्छी तरह समझ लो कि अपना प्रदेश किसी भी तरह जंगली तातारियों

के हाथ में नहीं जाना चाहिए। उनकी संख्या चाहे कितनी ही अधिक हो; किन्तु अपने देश की रक्षा होनी चाहिए।"

अब मानो आइवेन की कुटिल नीति विजयी हुई। ड्यूक को उसकी धोखेबाजी की शंका नहीं हो पाई। आइवेन कुछ देर चुप रहा।

ड्यूक ने फिर पत्र पढ़ा और कहा—"क्या तुझे इसका पता है कि इसमें मुझे सावधान रहने की सूचना दी गई है। मुझे सावधान रहना ही पड़ेगा।"

"हाँ, सरकार! आइवेन ओगारेफ को पकड़ने के लिए जाल फैलाया गया है।

"हाँ। मुझे भी यह समाचार मिला है कि वह वेश बदल कर नगर में घुसेगा, मेरा विश्वास-पात्र बनेगा और फिर योग्य अवसर मिलते ही धोखा देकर शत्रुओं को आक्रमण करने में सहायता देगा। मैं इस बात को अच्छी तरह जानता हूँ।"

"हाँ सरकार! मुझे इस बात का पता है और यह भी मालूम है कि उसने अपने हाथ से आपको पकड़ने की प्रतिज्ञा की है।"

"क्या कहते हो?"

"सरकार! मैंने सुना है कि आपने उसे उच्च पद से पदच्युत किया था।"

"हाँ, याद आया। जो व्यक्ति देश-विरोधी आचरण करे, जंगली तातारियों को विद्रोह करने के लिए प्रेरणा दे और

आक्रमण में उनकी मदद करे ऐसे व्यक्ति को दूसरा क्या दण्ड दिया जाय ?"

ड्यूक कुछ देर तक शान्त रहकर फिर कुछ याद आते ही बोले—"क्या कहीं आइवेन से तुम्हारी भेंट हुई थी ?"

"हाँ सरकार! क्रास्नोयार्स्क के युद्ध के बाद भेंट हुई थी; किन्तु वह मुझे पहिचान न सका। इसीलिए मैं बच गया।"

"तू कैद से किस तरह छूटा ?"

"इर्तुश के पानी में कूद पड़ा था।"

"यहाँ किस प्रकार आया ?"

"आज सन्ध्या काल को जब तातारियों पर आक्रमण हो रहा था तब मैं रक्षक दल के साथ नगर में आ पहुँचा और उन्हें अपना परिचय दिया। इसलिए वे लोग मुझे आप सरकार के पास ले आये।"

ड्यूक ने उसके साहस की प्रशंसा की और कहा—"ऐसी विपत्ति में भी तूने बड़े साहस और वीरता से काम लिया है। तेरी सेवा मुझे सदा याद रहेगी। बोलो, क्या तुझे कुछ और कहना है ?"

ओगारेफ ने विनीत भाव से कहा—"सरकार! मेरी एक ही इच्छा है कि आपके पास रहकर शत्रुओं से युद्ध करूँ। अन्य कोई इच्छा नहीं।"

ड्यूक ने सन्तुष्ट होकर कहा—"ऐसा ही होगा माइ-

केल! आज से तू मेरा अंगरक्षक है। तू इसी महल में रहना।"

ओगारेफ ने कहा—"कदाचित् आइवेन अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए छिपे हुए और झूठे नाम से आपके पास आवे तो?"

"तो उसके कपटी वेष को नष्ट कर दिया जायगा और योग्य सजा दी जायगी। तू तो उसे पहचानता ही है। इसलिए चिन्ता की कोई बात ही नहीं है। उसके प्राण भी लिये जायँगे।"

यहाँ तक आइवेन ने माइकेल का पाठ ठीक ठीक अदा किया।

अब वह ड्यूक का अंगरक्षक बना। वह इसी महल के अन्दर रहेगा। उसे व्यक्तिगत गोपनीय बातें भी जानने को मिलेंगी। नगर में उसे कोई पहचान न सकेगा। उसे पहचाननेवाला नगर में कोई नहीं था। इसलिए वह अपना उद्देश्य सिद्ध करने के कार्य में शीघ्र लग गया। उसे रूसी सेना के जल्द ही आ जाने की खबर थी। इसलिए वह सेना आने के पहले ही नगर का पतन चाहता था। उसे विश्वास था कि यदि एक बार तातारी सेना नगर पर अधिकार कर लेगी तो रूसी सेना का कोई बस नहीं चलेगा और इन सबके पहले ड्यूक की मृत्यु होनी चाहिए।

ड्यूक के अंगरक्षक बनने के बाद आइवेन को कोई रोकनेवाला न था। उसने दो दिन में ही नगर के सभी

छोटे बड़े रास्तों को देख लिया। नगर-जन उसका अधिक सम्मान करते थे। वह अनेक बार अपनी यात्रा की कहानी सुनाता और लोगों का प्रेम-भाजन बनता था। लोग उसकी बातों से चकित और प्रभावित हो जाते थे। वह इस ढंग से बात करता कि सुननेवाले को उसकी बात अक्षरशः सत्य प्रतीत होती थी।

उसने राजमहल से भागनेवाले गुप्त रास्तों को भी अच्छी तरह देख लिया। सन्ध्या काल को वह दो दो बार द्वार के पथ पर आकर खड़ा रहता और इधर-उधर टहलने लगता था। यहाँ से लगभग एक मील दूर पर एक सरोवर था। वहाँ तातारी लोगों का पड़ाव था। इस गुप्त मार्ग से वह तातारी लोगों के पास संकेत भेजता था।

इन दो दिनों में तातारी सेनाओं ने आक्रमण का कोई प्रयास नहीं किया। इसीलिए चारों ओर अपूर्व शान्ति फैली थी। इसका मूल कारण आइवेन की योजना ही थी। उसके नगर-प्रवेश के बाद तातारी लोगों ने एक बन्दूक की भी आवाज न की थी। इस वातावरण को स्थापित करके वह नगर के रक्षकदल को असतर्क बना देना चाहता था। उसकी यह इच्छा सफल भी हुई।

ओगारेफ ने अच्छा अवसर देखकर किले के बाहर एक पत्र फेंका। सांगरे उसे लेने के लिए पहले ही से तैयार थी। उसने वह पत्र ले जाकर खान के हाथ में दिया। इससे तातारी सेनानायकों को खबर मिली कि ५वीं अक्टूबर को

आधी रात के बाद अँधेरे में नगर का गुप्त दरवाजा खुला रहेगा।

(३१)

आइवेन उस गुप्त द्वार को बिना पहरे का रखकर उसी रास्ते तातारी सेना लाना चाहता था। यदि यह परिस्थिति ज्यों की त्यों चलती रहती तो निःसन्देह उसकी योजना सफल हो सकती थी।

वह सोचने लगा कि पाँचवीं अक्टूबर को अर्थात् अब से चौबीस घण्टे के अंदर इर्कुट्स्क खान के अधिकार में आ जायगा। ग्राण्ड ड्यूक कैदी बनकर उसके सामने खड़े होंगे। उस समय उन्हें पता लगेगा कि वे स्वयं आइवेन के सामने खड़े हैं।

उस दिन राजभवन की खिड़की से स्पष्ट दिखाई देने लगा कि नदी के दूसरे तट पर शत्रु-गण युद्ध की तैयारी में संलग्न हैं। असंख्य तातारी सैनिक विभिन्न दिशाओं से आकर खान की सेना की संख्या बढ़ाने में लगे थे।

आइवेन ने ड्यूक को यह कहकर सचेत किया था कि तातारी सेना नगर पर दो दिशाओं से आक्रमण करेगी। इसलिए दोनों ओर रक्षक दल का होना आवश्यक है। ड्यूक ने आइवेन की यह बात मान ली। इसीलिए रक्षकदल को नगर के दूसरे भागों से हटाकर दोनों ओर नियुक्त कर दिया गया।

आइवेन अपना मतलब बनाने के लिए जो चाहता था वह सिद्ध हो गया। वह प्रतीक्षा में था। उसे निश्चित समय पर गुप्त द्वार खोल देना था। पूर्व दिशा में पहाड़ की तल-हटी में एक तातारी सैनिक छिपा था। संकेत पाते ही बिना विरोध के वह नगर में आकर युद्ध-युद्ध चिल्लानेवाला था।

तातारियों के आक्रमण को निष्फल बनाने के लिए इर्कु-ट्स्क के लोग रात-दिन अथक परिश्रम कर रहे थे। उन तैयारियों पर मेयर और ड्यूक का सीधा निरीक्षण था। नगर के उत्तर से आक्रमण होने का भय था। उसके रक्षण का उत्तरदायित्व वासिली फ्रेडर पर था। वासिली फ्रेडर ने अत्यन्त उत्साह से अपनी नव व्यवस्थित सेना को एकत्र किया था।

सूर्य अस्त हो गया। अब आकाश से सन्ध्या का अन्तिम रंग भी विदा लेने लगा। अँधेरी रात घिर आई। आकाश मेघाच्छादित था। आइवेन अन्धकार के और अधिक बढ़ने का रास्ता देखने लगा।

पिछले कई दिनों से ओस खूब पड़ रही थी। उससे प्रचण्ड ठंढ पड़ने की संभावना बढ़ रही थी। साइबेरिया की इस ठंड का वर्णन क्या किया जाय? इन दिनों में नदियों में बेड़े नहीं चल सकते थे। आज सन्ध्या काल से ही यह ठंड जान पड़ने लगी थी। अगारा के प्रवाह में असंख्य हिम-खण्ड दृष्टिगोचर हो रहे थे।

डयूक और अन्य अधिकारियों के मन में आशा पैदा हो गई कि इस स्थिति में नदी में जहाज नहीं चल सकेगा और तातारियों को पैदल चलकर आना पड़ेगा। यह बात तातारियों के लिए संभव न थी। वे इस बरफ की ठंड कदापि सहन नहीं कर सकेंगे।

नगरवासियों ने रात्रि के ठंडे वातावरण में शान्ति की साँस ली। यद्यपि यह बात आइवेन के प्रतिकूल थी; किन्तु उसने निराशा को अपने पास न आने दिया। उसे अच्छी तरह ज्ञात था कि तातारी लोग नदी पार करके नगर पर आक्रमण नहीं कर सकेंगे। फिर भी उसने नगरवासियों से वस्तुस्थिति को छिपाने के लिए आक्रमण की बात फैला दी थी। तातारी सेना तो अन्य मार्ग से नगर पर आक्रमण करनेवाली थी।

रात के एक बजे अचानक नदी की स्थिति बदल गई। नदी पार करने में जो रुकावट खड़ी हुई थी वह अचानक दूर हो गई। अगारा की धारा फिर कलकल करके बहने लगी। अचानक हिमखंड अदृश्य हो गये। इससे डयूक और दूसरे अधिकारियों ने समझा कि कदाचित् दूसरे स्थान पर बरफ जम गई होगी। इसीलिए इधर पानी का प्रवाह खुला हुआ दिखाई देने लगा है।

वास्तव में यही घटना घटी थी। माइकेल, नादिया, दोनों संवाददाता और अन्य यात्रियों को ले आनेवाला बेड़ा

उसी समय बरफ के कारण रुक गया था और अगारा नदी का रास्ता आक्रमणकारियों के लिए पूर्णतः खुल गया था। इस सुयोग का लाभ लेकर आक्रमणकारी नावों और बेड़ों द्वारा बड़ी आसानी से नदी को पार कर सकते थे। नगर रक्षक-दल अधिक सजग बन गया।

धीरे धीरे आधी रात गुजर गई। पूर्व दिशा की ओर राजमहल का फाटक निस्तब्ध था। नगर के पास की पर्वत-माला काली दिखाई दे रही थी। सब एकाकार हो गया था। ठीक इसी समय तातारियों के शिविर में मशालें जल उठीं और तीव्र हलचल का संचार हो उठा। कदाचित् यह आक्रमण आरंभ करने का संकेत था; किन्तु कुछ देर बाद मशालें बुझ गईं और सब सुनसान हो गया।

इसी प्रकार एक घंटा और बीता। कोई नयी घटना न घटी। निस्तब्धता का साम्राज्य था। ड्यूक और अधिकारियों के मन में यह सन्देह हो उठा कि कहीं युद्ध आरंभ न हो जाय। नगर-रक्षक दल यह न समझ सका कि शत्रुओं का पैंतरा क्या है। और वे कौन सी चाल चल रहे हैं।

ड्यूक ने रात को दो बजे आइवेन की जाँच की। रक्षक-दल के एक सैनिक ने जोर से उसका नाम लेकर बुलाया; किन्तु आइवेन ने कोई उत्तर न दिया। वह उस फाटक में छिपकर खड़ा था। ड्यूक को पता मिला कि राजदूत राज-महल में नहीं है।

टावर में दो बजने का घंटा हुआ। आइवेन ने इसी समय तातारियों को दरवाजे पर आक्रमण करने की सूचना दी थी। वह गुप्त मार्ग से छिपकर नदी-तट पर पहुँचा। उसके हाथ में रूई की कुछ पीउनियाँ थीं। पूर्व योजनानुसार पास के पोष्कावस्क नगर से तातारी लोग नदी में तेल बहानेवाले थे। उसी तेल को जलाने की योजना आइवेन ने की थी। उसी रात को तातारियों ने अगारा की धारा में नेफथा बहाया था। अब से कुछ पहले जोलिवेट ने हाथ डुबोकर उसी नेफथा को देखा था।

आइवेन की यह व्यूहरचना युद्ध-नियम के विरुद्ध थी। वह रूसी होने पर भी तातारियों का सहायक होने के कारण ऐसा निन्द्य कार्य करने में हिचकता न था। उसने रूई की पूनियों को जलाकर तेल पर फेंक दिया। देखते देखते एक ही क्षण में महान् दावानल जल उठा। वह आग थोड़ी ही देर में नदी के दोनों किनारों तक फैल गई। उसकी ज्वालाएँ ऊँचे आकाश में भी लपलपाने लगीं। आग के कारण हिम-खण्ड मोम की तरह पिघलने लगे। एक भयंकर दृश्य खड़ा हो गया।

दूसरे ही क्षण वह आग नगर के उत्तर और दक्षिण ओर फैली प्रतीत हुई।

"और अब···" आइवेन ने दाँत पीसकर मन ही मन कहा।

संकेत पाते ही तातारी सेना ने भयंकर गर्जना की।

शस्त्रों का भीषण नाद हुआ। हजारों बन्दूकों और पिस्तौलों की आवाज हुई।

यह देखकर नगररक्षक व्याकुल हो गये। एक ओर से तातारी सेना बढ़ी आ रही थी और दूसरी ओर प्रचण्ड अग्नि की ज्वालाएँ थीं। नदी-तट पर स्थित घर जलने लगे और आग क्रमशः आगे बढ़ने लगी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो अभी सारा नगर भस्म हो जायगा। नगर का एक सैनिक दल तातारी सेना का सामना करने को दौड़ा और दूसरा दल आग बुझाने दौड़ा। राजमहल का फाटक पूर्णतः खुला था।

आइवेन लौटकर कमरे में आया और कमरे में भी आग लग जाने के भय से बाहर जाने को तैयार हुआ। उसने ज्यों ही दरवाजा खोला त्यों ही एक स्त्री वायुवेग से अन्दर घुस आई। उसका शरीर पानी से भीग गया था और कपड़ों से टप-टप पानी टपक रहा था। उसके सिर के बाल बिखरे हुए थे।

आइवेन ने आश्चर्य से कहा—"सांगरे।" वह यह मानता था कि सांगरे को छोड़कर दूसरा यहाँ कौन आयेगा ? किन्तु वह सांगरे न थीं; बल्कि नादिया थी।

माइकेल और नादिया जिस समय हिम-खण्ड पर बैठकर इर्कुट्स्क की ओर जा रहे थे उसी समय अचानक जल-प्रवाह में आग लग गई। इससे नादिया घबरा गई। आग से बचने के लिए दोनों ने पानी में डुबकी लगाई। वहाँ से लगभग सौ गज की दूरी पर नगर का घाट था। वे अत्यन्त कठिनाई

से नगर के घाट पर पहुँचे। इस प्रकार माइकेल की कष्ट-दायक यात्रा समाप्त हुई।

अग्नि की ज्वालाएँ राजमहल की ओर आगे बढ़ रही थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि वे थोड़ी देर में ही राजमहल को स्पर्श कर लेंगी। नगरवासियों ने सुविधा के लिए नदी की ओर का राजमहल का दरवाजा खोल दिया था। इसी रास्ते माइकेल और नादिया अन्दर घुस आये। राजमहल के नीचे के कमरे में घबराये हुए सेनापति और अन्य कर्मचारी दौड़-धूप कर रहे थे। खूब भीड़ जमा थी।

इसी भीड़ के कारण माइकेल और नादिया एक दूसरे से अलग हो गये। माइकेल का पता लगाने के लिए नादिया बावली हो गई और इधर-उधर दौड़ने लगी। वह तत्काल ही माइकेल को ड्यूक के पास ले जाना चाहती थी।

अचानक नादिया को एक कमरे की रोशनी दिखाई दी। वह कमरे में घुस गई; किन्तु अन्दर आते ही चौंक उठी। उसके सामने वह आदमी खड़ा था, जिसको उसने पहले इशिम में और फिर टोम्स्क में देखा था। वह उसे तुरन्त पहचान गई।

नादिया बोली—"आइवेन ओगारेफ!"

यह सुनते ही वह धोखेबाज काँप उठा। उसको अपना सच्चा परिचय प्रकाशित होता हुआ प्रतीत हुआ। सच्चा परिचय जानने पर उसकी सारी बाजी औंधी होने की संभा

वना थी। अब वह विचार में पड़ गया। परिचय रखनेवाले व्यक्ति को मृत्यु के घाट उतारे बिना दूसरा कोई रास्ता न था।

आइवेन नादिया की ओर बढ़ा। नादिया ने आत्मरक्षा के लिए हाथ में छुरी ले ली और बोली—"आइवेन ओगा-रेफ!"

उसे आशा थी कि आवाज सुनकर कोई न कोई उसकी सहायता के लिए दौड़ आयेगा।

ओगारेफ अचानक रुक गया। उसने दाँत पीसकर धीमी आवाज से कहा—"चुप रह! शोर मत कर!"

नादिया घृणा से उत्तेजित हो उठी। उसे ओगारेफ की दुर्बलता का ध्यान आया। उसके अन्दर साहस की एक नयी ज्योति चमक उठी। उसकी आवाज भी प्रबल बन गई और पुनः बोली—"आइवेन ओगारेफ···शैतान।"

आइवेन इसे सहन न कर सका। उसकी आँखें क्रोध से लाल हो उठीं। कमर से छुरा निकालकर वह पागल की तरह नादिया की ओर बढ़ा। नादिया सरककर कमरे की दीवार के पास आ गई। उसके हाथ का छुरा आग के प्रकाश में चमक उठा।

इतने में ही नादिया ने देखा कि किसी प्रबल शक्ति ने इस दुराचारी और अधम आइवेन को जमीन पर दे मारा है।

"माइकेल भैया···।" नादिया की आँखों में आशा और आनन्द के आँसू छलक पड़े। माइकेल सामने खड़ा था।

माइकेल ने दूर से नादिया की आवाज सुनी। वह आवाज की दिशा में आगे बढ़ा और खुले दरवाजे से होकर कमरे में घुस आया।

"घबराना मत नादिया!" इतना कहकर नादिया और आइवेन के बीच माइकेल खड़ा हो गया।

"हाय···।" एक प्रबल श्वास लेकर नादिया ने कहा—"सावधान भैया! उस दगाबाज के हाथ में शस्त्र है। सावधान!"

आइवेन फिर खड़ा हुआ। माइकेल को अन्धा समझकर आइवेन उसपर टूट पड़ना चाहता था। वह आगे बढ़ा।

नादिया भय से चिल्ला उठी—"भैया···।"

माइकेल ने आइवेन के दोनों हाथ पकड़ लिये और उसका छुरा छीनकर जोर से धक्का मारा। वह जमीन पर गिर पड़ा। आइवेन का चेहरा अपमान से काला हो गया। अब भी वह शस्त्रहीन न था। उसके हाथ में तलवार चमक रही थी। आइवेन एक अन्धे व्यक्ति पर तलवार उठा रहा था।

यह देखकर नादिया का हृदय काँप उठा। वह दरवाजे की ओर दौड़ी और सहायता करने के लिए जोर से चिल्ला पड़ी।

"दरवाजा बन्द कर दे नादिया!" माइकेल बोला—

"किसी को बुलाना मत। मैं इससे अकेला लड़ूँगा। एक धोखेबाज को सामने खड़ा देखकर राजदूत कदापि घबड़ाता नहीं है। उसमें साहस हो तो आगे आवे। मैं तैयार हूँ।"

ओगारेफ के मुँह से एक भी शब्द न निकला। वह धीरे से खड़ा हुआ और आक्रमण की चेष्टा करने लगा। वह बिना आवाज किये ही धीरे धीरे आगे बढ़ने लगा। उसने इतनी सावधानी रखी कि माइकेल को साँस की आवाज भी सुनाई न दे और वह विश्वासघातक युद्ध में सामने न आकर गुप्त हत्या के लिए तत्पर बन गया।

माइकेल की साहसपूर्ण बातों से नादिया में फिर श्रद्धा और विश्वास स्थापित हो उठा था; किन्तु उसका सारा शरीर भय से काँप रहा था। उसके चेहरे पर श्रद्धा और भय की मिश्रित भावनाएँ प्रतिभासित हो रही थीं। वह इच्छा न होने पर भी इस द्वन्द्व युद्ध में एक प्रेक्षक के रूप में खड़ी थी। एक ओर अन्धा माइकेल था और दूसरी ओर उसके सामने एक खड्गधारी दुर्दान्त शत्रु था। ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई अदृश्य देवता इस अन्धे के पक्ष में खड़ा हो। यदि ऐसा न होता तो अन्धा व्यक्ति भला किस प्रकार से शैतान का आक्रमण सहन कर सकता?

आइवेन ने माइकेल के चेहरे की ओर देखा। उसके मन में भय और दुर्भावना उत्पन्न हो गई। उसका प्रतिद्वन्द्वी अन्धा है, दृष्टिहीन है फिर भी उसका अविचल, निःशंक और शान्त भाव देखकर आइवेन के शरीर का रक्त जम

गया, तो भी वह हतोत्साह नहीं हुआ। उसे इस बात का विश्वास था कि यह अन्धा किसी भी तरह मुझसे विजयी नहीं हो सकता। अचानक वह माइकेल की छाती को लक्ष्य करके उस पर टूट पड़ा।

माइकेल भी खूब कुशल था। उसने अपनी अद्‌भुत कुशलता से आइवेन की तलवार के वार को विफल कर दिया और अपने शरीर पर तनिक भी चोट न आने दी। फिर वह अत्यन्त धीरता से दूसरे आक्रमण का सामना करने को प्रस्तुत हो गया।

आइवेन मन में भयभीत हो उठा। उसके माथे पर पसीना आ गया और एक कदम पीछे हट गया। इसके बाद फिर माइकेल की ओर आगे बढ़ा; किन्तु उसका यह आक्रमण भी निष्फल गया।

अब तो आइवेन अपने अपमान और पराजय से पागल हो उठा। अब भी माइकेल किसी सजीव पाषाण मूर्ति की भाँति अविचल और शान्त भाव से उसके सामने खड़ा था। वह उसके चेहरे को देखकर चौंक पड़ा और आश्चर्य से भर उठा।

अब उसके सामने दो सजीव आँखें चमक रही थीं। वह दृष्टि ज्वलन्त थी, और आइवेन के मर्म को वह दृष्टि तीर की तरह छिन्न भिन्न कर रही थी। जो आँखें अब तक देख न सकती थीं उन्हीं आँखों ने उसके मन में भय का एक अभेद्य व्यूह निर्माण कर दिया था।

एक असहाय को तरह आइवेन आर्तनाद कर उठा—"ये ज्वलंत आँखें···मेरी ओर देख रही हैं।"

जिस प्रकार कोई भयभीत प्राणी अपना प्राण बचाने के लिए भागे उसी प्रकार आइवेन अपना प्राण बचाने के लिए दरवाजे की ओर खिसकने लगा।

वह पाषाण मूर्ति सजीव बन गई। माइकेल स्ट्रगोफ आइवेन की ओर बढ़ा और उसके पास जाकर बोला—"हाँ, मैं देख सकता हूँ, स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। विश्वास-घातक के मुख पर पड़े हुए कोड़े के चिह्न स्पष्ट रीति से देख सकता हूँ। तुझ पर कहाँ आक्रमण करना है, उसे भी देख रहा हूँ। शैतान! कायर! यदि तुझमें हिम्मत हो तो अपने प्राण की रक्षा कर।"

"भैया माइकेल! क्या आप देख सकते हैं?" नादिया ने आश्चर्य से पूछा।

आइवेन समझ गया कि अब बचने की कोई संभावना नहीं है इसलिए उसने माइकेल पर प्राणघातक आक्रमण किया। उसकी तलवार से माइकेल का छुरा टक्कर लेने लगा। छुरा चलाने में माइकेल अत्यंत कुशल था। उसने छुरे को आइवेन की तलवार के साथ ऐसा टकराया कि उसकी तलवार दो टुकड़े हो गई। अब आइवेन शस्त्रहीन बन गया। तुरन्त ही उसकी छाती में माइकेल का छुरा खूब गहराई तक घुस गया। आइवेन जोर से चिल्लाकर मुर्दे की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

इसी समय कमरे का दरवाजा खोलकर ड्यूक और उनके कितने ही शस्त्रधारी सैनिक अन्दर आये। धरती पर 'राजदूत' का शव देखकर ड्यूक विस्मित बन गये। उनके सामने एक साइबेरियन युवक और युवती खड़े थे।

ड्यूक ने गर्जना करके पूछा—"इसकी हत्या किसने की ?"

एक सैनिक ने माइकेल को मारने के लिए पिस्तौल ऊपर उठाई। ड्यूक ने उसे रोक दिया और साइबेरियन युवक की ओर देखकर पूछा—"तेरा नाम क्या है ?"

"सरकार! आपके सामने जो शव पड़ा है वह किसका है ?

"रूस के राजदूत का।" ड्यूक ने कहा।

"नहीं श्रीमान्! यह जार का सन्देश-वाहक नहीं है। इसका नाम आइवेन ओगारेफ है।"

ड्यूक चौंककर बोले—"आइवेन ओगारेफ!!"

"हाँ सरकार! विश्वासघातक आइवेन ओगारेफ है।"

"तो तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम माइकेल स्ट्रगोफ है।"

(३२)

माइकेल अन्धा न था। वह पहले की ही तरह देख सकता था। यह घटना मानव-जीवन के लिए एक रहस्य है। इस कार्य में उसकी शारीरिक और मानसिक शक्ति का

महत्त्वपूर्ण हाथ था। उसी के परिणामस्वरूप तलवार की तपती हुई लाल धार रखने पर भी उसकी दृष्टिशक्ति नष्ट नहीं हो सकी थी।

हमें विदित है कि माइकेल की आँखों के नष्ट करने के समय उसकी माँ भी वहाँ उपस्थित थी। उसने अपने दोनों हाथ विवशता से अपने पुत्र की ओर फैला दिये थे। माइकेल को अच्छी तरह पता था कि वह अपनी माँ की स्नेहमयी करुण मूर्ति फिर नहीं देख सकेगा। यह अन्तिम दर्शन है। इस दशा में पुत्र के हृदय में दर्शन के लिए जिस आवेग की संभावना होती है उसी आवेग से वह अपनी माँ को देख रहा था। यद्यपि वह अपने आँसुओं को रोकने का प्रयास कर रहा था; किन्तु परिणाम उससे उल्टा मिला। उसकी आँसुओं की धारा बन्द न हुई और दृष्टि-पटल पर आँसुओं का पर्दा छा गया। इसी पर्दे ने उसकी दृष्टिशक्ति की रक्षा की। जिस समय जल्लाद आग में तपी हुई तलवार की धार उसकी आँखों के पास ले आया उस समय धार की गर्मी से आँखों में पूर्वसंचित अश्रुजल भाप बनकर पुतलियों पर जम गया। यह भाप तपती हुई तलवार की धार के भीषण प्रभाव को नष्ट करने के लिए पर्याप्त थी। जो मजदूर लोहे के कारखाने में लोहा गलाने का काम करते हैं वे भाप में हाथ डुबोकर आसानी से पिघले हुए लोहे को भी उठा सकते हैं। इससे उन्हें किसी तरह की हानि नहीं होती। उसी प्रकार माइकेल की आँखों को भी किसी तरह की क्षति न हुई थी।

माइकेल को उस समय इस बात का पता था कि वह अन्धा नहीं हुआ है; किन्तु उसने यह बात किसी पर प्रकट न की थी और इस बात को खूब प्रयत्नपूर्वक गुप्त रखा था। उसे यह भेद अपने कर्तव्य के लिए आवश्यक प्रतीत हुआ। उसने इस उद्देश्य से यह बात किसी पर प्रकट न की थी कि अन्धे पर सब लोग सहानुभूति रखेंगे और रास्ता सरल बनेगा। उसने यह बात नादिया से भी छिपा रखी थी।

इस बात को केवल एक व्यक्ति—उसकी माँ जानती थी। टोमस्क प्रदेश में जिस समय शत्रु उसकी माँ को अकेली छोड़ कर चले गये थे उस समय माइकेल ने अपनी माँ का माथा चूमते हुए धीरे से यह बात उसके कान में कही थी।

उसने अपनी सारी कहानी ड्यूक से कही और बोला—"मेरी इस पथयात्रा में नादिया ने बड़ी सहायता की है।"

नादिया के गुणों की प्रशंसा करते करते वह अपने को न रोक सका। उसकी आवाज गलगला उठी।

ड्यूक ने चकित होकर पूछा—"यह लड़की कौन है?"

माइकेल ने कहा—"डॉ० वासिली फ्रेडर की पुत्री है।"

"क्या केप्टन फ्रेडर की पुत्री है?" ड्यूक ने पूछा।

वे आनन्द से खड़े हो गये और कहने लगे—"बेटी! तू अब निर्वासित की बेटी नहीं है। अब इर्कुट्स्क में कोई निष्कासित नहीं है।"

नादिया ड्यूक के सामने बैठी। ड्यूक ने उसके पिता के

बारे में सारी बातें बताईं। नादिया को असीम हर्ष हुआ। इसके बाद वे उसे उसके पिता के पास ले गये। पिता-पुत्री का वह मिलाप अपूर्व और अद्‌भुत था।

तातारी सेना का आक्रमण निष्फल हो गया। उन्होंने दो बार आक्रमण किया और उस गुप्त दरवाजे की ओर भी बढ़े; किन्तु फ्रेडर के दल ने उनको अच्छी तरह पराजित किया।

आग बहुत दूर तक न फैल सकी। नागरिकों ने कुछ देर में ही आग पर नियंत्रण कर लिया। नगर आग से बच गया। गुप्त द्वार के पास एक जिप्सी स्त्री का शव पड़ा था। वह जिप्सी स्त्री सांगरे थी। वह तातारी सेना की ओर भागी जा रही थी; किन्तु दुर्भाग्य से रक्षक दल के एक सैनिक के हाथ उसकी मृत्यु हुई। आइवेन की मृत्यु के समाचार से तातारी सेना हतोत्साह बन गई।

७वीं अक्टूबर को प्रभात काल में तोपों की गड़गड़ाहट सुनाई दी। नागरिकों ने समझ लिया कि याकुत्स्क से रूसी सेना आ गई है। तातारी सेना के तो प्राण ही सूख गये। उन्होंने अपना शिविर उठा लिया। इर्कुट्स्क का संकट दूर हो गया।

रूसी सेना के आगे आगे वे दोनों संवाददाता थे। जोलिवेट ने नदी की आग देखकर रास्ते में ही अपनी डायरी में लिख लिया था कि जिस प्रकार शर्बत के प्याले में नीबू का

रस मिल जाता है उसी प्रकार यहाँ का दृश्य दिखाई देता है। अब इससे कोई बचने की आशा नहीं दिखाई देती।

वे माइकेल और नादिया से मिले और अत्यन्त प्रसन्न हुए। माइकेल के अन्धे न होने के समाचार से तो उन्हें अपार हर्ष हुआ। हेरी ने अपनी डायरी पाकिट से बाहर निकाली और उसमें लिखा—"आग में तपाये हुए लोहे की धार अश्रुमय आँखों की चेतनाशक्ति को नष्ट नहीं कर सकती।"

इसके बाद उसने अपने अनुभवों का एक बढ़िया वर्णन अपने समाचारपत्र के लिए तैयार किया। कुछ समय बाद यह विवरण उनके समाचार-पत्रों में भी छपा।

खान की इच्छा मन में रह गई। रास्ते में रूसी सैनिकों ने खान की सेना को छिन्न भिन्न कर दिया। उसने जिन जिन स्थानों पर अधिकार प्राप्त किया था अब वहाँ रूसी शासन स्थापित हो गया। प्रचंड ठंढ के कारण खान के अनेक सैनिक मर गये। अन्त में वह थोड़े से सैनिकों को लेकर अपने नगर में पहुँच पाया।

साइबेरिया में पुनः शान्ति स्थापित हुई। ड्यूक अब मास्को जाने के लिए उत्सुक हो उठे; किन्तु रूसी सेना के विजयोत्सव के लिए उन्हें कुछ दिन ठहर जाना पड़ा।

थोड़े दिन बाद माइकेल ने नादिया से कहा—"बहिन ! रीगा में क्या तेरी माँ को छोड़कर कोई अन्य संबंधी नहीं था ?"

"नहीं। वहाँ कोई अपना न था।"

"तब तो अब तेरा उस नगर से कोई सम्बन्ध नहीं है।"

"कोई सम्बन्ध नहीं है।"

माइकेल बोला—"तो हम लोगों का मिलना ईश्वर की इच्छा का ही एक परिणाम है।"

नादिया ने अपना सिर झुका लिया।

वासिली फ्रेडर ने कहा—"बेटी नादिया! तुम्हारी तरह माइकेल को भी अपना पुत्र समझकर मेरे मन में कितना अधिक आनन्द होता है!"

जोलिवेट और हेरी यह सुनकर आनन्दित हुए। अब वे यहाँ का काम पूरा कर चुके थे। इसलिए लन्दन और पेकिंग के बीच उपस्थित हुए एक झगड़े का समाचार प्राप्त करने के लिए वे चीन की ओर चल पड़े।

कुछ दिनों के बाद माइकेल और नादिया भी मास्को को रवाना हुए। उनके साथ वासिली फ्रेडर भी थे। स्लेज गाड़ी में बैठकर उन लोगों ने साइबेरिया का रास्ता पार किया। रास्ते में पिगासफ की समाधि मिली। माइकेल और नादिया ने उस भद्र पुरुष की समाधि को भावपूर्वक प्रणाम किया।

यात्रा फिर आरंभ हुई। रास्ता लम्बा था। स्लेज गाड़ी एक दिन ओमस्क नगर में पहुँची। वहाँ मार्फा ने नादिया और माइकेल को अपनी छाती से लगा लिया। आज उसे

सर्वाधिक आनन्द मिला था। कुछ दिन वे ओम्स्क में रहे। फिर मार्फा से विदा लेकर मास्को चल पड़े। डा० वासिली, फ्रेडर सेन्टपिटर्सबर्ग चले गये।

जार ने माइकेल का अपूर्व स्वागत किया और उसे 'सेन्ट जार्ज क्रास' प्रदान किया गया।

कुछ समय बाद माइकेल को खूब उच्च पद प्राप्त हुआ। हमें उस पद से कोई मतलब नहीं है; बल्कि उसकी वीरता और शौर्य का वर्णन ही हमारी कथा का मुख्य अंग है।

मूल्य २·२५ पैसे